राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

क्रांति समय

कार्यालय ऑफिस

क्रांति समय दैनिक समाचार में
प्रेसनोट, नोटिस, वेपार संबंधित संपर्क करें
पता:- एस.टी.पी.आई-सुरत-395023
संपर्क नं.-7490923915
ईमेल:-info.krantisamay@gmail.com

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरांचल, उत्तराखंड, दिल्ली, हरियाणा में प्रकाशित

सुरत-गुजरात, संस्करण रविवार 19 अक्टूबर 2025 वर्ष-8,अंक-240 पृष्ठ-08 मूल्य-01 रूपये

Website : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

पहला कॉलम

नहीं खुलेंगे भारत-पाकिस्तान के गेट, नहीं मिलाएंगे हाथ, वाघा बार्डर का समय बदला

नई दिल्ली भारत-पाकिस्तान की अंतरराष्ट्रीय सीमा अटारी बॉर्डर पर होने वाली रिट्रीट सेरेमनी का समय बदल दिया गया है। अब सर्दियों के चलते यह आधा घंटे पहले शुरू होगी। बीएसएफ के प्रोटोकॉल अधिकारी अरुण महल ने बताया कि अब यह समारोह शाम 5 बजे से 5:30 बजे तक होगा। पहले इसका समय शाम 5:30 बजे से 6 बजे था। नया समय तुरंत प्रभाव से लागू कर दिया है। सुरक्षा कारणों के चलते अब भारत-पाक सीमा गेट बंद रहेंगे और इस दौरान दोनों देशों के सुरक्षा बलों के बीच कोई पारंपरिक अभिवादन या रस्में नहीं होंगी। पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान पर छह व सात मई को ऑपरेशन सिंदूर के अंतर्गत आतंकी ठिकानों को तबाह किया था। इसके बाद 7 मई से रिट्रीट सेरेमनी पर विराम लगा दिया था। भारत-पाकिस्तान के बीच 10 दिन के युद्धविराम के बाद सीमा सुरक्षा बल ने 20 मई को पंजाब के अटारी-वाघा, हुसैनीवाला और फाजिल्का सीमाओं पर छोटे स्तर पर बीटिंग रिट्रीट फिर से शुरू की थी। अटारी, हुसैनीवाला और सादकी बॉर्डर पर रोज समारोह जारी है, चाहे पाकिस्तानी पक्ष शामिल हो या नहीं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक बीटिंग रिट्रीट अमृतसर के पास दोनों देशों की सीमा पर साल 1959 से हो रही है, जिसमें राष्ट्रीय झंडे उतारने की प्रक्रिया शामिल होती है। अटारी-वाघा बॉर्डर पर रिट्रीट सेरेमनी, भारत-पाकिस्तान बॉर्डर पर रोजाना होती है। यह समारोह बीएसएफ और पाकिस्तान रेंजर्स के जवानों द्वारा साझा रूप से आयोजित किया जाता है। इस समारोह को देखने देश और विदेश से लोग यहां आते हैं। समारोह का समय हर मौसम के मुताबिक बदला जाता है।

धूं-धूंकर जल उठी ट्रेन, गरीब रथ के तीन डिब्बे जलकर हुए खाक

चंडीगढ़ लुधियाना से दिल्ली जा रही सहरसा गरीब रथ एक्सप्रेस (नंबर-12204) में अचानक लगी आग से दहशत फैल गई। ये हादसा उस वक्त हुआ जब ट्रेन सरहिंद स्टेशन से निकलकर मुश्किल से आधा किलोमीटर आगे बढ़ी ही थी कि यात्रियों ने एक कोच से धुआं उठते देख लिया। थोड़ी ही देर में तीन डिब्बे जलकर हुए खाक हो गए। बाद में रेलकर्मियों की तत्परता से नियंत्रण पा लिया। गनीमत रही कि किसी तरह का कोई नुकसान नहीं हुआ। रेलवे अधिकारियों ने बताया कि यह घटना सुबह करीब 7.30 बजे हुई। जैसे ही आग का पता चला, रेलवे कर्मचारियों ने त्वरित कार्रवाई करते हुए प्रभावित डिब्बे को खाली कराया और फायर टीमों की मदद से आग पर काबू पाया गया। उन्होंने कहा कि आग सीमित हिस्से में थी और उसे जल्द ही बुझा लिया गया। रेलवे के आधिकारिक बयान में कहा गया है कि, अमृतसर-सहरसा गरीब रथ एक्सप्रेस (12204) के एक कोच में सरहिंद स्टेशन पर आग देखी गई। रेलवे अधिकारियों ने तुरंत यात्रियों को अन्य कोचों में शिफ्ट किया और आग बुझा दी गई। किसी भी यात्री को कोई नुकसान नहीं हुआ। ट्रेन जल्द ही अपने गंतव्य की ओर रवाना होगी। स्थानीय पुलिस अधिकारी के अनुसार, सूचना मिलते ही पुलिस और रेलवे की टीमें मौके पर पहुंच गईं। यात्रियों को सुरक्षित रूप से शिफ्ट किया गया। उन्होंने बताया कि स्थिति अब पूरी तरह नियंत्रण में है और सभी यात्री सुरक्षित हैं। हालांकि, एक महिला यात्री घायल हो गई हैं, जिन्हें इलाज के लिए अस्पताल में एडमिट कराया गया है। फिलहाल आग लगने के कारणों की जांच की जा रही है। रेलवे और पुलिस की टीमें मौके पर मौजूद हैं और ट्रैक को फिर से चालू करने की प्रक्रिया चल रही है।

सांसदों के ब्रह्मपुत्र अपार्टमेंट में लगी भीषण आग

नई दिल्ली दीवाली के मौके पर नई दिल्ली में बड़ा हादसा हो गया है। यहां ब्रह्मपुत्र अपार्टमेंट में भीषण आग लगी है। घटना की सूचना मिलते ही दमकल की 6 गाड़ियों को मौके रवाना हुई है। जानकारी के मुताबिक जिस जगह ये आग लगी हैं, वहां सांसदों के आवास बताए जा रहे हैं। हालांकि ये आग कैसे लगी, इस बारे में अभी कोई जानकारी नहीं है। रिपोर्ट के मुताबिक बिल्डिंग का उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने साल 2020 में किया था। इसमें कई राज्यसभा सांसदों के घर होने की खबर है। ब्रह्मपुत्र अपार्टमेंट्स राज्यसभा सांसदों के लिए एक आवासीय परिसर है, जो नई दिल्ली में डॉ.बिशम्भर दास मार्ग पर स्थित है। आग लगने के बाद वहां रह रहे लोगों में दहशत फैल गई है। आग बिल्डिंग की ऊपरी मंजिलों में से एक में लगी है, जिससे निवासियों में दहशत फैल गई। ये संसद से केवल 200 मीटर की दूरी पर बताई जा रही है।

भारत की प्रतिभाओं को बाहर जाने के बजाय

हमारे देश में ही मिले अवसर : अश्विनी वैष्णव

नई दिल्ली

केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने शनिवार को डेटा को नया तेल और डेटा केंद्रों को नई रिफाइनरियां बताया। एनडीटीवी वर्ल्ड समिट में केंद्रीय मंत्री वैष्णव ने सरकार के आत्मनिर्भरता के दृष्टिकोण पर जोर देते हुए कहा कि भारत आने वाले वर्षों में महत्वपूर्ण खनिजों और डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर में आत्मनिर्भर बनने का लक्ष्य रखता है। उन्होंने कहा, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारे देश का टैलेंट देश के बाहर जाने के बजाय देश में ही अवसरों को पाएं। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि सरकार टेक्नोलॉजी के माध्यम से वित्तीय सेवाओं को और अधिक सुलभ बनाने के अपने प्रयास के तहत डिजिटल क्रेडिट पर बड़ा कदम उठा रही है। देश में 5जी नेटवर्क के तेज और कुशल क्रियान्वयन की सराहना करते हुए केंद्रीय मंत्री ने कहा कि भारत की इस उपलब्धि ने दुनिया का ध्यान आकर्षित किया है। केंद्रीय मंत्री ने कहा, भारत ने 5जी को इतनी तेजी से लागू किया कि दुनिया चकित रह गई। हमारे पास दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा 5जी नेटवर्क है। इससे हमें दूर-दराज के क्षेत्रों तक पहुंचने में मदद मिली। देश का लगभग 90 प्रतिशत हिस्सा 5जी नेटवर्क से जुड़ा है। केंद्रीय मंत्री वैष्णव ने एआई के क्षेत्र में भारत की बढ़ती उपस्थिति पर भी प्रकाश डाला और घोषणा की कि बेंगलुरु स्थित स्टार्टअप सर्वम इस साल दिसंबर या अगले साल जनवरी तक अपना स्वदेशी एआई मॉडल लॉन्च करेगा। उन्होंने यह भी कहा कि वह सर्वम के मॉडल के लॉन्च होने के बाद उसका उपयोग करने के लिए उत्साहित हैं। केंद्रीय मंत्री ने विशाखापत्तनम में 15 अरब डॉलर के निवेश से एक एआई हब स्थापित करने के गूगल के प्रस्ताव की भी प्रशंसा की और दावा किया कि इससे भारत में एआई रिसर्च के विकास को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने कहा, हमारे देश में कंप्यूटर सुविधाओं का होना बेहद जरूरी है।

इनके उपलब्ध होने के बाद क्वालिटी रिसर्च करने और एआई एप्लीकेशन बनाने की क्षमता में सुधार होगा। केंद्रीय मंत्री वैष्णव के अनुसार, दूरसंचार तकनीक के संदर्भ में 6जी, मौजूदा 4जी और 5जी नेटवर्क की पूरी तरह से जगह ले लेगा। उन्होंने कहा, 6जी पूरी तरह से अलग होगा। आपके हाथ में जो कुछ भी होगा, वह उस नेटवर्क का हिस्सा होगा। केंद्रीय मंत्री ने दुनिया भर में डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर में भारत के नेतृत्व पर जोर दिया और बताया कि वर्तमान में 13 से अधिक देश भारत के यूपीआई फ्रेमवर्क का उपयोग कर रहे हैं।

अब जीत भारत की आदत बन चुकी

रक्षा मंत्री ने ब्रह्मोस सुपरसोनिक मिसाइलों की पहली खेप को हरी झंडी दिखाते हुए कहा

लखनऊ

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शनिवार को लखनऊ स्थित ब्रह्मोस एयरोस्पेस प्रोडक्शन यूनिट से ब्रह्मोस सुपरसोनिक मिसाइलों की पहली खेप को रवाना किया। इस मौके पर उनके साथ उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी मौजूद थे। राजनाथ सिंह ने कहा कि यह न केवल ब्रह्मोस और भारतीय सशस्त्र बलों की शक्ति का प्रतीक है, बल्कि यह संदेश भी है कि उत्तर प्रदेश अब देश की रक्षा विनिर्माण राजधानी बनने की दिशा में आगे बढ़ चुका है। उन्होंने कहा अब जीत भारत की आदत बन चुकी है।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने अपने संबोधन में कहा, एक समय उत्तर प्रदेश को गुंडाराज और खराब कानून-व्यवस्था के लिए जाना जाता था। लोग निवेश करने से डरते थे, लेकिन आज योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में प्रदेश की छवि बदल चुकी है। आज यूपी निवेशकों के लिए सबसे सुरक्षित राज्य बन गया है। उन्होंने कहा कि ब्रह्मोस यूनिट की स्थापना में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हर स्तर पर पूरा सहयोग दिया। उन्होंने कहा, मुझे कभी किसी चीज की कमी की चिंता नहीं करनी पड़ी। राजनाथ सिंह ने इस मौके पर पाकिस्तान को कड़ा संदेश भी दिया। उन्होंने कहा, ऑपरेशन सिंदूर तो सिर्फ ट्रेलर था। पाकिस्तान की हर इंच जमीन ब्रह्मोस मिसाइल की पहुंच में है। भारत की जीत अब कोई घटना नहीं, बल्कि आदत बन चुकी है, जिसे हमें और मजबूत करना है।

बताया जाता है कि लखनऊ की इस अत्याधुनिक यूनिट ने सिर्फ पांच महीने में ब्रह्मोस मिसाइलों की पहली खेप तैयार कर ली है। यूनिट का निर्माण मई 2024 में सरोजिनी नगर क्षेत्र में शुरू हुआ था। अब यहां से निर्मित मिसाइलें भारतीय सेनाओं को सौंपने का सिलसिला शुरू हो गया है।

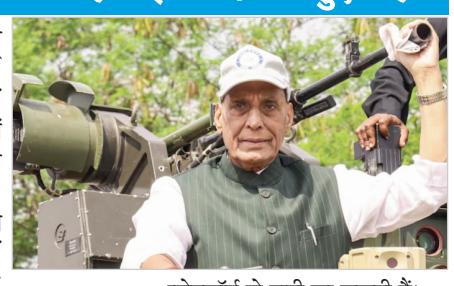

भारत और रूस का संयुक्त अभियान

ब्रह्मोस मिसाइल को भारत और रूस ने संयुक्त रूप से विकसित किया है। यह सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल 450 किलोमीटर तक की दूरी पर किसी भी लक्ष्य को सटीकता से भेद सकती है। यह ज़मीनी, नौसैनिक और हवाई तीनों प्लेटफॉर्म से दागी जा सकती हैं।

जानकारी के अनुसार, 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान भारतीय सेनाओं ने ब्रह्मोस का सफल प्रयोग करते हुए पाकिस्तान के एयर डिफेंस सिस्टम को चौंका दिया था और सटीक निशाने लगाए थे। इस ऑपरेशन के बाद भारत ने मिसाइल उत्पादन को तेज़ करने का फैसला किया था। लखनऊ यूनिट से ब्रह्मोस की पहली खेप निकलने के साथ भारत ने न केवल आत्मनिर्भरता की दिशा में एक और बड़ा कदम उठाया है।

उत्तराखंड रजत जयंती महोत्सव में राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री होंगे शामिल

देहरादून

उत्तराखंड अपनी स्थापना के 25 वर्ष पूरे करने जा रहा है। इस रजत जयंती महोत्सव के आयोजन को भव्य और यादगार बनाने के लिए राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु एवं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी प्रदेश में आ रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी नौ नवंबर को राज्य स्थापना दिवस के मुख्य समारोह में हिस्सा लेंगे और प्रदेशवासियों के साथ इस उत्सव को साझा करेंगे। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु उत्तराखंड की विकास यात्रा को प्रदर्शित करने वाले विशेष विधानसभा सत्र को संबोधित कर सकती हैं। इस सत्र के माध्यम से प्रदेश की 25 वर्षों की प्रगति और विकास गाथा को देश के सामने रखा जाएगा। प्रधानमंत्री मोदी ने कई बार कहा है कि 21वीं सदी का तीसरा दशक उत्तराखंड का दशक होगा। उनका इस प्रदेश से विशेष जुड़ाव माना जाता है। इस अवसर पर मोदी की मौजूदगी प्रदेश के लिए गर्व और उत्साह का विषय होगी। प्रदेश के उच्च पदस्थ सूत्रों के अनुसार महोत्सव के आयोजन को लेकर सहमति बन चुकी है। अब अंतिम अनुमोदन मिलने का इंतजार है। इसके बाद ही कार्यक्रम की पूरी रूपरेखा और व्यवस्था अंतिम रूप लेगी। उत्तराखंड के लिए यह आयोजन न केवल एक जश्न होगा, बल्कि प्रदेश की समृद्धि और विकास के नए अध्याय की शुरुआत भी माना जाएगा।

धनतेरस पर भूकंप: नेपाल के बाद भारत और पाकिस्तान में लगे भूकंप के झटके

नई दिल्ली

एक दिन पहले नेपाल में भूकंप आया। इसके बाद आज धनतेरस पर भारत और पाकिस्तान में झटके लगे। गनीमत रही कहीं कोई नुकसान नहीं हुआ। असम में शनिवार की सुबह-सुबह भूकंप आया। वहीं पाकिस्तान में भी भूकंप के झटके महसूस किए गए। रिक्टर स्केल पर असम में आए भूकंप की तीव्रता 2.7 मापी गई तो पाकिस्तान में 3.5 तीव्रता वाला भूकंप आया। फिलहाल, दोनों जगहों पर किसी तरह के हताहत होने की खबर नहीं है। हालांकि, दोनों जगह भूकंप आने से लोगों में हड़कंप मच गया। नेशनल सेंटर फॉर सिस्मोलॉजी यानी राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र (एनसीएस) के अनुसार, शनिवार सुबह असम में रिक्टर पैमाने पर 2.7 तीव्रता का भूकंप आया। एनसीएस के अनुसार, भूकंप भारतीय समयानुसार दोपहर 3:29:57 बजे आया और इसका केंद्र 24.84 डिग्री उत्तरी अक्षांश और 93.20 डिग्री पूर्वी देशांतर पर स्थित था। भूकंप का केंद्र कछार जिले में 10 किलोमीटर की गहराई पर था। किसी तरह का नुकसान नहीं हुआ। वहीं राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र ने बताया कि पाकिस्तान में 3.5 तीव्रता का भूकंप आया। एनसीएस के अनुसार, भूकंप 10 किलोमीटर की गहराई पर आया। पाकिस्तान में यह भूकंप सुबह 5 बजकर 4 मिनट पर आया। इससे पहले 3.9 तीव्रता का एक और भूकंप इस क्षेत्र में 10 किलोमीटर की गहराई पर आया। यह करीब सवा तीन बजे आया था। इस तरह पाकिस्तान में दो घंटे के भीतर भूकंप के 2 झटके महसूस किए गए। वहीं, शुक्रवार को भी पाकिस्तान में 10 किमी की गहराई पर 4.2 तीव्रता का भूकंप आया था। बता दें इससे पहले पश्चिमी नेपाल के सुदूर पश्चिम प्रांत में बृहस्पतिवार को 4.9 तीव्रता का भूकंप आया था। भूकंप से किसी भी तरह के नुकसान की तत्काल कोई खबर नहीं है।

राष्ट्रीय भूकंप निगरानी केंद्र के अनुसार, भूकंप सुबह 1: 08 बजे दर्ज किया गया था।

भारत ने रूस को किया चीनी मुद्रा युआन में पेमेंट.....क्या डॉलर के लिए खतरा

नई दिल्ली

भारत ने रूस से खरीदे गए कच्चे तेल के कुछ हिस्सों का भुगतान चीनी मुद्रा युआन में किया है, जबकि यह पहले मुख्य रूप से रूबल में होता था। यह घटनाक्रम भारत-चीन-रूस के त्रिकोणीय आर्थिक समीकरण को मजबूत करता है। यह कदम डॉलर के वैश्विक प्रभुत्व को चुनौती देने और डॉलर निर्भरता को कम करने की दिशा में ब्रिक्स देशों के व्यापक एजेंडे का हिस्सा है। 2023 में तनाव के कारण सरकारी रिफाइनरियों ने युआन में भुगतान बंद कर दिया था, जिसे अब दोबारा शुरू करना दोनों देशों के रिश्तों में व्यावहारिकता की वापसी का संकेत माना जा रहा है। ब्रिक्स देश (जो दुनिया की 40 प्रतिशत जीडीपी का प्रतिनिधित्व करते हैं) बिना कोई नई ब्रिक्स करेंसी बनाए ही स्थानीय मुद्राओं में व्यापार बढ़ाकर डॉलर से अलग रास्ता अपना रहे हैं।

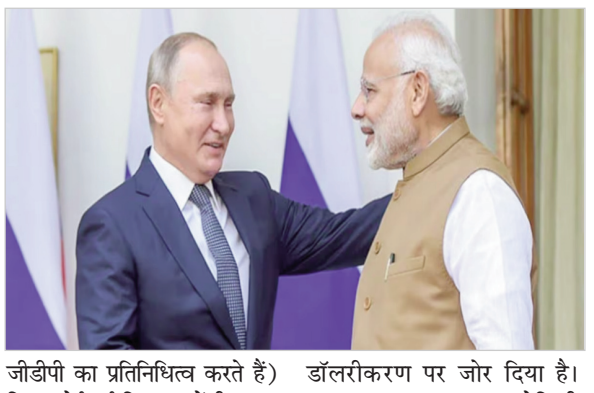

यूक्रेन युद्ध के बाद रूस पर लगे प्रतिबंधों और उस स्विफ्ट से बाहर करने के बाद, ब्रिक्स देशों ने डॉलर को राजनैतिक हथियार के रूप में देखे जाने के कारण डी-डॉलरीकरण पर जोर दिया है। भारत का यह कदम अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की डॉलर केंद्रित नीति को एक सीधी चुनौती और उनकी डॉलर डिप्लोमेसी को शांत किंतु ठोस जवाब माना जा रहा है।

भारत का यह युआन भुगतान एक सीमित लेकिन भू-राजनीतिक रूप से गहरा प्रयोग है।

पाक-अफगान तनाव कम करने में मदद के लिए तैयार: ईरान

तेहरान

अफगानिस्तान के विदेश मंत्री आमिर खान मुत्ताकी और ईरानी समकक्ष सईद अब्बास अराघची ने शनिवार को काबुल और इस्लामाबाद के बीच बढ़ते तनाव के बीच टेलीफोन पर चर्चा की।

दोनों मंत्रियों ने अराघची के साथ क्षेत्रीय घटनाक्रमों और द्विपक्षीय संबंधों की समीक्षा की और कथित तौर पर संयम, संघर्षों को सुलझाने के लिए बातचीत, हेलमंद नदी पर सहयोग, सीमा सुरक्षा और क्षेत्रीय शांति एवं स्थिरता को बढ़ावा देने पर ज़ोर दिया।

इस बातचीत के दौरान, अराघची ने अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच हालिया झड़पों पर गहरी चिंता व्यक्त की। उन्होंने दोनों पक्षों से संयम बरतने और शत्रुता समाप्त करने का आग्रह किया और कहा कि दोनों पड़ोसियों के बीच जारी तनाव न केवल मानवीय क्षति का कारण बनेगा, बल्कि पूरे क्षेत्र की स्थिरता को भी कमजोर करेगा।

ईरान की प्रमुख समाचार एजेंसी मेहर की रिपोर्ट के अनुसार, ईरानी विदेश मंत्री ने दोनों देशों के बीच तनाव कम करने और रचनात्मक बातचीत को सुगम बनाने में मदद के लिए तेहरान की तत्परता को भी दोहराया। मंत्री मुत्ताकी ने अराघची को नवीनतम घटनाक्रम से अवगत कराया और इस बात पर जोर दिया कि अफगानिस्तान का इस्लामी अमीरात सैन्य टकराव के बजाय बातचीत और शांति का पक्षधर है।

इसमें आगे कहा गया, दोनों मंत्रियों ने हेलमंद नदी के जल अधिकारों के मुद्दे पर भी चर्चा की, और मौजूदा जल समझौतों को बनाए रखने, तकनीकी सहयोग बढ़ाने और जल संसाधनों का संयुक्त प्रबंधन करने की आवश्यकता पर जोर दिया ताकि पानी की बर्बादी को रोका जा सके और चालू मौसम के दौरान ईरान का उचित हिस्सा सुनिश्चित किया जा सके।

शुक्रवार को, ईरान और अफगानिस्तान के अधिकारियों ने काबुल में दोनों पड़ोसी देशों के बीच सुरक्षा सहयोग और साझा सीमा पर सुरक्षा सुनिश्चित करने के उपायों पर चर्चा की।

काबुल में आयोजित इस बैठक में अफगानिस्तान में ईरान के राजदूत अलीरेजा बिकदेली, ईरानी विदेश मंत्रालय में दक्षिण एशिया के महानिदेशक मोहम्मद रजा बहरामी और तालिबान के गृह मंत्री सिराजुद्दीन हक्कानी ने भाग लिया।

तस्नीम समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, बातचीत दोनों पड़ोसी देशों के बीच सुरक्षा सहयोग और सीमा मुद्दों पर केंद्रित रही।

दोनों पक्षों ने मादक पदार्थों की तस्करी से निपटने और साझा सीमा पर समन्वय बढ़ाने के संयुक्त प्रयासों पर भी विस्तृत विचार-विमर्श किया। ईरानी प्रतिनिधिमंडल ने साझा सीमाओं पर स्थिरता बनाए रखने और आपसी समझ और सहयोग की भावना से मुद्दों को सुलझाने के लिए बातचीत जारी रखने के महत्व पर जोर दिया।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

नरक चतुर्दशी बाहर-भीतर स्वच्छ बनो !

! लेखक - कांतिलाल मांडोत)

(19 अक्टूबर 2025 नरक चतुर्दशी)

चारो तरफ गन्दगी के ढेर,असूची के ढेर लगे हो,जहाँ दुर्गंध उछल रही हो,वतावरण में क्षणभर भी ढहरने का मन नही करता हो उस स्थान को नरक कहा गया है

धन-तेरस के पश्चात् आने वाली काली चौदस को भारतीय संस्कृति में नरक चतुर्दशी कहा गया है। पुराणों के अनुसार नरकासुर नाम का राक्षस प्राणियों को कष्ट देता था। स्थान-स्थान पर गन्दगी, अशुचि फैला देता, ऋषियों के यज्ञ-स्थलों को अपवित्र कर देता। स्वर्ग में जाकर उसने देवताओं को भी परेशान किया। देवमाता अदिति के कुण्डल छीनकर ले गया। उसके उत्पातों से मनुष्य देव सभी परेशान हो गये। सबने मिलकर भगवान विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण से प्रार्थना की- हे वासुदेव ! त्राहि माम् ! इस नरकासुर से हमारी रक्षा करो, इस अपवित्र और अशुचिमय राक्षस के दुष्ट हाथों से हमारा त्राण करो। इस दुष्ट के उपद्रवों से हमारी रक्षा करो।तब श्रीकृष्ण ने नरकासुर का वध किया और उसके द्वारा फैलाई हुई गन्दगी हड्डियाँ व माँस के ढेर को साफ करके भूमि को स्वच्छ किया गया। चारों तरफ सफाई अभियान चलाकर धरती को साफ-सुथरी मनुष्यों के रहने योग्य बनाया। उस दिन की स्मृति में इस तिथि का नरक चतुर्दशी नाम प्रचलित है।

विद्वान् लोग मानते हैं कि पौराणिक कथाएँ प्रतीकात्मक होती हैं, उनका सामाजिक, राष्ट्रीय एवं आध्यात्मिक प्रतीक होता है और उस प्रतीक को सूचित करने के लिए, एक विशेष लक्ष्य को उद्घाटित करने के लिए धार्मिक एवं पौराणिक रंग में रंग दी जाती है, ताकि लोक नीरस बात को सरसता के साथ समझ सकें, आध्यात्मिक एवं सामाजिक कृत्य को धर्म के रूप में स्वीकार कर सकें।

चातुर्मास के प्रारम्भ के दो मास वर्षा ऋतु के होते हैं। वर्षा के कारण गाँव, नगर, गली, सड़क, राजमार्ग चारों तरफ गंदगी, कीचड़, सीलन आदि की भरमार होती है। उस कारण डाँस, मच्छर आदि अनेक प्रकार के जहरीले कीट-पतंग पैदा हो जाते हैं। जगह-जगह पानी सड़ता है, कूड़ा सड़ाँध पैदा करता है और उस पर तरह-तरह के जहरीले मच्छर, कीड़े अण्डे देते हैं। बीमारियाँ फैलाते हैं। डेंगू बुखार का प्रकोप हम सब देख चुके हैं। इस प्रकार की संक्रामक बीमारियाँ वर्षा ऋतु के बाद फैलती हैं, गाँवों-शहरों का वातावरण एकदम नरक जैसा गंदा हो जाता है। उस नारकीय गंदगी को दूर कर सफाई-स्वच्छता करने के लिए नरकासुर को भागना पड़ेगा अर्थात गंदगी दूर करके स्वच्छता-सफाई करना ही नरकासुर का नाश करना है। नरक का अर्थ है-गन्दगी।

-जहाँ प्राणी को सुख-चैन, आनन्द नहीं मिलता हो, उस स्थान को नरक कहते हैं।

आगमों में नरक का वर्णन करते हुए बताया है- सूर्य-चन्द्र की किरणें नहीं पहुँचती हैं। जहाँ हर समय कीचड़ चिक्खल रहता है। भूमि में सड़ाँध-दुर्गन्ध आती हो और असुचिविसा-चारों तरफ गन्दगी के, अशुचि के ढेर लगे हों। जहाँ दुर्गन्ध उछल रही हो, जहाँ के वातावरण में क्षणभर भी ठहरने को मन नहीं होता हो, ऐसे अपवित्र स्थान को नरक कहा गया है।

हमारे नगर, गली, भवन आदि जहाँ पर भी इस प्रकार की गन्दगी हो, वह स्थान वास्तव में नरक ही माना जाता है। मैं देखता हूँ लोग नहा-धोकर कपड़े साफ-सुथरे पहनते हैं, घरों पर सफेदी व कीमती रंग-रोगन करते हैं, किन्तु दूसरी तरफ उनके रसोईघरों के पास कूड़ेदान में मक्खी-मच्छर भिनभिनाते रहते हैं। नालियों पर कूड़े के ढेर लगे रहते हैं। जहाँ से निकलना भी मुश्किल होता है। यह कैसी सफाई है? सफाई में भी विवेक होना चाहिए। अपना घर, अपना मुहल्ला अगर साफ रखने की आदत बन जाये तो गन्दगी अपने आप दूर हो जायेगी।

भीतर की सफाई भी करो

यह तो हुई बाहरी सफाई की बात। केवल बाहरी सफाई करने से ही नरक चतुर्दशी की सार्थकता नहीं होती। बाहरी सफाई के साथ मन की सफाई, जीवन की सफाई भी जरूरी है।

देखो बंदे का धन्धा, तन उजला मन गंदा।तो यह तो कोई सफाई नहीं हुई। मन में अपवित्र विचार भरे हों, दूसरों की निन्दा, चुगली, ईर्ष्या का कूड़ा पड़ा हो, काम-क्रोध की अशुचि सड़ रही हो तो मन पवित्र कैसे होगा? दीपावली को लक्ष्मी-पूजा करना है तो उसके लिए मन की सफाई करना भी जरूरी है। तेरस के पहले-पहले आपने घर, दुकान, मकान सब साफ-सुथरे कर लिये, लीप-पोत, झाड़-बुहारकर कचरा फेंक दिया, यह तो एक तरह की तैयारी हो गई। फिर तेरस आई, तो कुछ परोपकार का, सेवा का, दीन-दु:खियों के दु:ख-दर्द दूर करने का संकल्प लिया। सेवा की तब धन-तेरस मन गई।

अब विचारों की शुद्धि से, शुभभावनाओं से, मन की पवित्रता से,चिन्तन-ध्यान-सद्भाव से मन को और माँजकर उज्ज्वल कर लिया तो नरक चतुर्दशी सार्थक हो गई। यह दोनों पर्व दीपावली की तैयारी के हैं। दीपावली कैसे मनानी है यह इसका साफ-साफ सन्देश इन दोनों पर्वों में बता दिया है।

नरक चतुर्दशी के प्रसंग में मैं एक आध्यात्मिक और नैतिक बात भी कहना चाहूँगा। नरक चतुर्दशी का एक सन्देश है-नरक के कारणों से बचने का चिन्तन। मन की गन्दगी, विचारों की अपवित्रता तो नरक का कारण क्या, प्रत्यक्ष नरक है। इसके अलावा शास्त्रों में नरक के अन्य अनेक कारण बताये हैं।

चार बातों से प्राणी नरक जाने योग्य पापकर्म करता है। जैसे-महाआरम्भ, महापरिग्रह, पंचेन्द्रिय जीवों का वध और माँसाहार। इन चारों कारणों में गागर में सागर की तरह सब कुछ बता दिया है। हिंसा, धन की लालसा, तीव्र आसक्ति, माँसाहार-जिह्वा के स्वाद की लिप्सा, नृशंसता, कठोरता, क्रूरता, उद्योग-व्यापार में नीति और धर्म की उपेक्षा कर अप्रामाणिकता, अत्यन्त लोभ आदि सभी दुर्गुण इन चारों में आ गये हैं। इसलिए संक्षेप में चार बातों के द्वारा भगवान ने बता दिया है-जो व्यक्ति पीछे बताये दुर्गुणों से युक्त होगा, उसका यहाँ भी जीवन अशान्त होगा, उद्विग्न होगा और मरकर परलोक में भी नरक में जायेगा। अर्जुन के एक प्रश्न के उत्तर में योगीश्वर श्रीकृष्ण बताते हैं-नरक में जाने के तीन रास्ते हैं।

काम (मोह-वासना), क्रोध तथा लोभ (आसक्ति) ये तीन नरक जाने के मार्ग हैं। आत्मा का पतन कर ये तीनों उसे नरक में पहुँचा देते हैं। जहाँ मैं अर्थात् अहंकार है वहीं पतन है। पतन का मतलब है नरक। उत्थान का मतलब है स्वर्ग। तो यह तुम मानते हो न ? अहंकार से पतन होता है। अहंकार मैं यह अहंकार का दुत्कार है। इसलिए अहंकार भी नरक में जाने का कारण है।

आज नरक चतुर्दशी के दिन आप दोनों पक्षों पर विचार करें; बल्कि जीवन के समग्र पक्षों पर विचार करें, तन को, मन को, जीवन को, घर-परिवार को, समाज व राष्ट्र को नरक से बचाने का प्रयास करें। बाहरी गन्दगी से भी मुक्त हों। अशुद्धता को बर्दाश्त नहीं करता, जहाँ गंदगी पड़ी हो, अशुचि, रक्त आदि तो उसे साफ किये बिना शास्त्र-स्वाध्याय कर सनातन धर्म मे तन की स्वच्छता, घर की स्वच्छता, मन की स्वच्छता सबका सन्तुलित विचार है और इस समग्र स्वच्छता के विवेक का यह अवसर है। मन से नरक मिटाओ, विचार से नरक दूर करो और घर से भी नरक दूर करके चतुर्दशी की भावना के दूसरे आदर्श को सार्थक करो।

(वरिष्ठ पत्रकार, साहित्यकार -लेखक)

(यह लेखक के व्य क्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अ निवार्य नहीं है)

हमारे नगर, गली, भवन आदि जहाँ पर भी इस प्रकार की गन्दगी हो, वह स्थान वास्तव में नरक ही माना जाता है। मैं देखता हूँ लोग नहा-धोकर कपड़े साफ-सुथरे पहनते हैं, घरों पर सफेदी व कीमती रंग-रोगन करते हैं, किन्तु दूसरी तरफ उनके रसोईघरों के पास कूड़ेदान में मक्खी-मच्छर भिनभिनाते रहते हैं। नालियों पर कूड़े के ढेर लगे रहते हैं। जहाँ से निकलना भी मुश्किल होता है। यह कैसी सफाई है? सफाई में भी विवेक होना चाहिए। अपना घर, अपना मुहल्ला अगर साफ रखने की आदत बन जाये तो गन्दगी अपने आप दूर हो जायेगी।

संपादकीय

ग्रीन पटाखों के साथ संयम भी जरूरी

दिवाली मनाने के उत्साही लोगों की आकांक्षाओं के अनुरूप सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली और एनसीआर में कुछ शर्तों के साथ ग्रीन पटाखे जलाने की अनुमति दे दी है। इसके बावजूद स्वच्छ हवा बनाए रखने व प्रदूषण नियंत्रण के लिए हमारे संयम व जिम्मेदार व्यवहार की जरूरत होगी। यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि हमारी राष्ट्रीय राजधानी दुनिया की सबसे प्रदूषित राजधानियों में शुमार है। दुनिया के बीस शीर्ष प्रदूषित शहरों में करीब आधे भारत में हैं। पर्व, आस्था व विश्वास अपनी जगह हैं, लेकिन प्राणवायु का स्वच्छ रहना लाखों लोगों के जीवन का प्रश्न भी है। यही वजह है कि दिल्ली-एनसीआर में कुछ शर्तों के साथ दीपावली पर ग्रीन पटाखों की अनुमति देते वक्त सुप्रीम कोर्ट ने संतुलित दृष्टिकोण अपनाने की नसीहत दी है, जिससे हमारी आस्था का सम्मान हो सके और पर्यावरण की रक्षा भी हो। निस्संदेह, कोर्ट के फैसले से वे लोग उत्साहित होंगे, जो ग्रीन पटाखे चलाने की अनुमति चाहते थे। लेकिन इसका एक पक्ष यह भी है कि पर्यावरण संरक्षण से जुड़े लोग इससे निराश हो सकते हैं। पर्यावरण प्रेमियों की चिंता वाजिब है। अक्सर देखा जाता है कि ग्रीन पटाखे जलाने वालों पर नियामक एजेंसियां निगरानी नहीं रख पाती हैं। चिंता की बात यह भी है कि ग्रीन पटाखों के नाम पर घातक पटाखे भी जलाए जा सकते हैं। विगत के अनुभव बताते हैं कि अदालती रोक के बावजूद त्योहार पर जमकर आतिशबाजी हुई थी। दरअसल, कुछ लोगों की दलील थी कि पर्व विशेष पर ही प्रदूषण के नाम पर रोक लगाई जाती है, जिससे त्योहार का रंग फीका हो जाता है। कुछ लोगों ने इसे प्रतिष्ठा का प्रश्न भी बना लिया। लेकिन सवाल यह है कि यह कैसे सुनिश्चित हो पाएगा कि ग्रीन पटाखों की आड़ में घातक पटाखे नहीं बेचे जा सकें। हमारी निगरानी करने वाली एजेंसियों व विभागों की कारगुजारियों पर अक्सर सवालिया निशान लगाए जाते हैं। वैसे एक हकीकत यह भी है कि हर गली-मोहल्ले की दुकानों में प्रदूषण फैलाने वाले पटाखों की निगरानी कर पाना व्यावहारिक भी नहीं है। इस बात को लेकर अक्सर बहस होती रही है कि परंपरागत रूप से दिवाली में पटाखों की अनिवार्यता नहीं रही है। निस्संदेह, दीप पर्व उजाले का उत्सव है, ताकि धरा पर कहीं अंधेरा न रह जाए, गरीब की झोपड़ी भी रोशन हो, समृद्धि हर घर तक पहुंचे। सही मायनों में पर्व सामूहिकता की भावना पर केंद्रित होते हैं। ऐसे में यदि हम घातक पटाखे जलाकर श्वास रोगों से पीड़ित मरीजों से लेकर आम आदमी को मुश्किल में डाल दें, तो यह पर्व का मर्म नहीं कहा जा सकता। वैसे ग्रीन पटाखों के बारे में भी निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि उनके उत्पादन के दौरान निर्धारित मानकों का पालन किया गया हो। पटाखे जिस गुणवत्ता से बनते और बिकते हैं, कहना मुश्किल ही है कि वे वास्तव में पर्यावरण के अनुकूल होंगे। वैसे यह भी हकीकत है कि दिल्ली में हर साल ठंड की दस्तक के साथ बढ़ने वाले घातक प्रदूषण के लिए सिर्फ पटाखे ही जिम्मेदार नहीं होते। मौसम की प्रतिकूलता तथा जनसंख्या के बढ़ते घनत्व के कारण महानगरों में बहुमंजिला इमारतों के विस्तार से भी हवा का प्राकृतिक प्रवाह बाधित होता है, जिसके चलते प्रदूषण की परत दिल्ली, राष्ट्रीय राजधानी और निकटवर्ती शहरों के ऊपर छाई रहती है। निस्संदेह, पर्यावरण संरक्षण से जुड़े कार्यकर्ताओं के साथ-साथ आम नागरिकों को भी पटाखों के सीमित व संयमित उपयोग के बारे में गंभीरता से विचार करना चाहिए। बहरहाल, सुप्रीम कोर्ट के दिल्ली व एनसीआर में ग्रीन पटाखे चलाने की अनुमति देने के फैसले के आलोक में कहा जा सकता है कि शेष देश में भी प्रदूषण रोकने के लिए गंभीर पहल की जानी चाहिए। देश के कई अन्य बड़े शहर दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों की सूची में दर्ज हैं।

नरक चतुर्दशी : यमराज के लिए दीपदान करने का पर्व

(लेखक- योगेश कुमार गोयल)

(नरक चतुर्दशी (19 अक्तूबर) पर विशेष)

कार्तिक कृष्ण पक्ष में पांच पर्वों का जो विराट महोत्सव मनाया जाता है, महापर्व की उस श्रृंखला में सबसे पहले पर्व धनतेरस के बाद दूसरा पर्व आता है 'नरक चतुर्दशी'। कार्तिक कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मनाए जाने वाले पर्व 'नरक चतुर्दशी' नाम में 'नरक' शब्द से ही आभास होता है कि इस पर्व का संबंध भी किसी न किसी रूप में मृत्यु अथवा यमराज से है। ऐसी मान्यता है कि इस दिन यमराज का पूजन करने तथा व्रत रखने से नरक की प्राप्ति नहीं होती। दीवाली से ठीक एक दिन पहले मनाए जाने वाले इस पर्व की तिथि को लेकर लोगों के मन में भ्रम की स्थिति है कि यह पर्व 19 अक्तूबर को मनाया जाएगा या 20 अक्तूबर को।

इस साल चतुर्दशी तिथि का आरंभ 19 अक्टूबर, रविवार को दोपहर 1 बजकर 51 मिनट पर हो रहा है और इसका समापन 20 अक्टूबर, सोमवार को दोपहर 3 बजकर 44 मिनट पर होगा। यूं तो उदया तिथि के अनुसार, छोटी दिवाली 20 तारीख को मनाई जानी चाहिए लेकिन यम चतुर्दशी की पूजा चूंकि प्रदोष काल यानी शाम के समय ही की जाती है, इसीलिए नरक चतुर्दशी यानी छोटी दीवाली 19 अक्तूबर को मनाई जाएगी। 20 अक्तूबर को सुबह 5 बजकर 13 मिनट से सुबह 6 बजकर 25 मिनट तक का शुभ समय अभ्यंग स्नान के लिए श्रेष्ठ है क्योंकि इस मुहूर्त में किया गया स्नान सौंदर्य को बढ़ता है और तेजमय शरीर की प्राप्ति होती है। छोटी दीवाली पर यम का दीपक जलाने का शुभ मुहूर्त 19 अक्टूबर की शाम को है। नरक चतुर्दशी के दिन यम का दीपक शाम 6 बजकर 58 मिनट से लेकर शाम 7 बजकर 28 मिनट तक के बीच में जला सकते हैं।

'नरक चतुर्दशी' पर्व को 'नरक चौदस', 'रूप चतुर्दशी', 'काल चतुर्दशी' तथा 'छोटी दीवाली' के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन मृत्यु के देवता यमराज और धर्मराज चित्रगुप्त का पूजन किया जाता है और यमराज से प्रार्थना की जाती है कि उनकी कृपा से हमें नरक के भय से मुक्ति मिले। इसी दिन रामभक्त हनुमान का भी जन्म हुआ था और इसी दिन वामन अवतार में भगवान विष्णु ने राजा बलि से तीन पग भूमि दान में मांगते हुए तीनों लोकों सहित बलि के शरीर को भी अपने तीन पगों में नाप लिया था। हनुमान जयंती वैसे तो चैत्र मास की पूर्णिमा को मनाई जाती है, लेकिन उत्तर भारत के कई भागों में यह दीवाली से एक दिन पहले भी मनाई जाती है।

यम को मृत्यु का देवता और संयम के अधिष्ठाता देव माना गया है। नरक चतुर्दशी के दिन सूर्योदय से पहले उठकर स्नान करना शुभ माना गया है और सायंकाल के समय यम के लिए दीपदान किया जाता है। आशय यही है कि संयम-नियम से रहने वालों को मृत्यु से जरा भी भयभीत नहीं होना चाहिए। इस दिन सूर्योदय से पहले स्नान करने का आशय ही आलस्य का त्याग करने से है और इसका सीधा संदेश यही है कि संयम और नियम से रहने से उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और उनकी अपनी साधना ही उनकी रक्षा करेगी। नरक चतुर्दशी मनाए जाने के संबंध में एक मान्यता है कि इसी दिन भगवान श्रीकृष्ण ने प्रागज्योतिषपुर के राजा 'नरकासुर' नामक अधर्मी राक्षस का वध किया था और ऐसा करके उन्होंने न केवल पृथ्वीवासियों को बल्कि देवताओं को भी उसके अत्याचारों से मुक्ति दिलाई थी। उसके आतंक से पृथ्वी के समस्त शूरवीर और सम्राट भी थर-थर कांपते थे। अपनी शक्ति के घमंड में चूर नरकासुर शक्ति का दुरूपयोग करते हुए स्त्रियों पर भी अत्याचार करता था। उसने 16000 मानव, देव एवं गंधर्व कन्याओं को बंदी बना रखा था। देवों और ऋषि-मुनियों के अनुरोध पर भगवान श्रीकृष्ण ने सत्यभामा के सहयोग से नरकासुर का संहार किया था और उसके बंदीगृह से 16000 कन्याओं को मुक्ति दिलाई थी। नरकासुर से मुक्ति पाने की खुशी में देवगण व पृथ्वीवासी बहुत आनंदित हुए और उन्होंने यह पर्व मनाया गया। माना जाता है कि तभी से इस पर्व को मनाए जाने की परम्परा शुरू हुई।

धनतेरस, नरक चतुर्दशी तथा दीवाली के दिन दीपक जलाए जाने के संबंध में एक मान्यता यह भी है कि इन दिनों में वामन भगवान ने अपने तीन पगों में सम्पूर्ण पृथ्वी, पाताल लोक, ब्रह्माण्ड व महादानवीर दैत्यराज बलि के शरीर को नाप लिया था और इन तीन पगों की महत्ता के कारण ही लोग यम यातना से मुक्ति पाने के उद्देश्य से तीन दिनों तक दीपक जलाते हैं तथा सुख, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु मां लक्ष्मी का पूजन करते हैं। यह भी कहा जाता है कि बलि की दानवीरता से प्रभावित होकर भगवान विष्णु ने बाद में पाताल लोक का शासन बलि को ही सौंपते हुए उसे आशीर्वाद दिया था कि उसकी याद में पृथ्वीवासी लगातार तीन दिन तक हर वर्ष उनके लिए दीपदान करेंगे। नरक चतुर्दशी का संबंध स्वच्छता से भी है। इस दिन लोग अपने घरों का कूड़ा-कचरा बाहर निकालते हैं। इसके अलावा यह भी मान्यता है कि इस दिन प्रात:काल सूर्योदय से पूर्व तेल एवं उबटन लगाकर स्नान करने से पुण्य मिलता है।

(लेखक 35 वर्षों से पत्रकारिता में निरंतर सक्रिय वरिष्ठ पत्रकार हैं)

दान और परोपकार से घटता नहीं है धन

सभी धर्मों में कहा गया है कि दान करो। दान करने से धन घटता नहीं है बल्कि आपका धन बढ़ता है। लेकिन समस्या यह है कि लोग धन बढ़ने का तात्पर्य यह समझते हैं कि आज आप सौ रूपये कमाते हैं तो कल हजार रूपये कमाने लगेंगे। शास्त्रों में मुद्रा को धन कभी कहा ही नहीं गया है। शास्त्रों के अनुसार व्यक्ति जो पुण्य अर्जित करता है वही धन है। पुण्य रूपी धन परोपकार और जनहित से बढ़ता है। मुद्रा रूपी धन तो आपको उतना ही मिलेगा जितना आपकी किस्मत में होगा। अगर आप दान भी कर दें तो आपके पास उतना ही रहेगा जितना आपके भाग्य में है। अगर आप संचित करके भी रखेंगे तब भी उतना ही बचेगा जितना आपकी किस्मत में विधाता ने लिख दिया है।

दक्षिण भारत की एक कथा है इस संदर्भ में उल्लेखनीय है। एक गरीब ब्राह्मण था। दिन भर अपना काम करता इसके बाद जो भी समय बचता उसे भगवान की सेवा में लगा देता। ब्राह्मण की पत्नी अक्सर ब्राह्मण से कहती पूजा-पाठ से क्या लाभ है भगवान तो हमारी सुनते ही नहीं, पता नहीं हमारी गरीबी कब दूर होगी। एक दिन ब्राह्मणी की बात सुनकर ब्रह्मण बहुत दुःखी था। पूजा करने बैठा तो भगवान प्रकट हो गये। भगवान को देखते ही ब्रह्मण अपनी गरीबी दूर करने के लिए प्रार्थना करने लगा। भगवान ने कहा तुमने पूर्व जन्म दान नहीं किया है इसलिए तुम्हारे भाग्य में अन्न धन की मात्रा कम है। अगर तुम चाहो तो तुम्हें तुम्हारे भाग्य का अन्न धन एक साथ मिल सकता है। लेकिन एक बार अन्न धन खत्म होने के बाद तुम क्या करोगे। अच्छा होगा कि तुम धीरे-धीरे अपने हिस्से का अन्न धन प्राप्त करो।

ब्रह्मण ने कुछ देर सोचा फिर बोला प्रभु मेरे भाग्य का सारा अन्न धन एक साथ दे दीजिए। कुछ दिन तो सुखी से जी लूंगा। भगवान ने तथास्तु कह दिया। ब्राह्मण का घर अन्न से भर गया। ब्राह्मणी अन्न का भंडार देखकर खुश हो गयी। ब्राह्मण ने कहा कि इसे हम एक साथ खर्च नहीं करेंगे। हमारा जीवन जैसे चल रहा था हम वैसे ही जिएंगे। अगले दिन से ब्राह्मण गरीबों को अन्न-धन बांटने लगा। ब्राह्मण की किस्मत में जितना अन्न धन का सुख था वह उसे मिलता रहा। लेकिन दान के प्रभाव से उसके पुण्य में वृद्धि होती गयी और ब्राह्मण का नाम एवं यश चारों ओर फैलने लगा। पुण्य की वृद्धि और उदारत से प्रसन्न होकर भगवान ने ब्राह्मण की गरीबी दूर कर दी।

विचार मंथन

वैश्विक अर्थव्यवस्था पर मंडराता कर्ज और मंदी का साया

(लेखक- सनत जैन)

दुनिया की अर्थव्यवस्था आज एक ऐसे दो-राहे पर खड़ी है, जहाँ समृद्ध देशों की चकाचौंध के पीछे कर्ज का पहाड़ तेजी से बढ़ता ही जा रहा है। अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन और जापान जैसे विकसित देशों का सार्वजनिक ऋण उनके सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 110 फ़ीसदी से अधिक पहुँच गया है। यह महज आंकड़ों की जादुगरी नहीं है, बल्कि एक गहराते वैश्विक संकट का संकेत है, जिसकी आंच अब पूरी दुनिया को महसूस होने लगी है। दुनियां की महाशक्ति कहे जाने वाले अमेरिका जैसे देश में हालात इतने खराब हैं कि सरकार को बार-बार लॉकडाउन जैसी नीतियों का सहारा लेना पड़ा है। लाखों लोग बेरोजगार हो चुके हैं और मध्यम वर्ग का जीवन-स्तर गिरता जा रहा है। महंगाई और टैक्स का बोझ इतना बढ़ गया है कि आम नागरिकों की जेबें खाली हो रही हैं, जबकि सरकारें अपने खर्चों को पूरा करने के लिए साल-दर-साल कर्ज पर निर्भर होती जा रही हैं। अमेरिका की यह समस्या अब केवल उसकी नहीं रही, फ्रांस, ब्रिटेन और जापान जैसे देशों में भी यही हाल है। दूसरी ओर, विकासशील देशों की स्थिति और भी विकट है। श्रीलंका, बांग्लादेश और नेपाल जैसे देशों में हाल के वर्षों में जो जनविद्रोह देखे गए, वे इस बात के प्रतीक हैं कि वैश्विक अर्थव्यवस्था का ढांचा हिल चुका है। बढ़ती महंगाई, घटती नौकरियाँ और शिक्षा-स्वास्थ्य पर कटौती ने आम जनता के जीवन को असहनीय बना दिया है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) जैसी तकनीक जहाँ उत्पादकता बढ़ा रही हैं, वहीं बेरोजगारी को भी नई ऊँचाइयों पर पहुँचा रही हैं। लाखों लोग अपनी नौकरियाँ खो चुके हैं, और जो काम पर हैं, वे भी असुरक्षा की स्थिति में जी रहे हैं। इस पर मौजूदा सरकारों का ध्यान रक्षा, ब्याज भुगतान और जलवायु परिवर्तन पर खर्च में तो है, परंतु जनता की बुनियादी जरूरतों को उपेक्षित किया हुआ है। शिक्षा और स्वास्थ्य पर खर्च घटाने से सामाजिक असंतोष बढ़ रहा है। यूरोप और एशिया के कई देशों में लगातार विरोध-प्रदर्शन हो रहे हैं, सरकारें गिर रही हैं, पर नई सरकारें भी आर्थिक संकट का समाधान नहीं खोज पा रही हैं। इस अव्यवस्था के चलते जनता का विश्वास अपनी ही सरकारों और सिस्टम के प्रति तेजी से घट रहा है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) की रिपोर्ट के अनुसार, आने वाले वर्षों में यूरोप और अमेरिका जैसे विकसित देशों पर ब्याज, पेंशन, स्वास्थ्य, रक्षा और जलवायु खर्च का भारी दबाव रहेगा। अमेरिका को अपने खर्च और आय के बीच का अंतर पाटने के लिए टैक्स बढ़ाना पड़ेगा और सार्वजनिक खर्च में कटौती करनी होगी। पर चिंता इस बात की है कि इसका सीधा असर भी आम नागरिकों पर पड़ेगा, यानी रोजगार घटेंगे, महंगाई बढ़ेगी और जीवनयापन और कठिन हो जाएगा। इस बीच एशिया की स्थिति भी चिंताजनक है। चीन और दक्षिण कोरिया ने पिछले दो दशकों में अपनी जनशक्ति का उपयोग कर आर्थिक मजबूती हासिल की, पर भारत जैसी युवा आबादी वाले देश अभी भी इस क्षमता का पूर्ण उपयोग नहीं कर पाए हैं। भारत की युवा शक्ति यदि उचित दिशा नहीं पा सकी, तो बेरोजगारी और असंतोष यहाँ भी गंभीर सामाजिक समस्या बन सकता है। दुनिया भर में एक नई प्रवृत्ति देखने को मिल रही है, स्थायी नौकरियों की जगह अस्थायी और अनुबंध आधारित रोजगार के साथ ही ठेका पद्धति का चलन बढ़ा है। इसका परिणाम यह हुआ है कि लोगों की बचत समाप्त हो गई है, और भविष्य को लेकर अनिश्चितता बढ़ गई है। अर्थव्यवस्था की रफ्तार थमने लगी है, जबकि सोने-चांदी जैसे सुरक्षित निवेशों की मांग बढ़ रही है। डॉलर और अन्य मुद्राओं का अवमूल्यन हो रहा है, बैंकिंग व्यवस्था डगमगा रही है और शेयर बाजारों में अस्थिरता का दौर जारी है। यह स्थिति बताती है कि वैश्विक आर्थिक प्रणाली एक बड़े पुनर्गठन की मांग कर रही है। मुक्त व्यापार और उदारीकरण की नीतियाँ, जिन्होंने कभी दुनिया को समृद्धि की ओर अग्रसर किया था, अब अपने ही भार से दबने लगी हैं। वैश्विक व्यापार संधि के परिणामस्वरूप बड़ी कंपनियाँ लाभ में हैं, पर आम जनता कर्ज और महंगाई के बोझ से दब चुकी है। अब वक्त आ गया है कि विश्व समुदाय इस संकट से निपटने के लिए संयुक्त रणनीति बनाए। केवल टैक्स बढ़ाने या खर्च घटाने से समाधान नहीं निकलने वाला है। जरूरत है ऐसी नीतियों की जो उत्पादन, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा के बीच संतुलन बनाएँ। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और ऑटोमेशन के युग में मानव संसाधन के पुनर्विकास और शिक्षा पर निवेश बढ़ाना ही दीर्घकालिक समाधान है। अर्थशास्त्रियों का यह मानना सही प्रतीत होता है कि वर्तमान समय 卐आर्थिक पुनर्संतुलन卐 का दौर है। यदि दुनिया की सरकारें आज निर्णायक कदम नहीं उठातीं, तो कल यह संकट केवल आर्थिक नहीं, बल्कि राजनीतिक और सामाजिक अस्थिरता का भी कारण बन जाएगा।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

भारत को उच्च विकास के लिए सभी क्षेत्रों में तुरंत सुधार की जरूरत:आईएमएफ

नई दिल्ली अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के एशिया और पैसिफिक विभाग के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने भारत को सतत आर्थिक विकास बनाए रखने के लिए सभी क्षेत्रों में समग्र सुधारों की सलाह दी है। उन्होंने कहा कि यदि भारत 2047 तक विकसित राष्ट्र बनना चाहता है, तो उसे घरेलू सुधारों के साथ-साथ वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में अपनी भागीदारी भी बढ़ानी होगी। अे धिकारी के अनुसार, भारत की आर्थिक वृद्धि दर इस वर्ष 6 से 6.6 फीसदी के बीच रह सकती है, जबकि अगले वर्ष यह घटकर 6.2 फीसदी हो सकती है, जिसका मुख्य कारण वैश्विक परिस्थितियाँ और ऊँचे टैक्स हैं। उन्होंने बताया कि भारत का हालिया प्रदर्शन मजबूत है, और सुधारों जैसे जीएसटी ने घरेलू उपभोग को बढ़ावा दिया है। हालांकि, उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि वर्तमान में व्यापार और निवेश के रास्ते में कई नीतिगत और विनियामक बाधाएं हैं, जो निजी क्षेत्र की पूरी क्षमता को प्रभावित करती हैं। उन्होंने व्यापार माहौल को सरल बनाने, एफडीआई प्रतिबंधों में ढील देने और डिजिटल व्यापार को बढ़ावा देने की आवश्यकता जताई।

पूर्व सैनिकों को डाक विभाग की सौगात:अब दवाएं पहुंचेंगी घर तक

नई दिल्ली पूर्व सैनिकों की सुविधा के लिए डाक विभाग ने एक नई सेवा की शुरुआत की है, जिसके तहत ईसीएचएस (पूर्व सैनिक अंशदायी स्वास्थ्य योजना) पॉलीक्लिनिकों में उपलब्ध न होने वाली दवाएं अब सीधे लाभार्थियों के घर तक पहुंचाई जाएंगी। यह सेवा पूर्व सैनिक विभाग डीईएसडब्ल्यू के सहयोग से शुरू की गई है। इस पहल के अंतर्गत, ग्राम स्तरीय उद्यमियों द्वारा संचालित सामान्य सेवा केंद्र से दवाओं की खरीद और पैकेजिंग की जाएगी। इसके बाद इन दवाओं को भारतीय डाक विभाग द्वारा लाभार्थियों के पते पर भेजा जाएगा। इस प्रक्रिया में उठाव, बुकिंग, परिवहन और वितरण सभी चरणों का जिम्मा डाक विभाग के पास होगा। इस सेवा की पहली पायलट परियोजना 31 जुलाई को दिल्ली में शुरू की गई थी, जिसे लाभार्थियों से उत्साहजनक प्रतिक्रिया मिली। इसके बाद इसे हरियाणा और उत्तर प्रदेश समेत एनसीआर क्षेत्र में विस्तारित किया गया। पायलट की सफलता के आधार पर देशभर में 458 ईसीएचएस केंद्रों का व्यापक मानचित्रण कर सेवा को राष्ट्रीय स्तर पर लागू किया गया है।

कोका-कोला भारत में लाएगा अपनी बॉटलिंग यूनिट का आईपीओ

2026 में हो सकता है लॉन्च

नई दिल्ली दुनिया के बड़े बेवरेज ब्रांड्स में शामिल कोका-कोला अपनी भारतीय बॉटलिंग यूनिट हिंदुस्तान कोका-कोला बेवरेजेस प्राइवेट लिमिटेड (एचसीसीबी) को शेयर बाजार में उतारने की योजना बना रहा है। कंपनी इस इकाई का इनिशियल पब्लिक ऑफर (आईपीओ) अगले साल 2026 में ला सकती है। इस आईपीओ की अनुमानित वैल्यू करीब 10 अरब डॉलर बताई जा रही है, जिसमें से कंपनी 1 अरब डॉलर जुटाने की उम्मीद कर रही है। भारत में आईपीओ बाजार फिलहाल तेजी से बढ़ रहा है और 2025-2026 में रिकॉर्ड तोड़ने की संभावना है। हाल ही में एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स और हुंडई मोटर की भारतीय इकाइयों ने बड़े आईपीओ किए हैं। कोका-कोला का भी इस सूची में शामिल होना भारतीय शेयर बाजार के लिए एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। हालांकि, अभी कंपनी ने इस आईपीओ के लिए बैंकर्स नियुक्त नहीं किए हैं और डील की टाइमिंग, स्ट्रक्चर और साइज में बदलाव हो सकते हैं। भारत कोका-कोला के लिए एक बड़ा बाजार है, लेकिन यहां मुकेश अंबानी की कैंपा कोला से कड़ी प्रतिस्पर्धा भी है। कैंपा कोला की सस्ती कीमत (10 रुपये में 200 मिलीलीटर) ने इसे तेजी से लोकप्रिय बनाया है। हिंदुस्तान कोका-कोला बेवरेजेस देश के 12 राज्यों और 236 जिलों में काम करती है, 20 लाख से अधिक रिटेलर्स को सर्विस देती है और 5,200 से ज्यादा लोगों को रोजगार प्रदान करती है। कंपनी के 14 मैन्युफैक्चरिंग प्लांट दक्षिण और पश्चिम भारत में स्थित हैं। कोका-कोला ने अपनी भारतीय इकाई की पैरेंट कंपनी हिंदुस्तान कोका-कोला होल्डिंग्स प्राइवेट लिमिटेड में माइनॉरिटी स्टेक जयंती भारतीया ग्रुप को बेचा है, जो कंपनी के विस्तार और पूंजी संरचना को मजबूत करने का संकेत देता है।

भारत-अमेरिका व्यापार समझौता: शुल्क और कृषि बाजार पहुंच बनी बड़ी बाधा

भारत 15 फीसदी शुल्क प्रस्ताव पर अडिग, अमेरिका चाहता है और रियायतें

नई दिल्ली

भारत और अमेरिका के बीच संभावित व्यापार समझौते पर बातचीत तेज़ हो गई है, लेकिन अब भी कई अहम मुद्दों पर मतभेद बने हुए हैं। अमेरिका चाहता है कि भारत अपने उत्पादों पर लगे 25 फीसदी जवाबी शुल्क को घटाकर पाकिस्तान, बांग्लादेश और इंडोनेशिया जैसे देशों के स्तर (19-20 फीसदी) तक लाए। वहीं भारत 15 फीसदी शुल्क प्रस्ताव पर अडिग है ताकि उसके श्रम-आधारित उत्पाद अमेरिकी बाजार में प्रतिस्पर्धी बने रहें। अमेरिका ने संकेत दिया है कि भारत को अपने डेरी और कृषि बाजारों को खोलना होगा, खासकर सोयाबीन, मक्का और डेरी उत्पादों के लिए।

परंतु भारत इन क्षेत्रों को संवेदनशील मानते हुए विदेशी उत्पादों के लिए खोलने से हिचक रहा है। एक अमेरिकी अधिकारी ने नाम न जाहिर करने की शर्त पर कहा, हम प्रत्येक देश के साथ उसकी स्थिति के अनुसार बात करते हैं। भारत से सभी उत्पादों पर शून्य शुल्क की उम्मीद करना अव्यावहारिक है, लेकिन यह व्यापार के लिए फायदेमंद होता। इस बीच, भारत के वाणिज्य सचिव राजेश अग्रवाल के नेतृत्व में एक

प्रतिनिधिमंडल वॉशिंगटन में वार्ता कर रहा है। नवंबर तक समझौते को अंतिम रूप देने की कोशिश की जा रही है।

रेयर अर्थ निर्यात नियमों पर चीन-अमेरिका में टकराव

बीजिंग ने अमेरिका की चिंताओं को बताया भ्रम

नई दिल्ली चीन और अमेरिका के बीच तकनीकी व व्यापारिक प्रतिस्पर्धा एक बार फिर तेज हो गई है। इस बार विवाद का केंद्र हैं रेयर अर्थ एलिमेंट्स (दुर्लभ पृथ्वी तत्व), जो आधुनिक तकनीक, रक्षा उपकरणों और इलेक्ट्रिक वाहनों के निर्माण में बेहद जरूरी हैं। चीन द्वारा 8 नवंबर से लागू किए जाने वाले नए निर्यात नियंत्रण नियमों को लेकर अमेरिका ने चिंता जताई, जिसे बीजिंग ने भ्रम फैलान बताया है। चीन के वाणिज्य मंत्रालय की प्रवक्ता ने अमेरिका के आरोपों को खारिज करते हुए कहा कि नए नियम अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप हैं और इनका उद्देश्य केवल वैध व नागरिक उपयोगों को नियंत्रित करना है। उन्होंने कहा कि अमेरिका खुद 3,000 से अधिक वस्तुओं पर निर्यात नियंत्रण लगाता है, ऐसे में चीन की नीतियों की आलोचना करना दोहरे मापदंडो को दर्शाता है। वहीं, अमेरिकी वाणिज्य सचिव स्कॉट बिसेंट ने चीन के वरिष्ठ वार्ताकार ली चेंगगांग को अनादरपूर्ण कहकर विवाद को और बढ़ा दिया। हालांकि, चीन ने संवाद जारी रखने की बात करते हुए किसी भी प्रकार की गैर-जरूरी राजनीतिक प्रतिक्रिया से बचने की अपील की है।

एच-1बी वीजा शुल्क के खिलाफ अमेरिकी वाणिज्य मंडल की कानूनी चुनौती

ट्रंप प्रशासन द्वारा लागू नया शुल्क छोटे व्यवसायों और तकनीकी क्षेत्र पर भारी

नई दिल्ली अमेरिकी वाणिज्य मंडल ने ट्रंप प्रशासन द्वारा एच-1बी वीजा पर लगाए गए 100,000 डॉलर नए शुल्क को अदालत में चुनौती दी है। यह शुल्क 2025 के लिए एक वर्ष के लिए लागू किया गया है, जिसका उद्देश्य अमेरिकी कंपनियों को विदेशी सस्ती प्रतिभा की बजाय स्थानीय कर्मचारियों को प्राथमिकता देने के लिए प्रोत्साहित करना बताया गया था। वाणिज्य मंडल का कहना है कि यह नया शुल्क गैरकानूनी और अनुचित है क्योंकि यह इमिग्रेशन और नेशनलिटी एक्ट के नियमों का उल्लंघन करता है। कानून के अनुसार, वीजा शुल्क केवल सरकारी प्रक्रिया लागत आधार पर तय किए जा सकते हैं, न कि नीति के उद्देश्यों से। वाणिज्य मंडल के कार्यकारी उपाध्यक्ष और मुख्य नीति अधिकारी ने कहा कि यह शुल्क छोटे और मध्यम आकार के व्यवसायों, स्टार्टअप्स और तकनीकी कंपनियों के लिए भारी आर्थिक बोझ बन जाएगा, जिससे वे वैश्विक प्रतिभा तक नहीं पहुंच पाएंगे। विशेषज्ञों का मानना है कि यह कदम एच-1बी कार्यक्रम के मूल उद्देश्य, यानी उच्च-कुशल विदेशी पेशेवरों की भर्ती को प्रभावित कर सकता है। यदि यह शुल्क स्थायी रूप से लागू होता है, तो अमेरिकी कंपनियों की वैश्विक प्रतिस्पर्धा क्षमता घट सकती है और वे विदेशी निवेश व नवाचार में पिछड़ सकती हैं।

भारतीय शेयर बाजार में लगातार तीसरे सप्ताह रही तेजी

एफआईआई की खरीदारी, डीआईआई समर्थन और कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट से बाजार में आया जोश

मुंबई

भारतीय शेयर बाजार ने लगातार तीसरे सप्ताह तेजी का रुख बरकरार रखा। सेंसेक्स और निफ्टी, दोनों प्रमुख सूचकांकों ने चार महीने की सबसे बड़ी साप्ताहिक बढ़त दर्ज की। विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) की वापसी, घरेलू निवेशकों (डीआईआई) का लगातार समर्थन, कच्चे तेल की कीमतों में नरमी और अमेरिकी फेड द्वारा ब्याज दरों में कटौती की उम्मीदें इस रैली के मुख्य कारण रहे। लांकि, अमेरिका-चीन व्यापार तनाव, अमेरिकी सरकार के संभावित शटडाउन और वैश्विक बैंकिंग क्षेत्र में छाई अनिश्चितता के चलते निवेशक कुछ हद तक सतर्क भी नजर आए। बावजूद इसके, भारतीय बाजार में खरीदारी का दबदबा बना रहा। सप्ताह की शुरुआत सोमवार को गिरावट के साथ हुई, जब सेंसेक्स 451 अंक टूटकर 82,327 पर और निफ्टी 58 अंक गिरकर 25,227 पर बंद हुआ। मंगलवार को भी गिरावट जारी रही, सेंसेक्स 297 अंक गिरा और निफ्टी 81 अंक फिसल गया। बुधवार से बाजार ने तेजी पकड़नी शुरू की। सेंसेक्स 575 अंक की बढ़त के साथ 82,605 पर बंद हुआ, जबकि निफ्टी 178 अंक चढ़कर 25,323 पर पहुंचा। गुरुवार को भी इसी प्रकार की

मजबूती देखी गई। शुक्रवार को बाजार ने सप्ताह का समापन मजबूत तरीके से किया।

सेंसेक्स 484 अंकों की तेजी के साथ 83,952.19 पर और निफ्टी 124 अंक चढ़कर 25,709.85 पर बंद हुआ। यह साप्ताहिक तेजी संकेत देती है कि भारतीय बाजार में निवेशकों का विश्वास मजबूत बना हुआ है। अब बाजार की नजर अगले सप्ताह आने वाले कॉरपोरेट नतीजों और वैश्विक आर्थिक संकेतकों पर टिकी रहेगी।

रिलायंस रिटेल ने दूसरी तिमाही में दर्ज किया 3,439 करोड़ का मुनाफा

नई दिल्ली

रिलायंस रिटेल वेंचर्स लिमिटेड (आरआरवीएल) ने वित्त वर्ष 2026 की दूसरी तिमाही में 3,439 करोड़ का मुनाफा दर्ज किया, जो पिछले वर्ष की इसी तिमाही से 17.2 फीसदी अधिक है। कंपनी का परिचालन एबिटा 16.7 फीसदी बढ़कर 6,624 करोड़ हो गया। इस दौरान परिचालन राजस्व 79,128 करोड़ रहा, जो 19 फीसदी की वृद्धि दर्शाता है, जबकि सकल राजस्व 90,018 करोड़ रहा, जो 18 फीसदी अधिक है। कंपनी के बेहतर प्रदर्शन का श्रेय परिचालन उत्कृष्टता, स्टोर एवं डिजिटल प्लेटफॉर्म में निवेश तथा त्योहारी खरीदारी में वृद्धि को दिया गया है। कंपनी की कार्यकारी निदेशक ईशा अंबानी ने कहा कि जीएसटी दरों में बदलाव से उपभोक्ताओं को कम कीमतों का लाभ मिलेगा, जिससे खपत में और तेजी आएगी। जियो प्लेटफॉर्म्स ने जुलाई-सितंबर तिमाही में 7,379 करोड़ का मुनाफा दर्ज किया, जो सालाना आधार पर 12.8 फीसदी अधिक है। कंपनी का परिचालन राजस्व 36,332 करोड़ रहा, जो 14.6 फीसदी बढ़ा है। सकल राजस्व 42,652 करोड़ रहा, जो पिछले वर्ष की तुलना में 14.9 फीसदी अधिक है। जियो के प्रति उपयोगकर्ता औसत राजस्व (एआरपीयू) में भी 8.4 फीसदी की वृद्धि हुई और यह 211.4 तक पहुंच गया। जियो ने इस तिमाही में हर महीने 10 लाख से अधिक नए आवासों को अपनी सेवा से जोड़ा, जिससे फिक्स्ड ब्रॉडबैंड कनेक्शन करीब 2.3 करोड़ हो गए। रिलायंस इंडस्ट्रीज के अध्यक्ष मुकेश अंबानी ने कहा

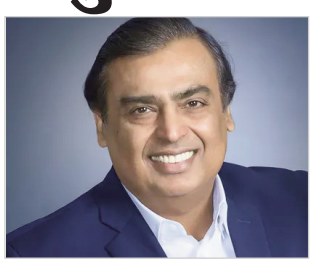

कि कंपनी के सभी फॉर्मेट में बेहतर कारोबार दर्ज हुआ है, जिससे राजस्व और एबिटा दोनों में मजबूत वृद्धि हुई है।

यह प्रदर्शन कंपनी की उपभोक्ता समझ और नवाचार की रणनीति का परिणाम है।

रिलायंस इंडस्ट्रीज का मुनाफा 9.7 फीसदी बढ़ा, राजस्व में 10 फीसदी की बढ़ोतरी

वित्त वर्ष 2026 की दूसरी तिमाही में 18,165 करोड़ का शुद्ध लाभ

नई दिल्ली रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आरआईएल) ने वित्त वर्ष 2026 की दूसरी तिमाही (जुलाई-सितंबर 2025) में शानदार प्रदर्शन करते हुए 18,165 करोड़ रुपए का समेकित शुद्ध लाभ दर्ज किया, जो पिछले साल की समान तिमाही की तुलना में 9.7 फीसदी अधिक है। हालांकि यह लाभ पहली तिमाही के 26,994 करोड़ रुपए से 32.7 फीसदी कम रहा। कंपनी की समेकित शुद्ध बिक्री सालाना आधार पर 4.5 फीसदी और तिमाही आधार पर 10 फीसदी बढ़कर 2.55 लाख करोड़ रही, जो ब्लूमबर्ग के 2.49 लाख करोड़ के अनुमान से अधिक थी। जबकि शुद्ध लाभ, 18,900 करोड़ के अनुमान से थोड़ा कम रहा। रिलायंस के तीन प्रमुख व्यवसाय–जियो, रिटेल और ऑयल-टू-केमिकल्स ने कंपनी के प्रदर्शन को मजबूती दी। जियो प्लेटफॉर्म्स का शुद्ध मुनाफा 13 फीसदी बढ़कर 7,379 करोड़ रुपए पहुंच गया, जबकि खुदरा कारोबार ने भी तेज ग्रोथ दिखाई। ऑयल-टू-केमिकल्स सेगमेंट में संचालन में सुधार और घरेलू मांग के चलते प्रदर्शन बेहतर रहा।

भारत का तेल आयात बिल 15 फीसदी घटा, रूसी तेल में फिर उछाल

अप्रैल-सितंबर 2025 में कच्चे तेल पर भारत का खर्च घटकर 60.7 अरब डॉलर हुआ

नई दिल्ली

वित्त वर्ष 2025-26 की पहली छमाही (अप्रैल-सितंबर) में भारत का कच्चे तेल का आयात खर्च सालाना आधार पर 14.7 फीसदी गिरकर 60.7 अरब डॉलर हो गया। पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ (पीपीएसी) के अनुसार, पिछले साल इसी अवधि में यह बिल 71.2 अरब डॉलर था। इस गिरावट का प्रमुख कारण अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में नरमी और आपूर्ति में बढ़ोतरी रहा। ओपीईसी प्लस देशों द्वारा उत्पादन बढ़ाने से वैश्विक आपूर्ति में सुधार हुआ, जिससे भारतीय कच्चे तेल की औसत कीमत 73.69 डॉलर से घटकर 69.61 डॉलर प्रति बैरल हो गई। हालांकि, आयात की मात्रा में ज्यादा बदलाव नहीं हुआ, यह 12.07 करोड़ टन से बढ़कर 12.12 करोड़ टन रही। भारत अपनी घरेलू जरूरतों के लिए अब भी 88.4 फीसदी कच्चे तेल का

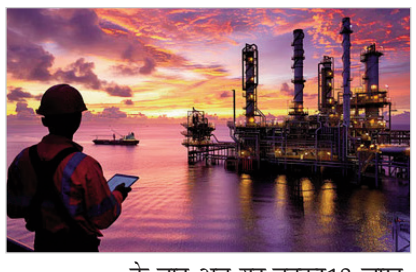

आयात करता है। तरलीकृत प्राकृतिक गैस (एलएनजी) के आयात बिल में भी 10.5 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई, जो अब 6.8 अरब डॉलर रह गया। इसकी प्रमुख वजह घरेलू मांग में कमी रही, जिससे गैस की खपत घटकर 3,426.5 करोड़ घन मीटर रह गई। इस बीच रूस से तेल आयात में अक्टूबर के पहले पखवाड़े में तेज़ उछाल आया है। तीन महीने की गिरावट के बाद अब यह बढ़कर18 लाख बैरल प्रति दिन हो गया है। जुलाई से सितंबर के बीच रूसी तेल का आयात क्रमशः घटता हुआ दिखा था, लेकिन भारतीय रिफाइनर आकर्षक कीमतों के चलते आपूर्ति बनाए रखे हुए हैं।

विक्रम सोलर के शेयर गिरावट के बावजूद मुनाफे में भारी उछाल

शेयर प्राइस में 3 फीसदी की गिरावट, आईपीओ प्राइस से नीचे पहुंचा दाम

नई दिल्ली

सोलर पावर क्षेत्र की कंपनी विक्रम सोलर लिमिटेड के शेयर शुक्रवार को 3 फीसदी की गिरावट के साथ 331.05 रुपये पर बंद हुए। यह कीमत कंपनी के आईपीओ प्राइस 332 रुपये से भी कम है। कंपनी के शेयरों का 52 हफ्ते का उच्चतम स्तर 407.85 रुपये रहा है, जबकि न्यूनतम 312.50 रुपये पर आया। हालांकि शेयर कीमतों में गिरावट आई है, लेकिन कंपनी के वित्तीय नतीजे बेहद मजबूत रहे। चालू वित्त वर्ष की सितंबर तिमाही में विक्रम सोलर का कंसॉलिडेटेड नेट प्रॉफिट 1636.5 फीसदी बढ़कर 128 करोड़ रुपये पहुंच गया, जबकि पिछले साल इसी तिमाही में मुनाफा मात्र 7 करोड़ रुपये था। पहली छमाही में कंपनी ने 262 करोड़ रुपये का मुनाफा दर्ज किया, जो पिछले साल की समान अवधि के 30 करोड़ रुपये से 767 फीसदी अधिक है। दूसरी तिमाही में विक्रम सोलर का रेवेन्यू 9 फीसदी बढ़कर 1110 करोड़ रुपये रहा। कंपनी का ऐ बि टिडा मार्जिन भी 8 फीसदी सुधर कर 21 फीसदी पर पहुंच गया है, जो परिचालन दक्षता में सुधार का संकेत देता है। विक्रम सोलर का आईपीओ अगस्त 2025 में खुला था, जिसमें शेयर का शुरुआती मूल्य 332 रुपये था। आईपीओ को कुल 56.42 गुना सब्सक्राइब किया गया, जिसमें क्वॉलीफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स की ओर से 145.10 गुना सब्सक्रिप्शन मिला। शानदार वित्तीय प्रदर्शन के बावजूद शेयर कीमत में गिरावट आने से यह सवाल उठता है कि क्या बाजार को भविष्य में कंपनी के प्रदर्शन को लेकर कोई संदेह है, या तकनीकी कारण इसकी वजह हैं। निवेशकों के लिए यह विचार करने वाली बात है।

हुंडई 2026 वेन्यू में आधुनिक टेक्नोलॉजी और फीचर्स दिए जाने की उम्मीद

नईदिल्ली (ईएमएस)। हुंडई अपने सब-4 मीटर एसयूवी पोर्टफोलियो में 2026 वेन्यू में आधुनिक टेक्नोलॉजी और फीचर्स दिए जाने की उम्मीद है, जिससे इसे भारत के मोस्ट अवेटेड लॉन्च में से एक माना जा रहा है। इसे कंपनी ने सिर्फ फेसलिफ्ट नहीं बल्कि नेक्स्ट-जेनरेशन मॉडल बताया है। हुंडई ने इसकी लॉन्च डेट 4 नवंबर, 2025 घोषित की है। स्पाई शॉट्स और रेंडर्स से पता चलता है कि 2026 वेन्यू में पूरी तरह नया और फ्यूचरिस्टिक डिजाइन देखने को मिलेगा।

इस एसयूवी में 12.3-इंच का डुअल डिस्प्ले सेटअप दिया जाएगा, जो वायरलेस एंड्रॉइड ऑटो और एपल कारप्ले को सपोर्ट करेगा।

यह फीचर इसे ब्रांड की पहली मेनस्ट्रीम एसयूवी बनाता है जिसमें घुमावदार आकार की दोहरी स्क्रीन और नेक्स्ट-जेन इंफोटेनमेंट सिस्टम मिलेगा। नई वेन्यू में फ्यूचरिस्टिक स्टीयरिंग व्हील, व्यवस्थित डैशबोर्ड और स्मार्ट सेंटर कंसोल की उम्मीद है। फीचर्स में 360-डिग्री कैमरा, पैनोरमिक सनरूफ, डुअल-जोन क्लाइमेट कंट्रोल, रियर वेंटिलेटेड सीटें और ऑटो-डिमिंग आईआरवीएम शामिल होने की संभावना है।

इसके अलावा, फ्रंट विंडस्क्रीन पर डैशकैम भी दिया जा सकता है।

ओटीए अपडेट भी इसमें दिया जाएगा, जिससे गाड़ी के सॉफ्टवेयर को भविष्य में आसानी से अपडेट किया जा सकेगा। इन सब अपग्रेड्स के साथ 2026 हुंडई वेन्यू डिजाइन, तकनीक और सुरक्षा में बेहतर होगी और सब-4 मीटर एसयूवी सेगमेंट में अपने प्रतिद्वंद्वियों के लिए मजबूत विकल्प साबित होगी।

डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र अभियान 2025 शुरू

80 साल से ऊपर के पेंशनभोगी अभी जमा करें

नई दिल्ली

2025 में केंद्र सरकार ने चौथा देशव्यापी डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र अभियान शुरू किया है। यह अभियान पूरे भारत के 2000 जिलों और उप-मंडलीय मुख्यालयों को कवर करेगा। इसका मकसद पेंशनभोगियों को डिजिटल माध्यम से जीवन प्रमाण पत्र जमा करने में आसानी देना है ताकि उनकी पेंशन में कोई रुकावट न आए। पंजाब नेशनल बैंक के 80 वर्ष या उससे अधिक उम्र के पेंशनभोगी 1 अक्टूबर 2025 से अपने डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र जमा कर सकते हैं। बाकी सभी पेंशनभोगी 1 नवंबर से 30 नवंबर 2025 तक अपना जीवन प्रमाण पत्र जमा कर सकेंगे। यह तारीखें पेंशन विभाग द्वारा तय की गई हैं, और समय पर जमा करने पर पेंशन अगले साल नवंबर तक बिना किसी बाधा के मिलती रहेगी। डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र आधार कार्ड से बायोमेट्रिक जानकारी के माध्यम से तैयार होता है। पेंशनभोगी को 'जीवन प्रमाण' ऐप डाउनलोड करना होगा और 'आधार फेस आरडी' ऐप से चेहरा पहचान कराना होगा। इसके बाद पोर्टल पर लॉगिन कर आवश्यक विवरण भरकर सबमिट करना होगा। पंजाब नेशनल बैंक में 80 वर्ष से ऊपर के लिए सुविधा 1 अक्टूबर से शुरू होती है। डाक विभाग की डोरस्टेप सेवा भी उपलब्ध है, जिसमें डाकिया घर आकर मदद करता है। यदि आधार कार्ड लिंक नहीं है तो पहले लिंक

Jeevan Pramaan
Digital Life Certificate for Pensioners

कराना आवश्यक है। अब डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र को ही मान्यता मिली है। पहले की तरह बैंक या डाकघर जाकर फॉर्म भरने की जरूरत नहीं है। यदि कोई डिजिटल प्रक्रिया नहीं कर पाता, तो फिजिकल जीवन प्रमाण जमा करने का विकल्प वैकल्पिक रूप से मौजूद है।

शुभमन गिल की कप्तानी में ऑस्ट्रेलिया से पहली परीक्षा आज

पर्थ (ऑस्ट्रेलिया) (एजेंसी)। भारतीय टीम रविवार को पर्थ में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहले वनडे में उतरने जा रही है, और यह मुकाबला कई मायनों में खास होगा। सात महीने बाद टीम में विराट कोहली और रोहित शर्मा की वापसी हो रही है, जबकि वनडे प्रारूप में पहली बार शुभमन गिल बतौर पूर्णकालिक कप्तान टीम की अगुवाई करेंगे। चैंपियंस ट्रॉफी के बाद मैदान से दूर रहे कोहली और रोहित भारतीय क्रिकेट के लिए अब नए दौर का हिस्सा बनकर लौट रहे हैं। पिछले कुछ महीनों में भारत ने टेस्ट और टी20 प्रारूप में इन दोनों दिग्गजों के बिना भी मजबूती से आगे बढ़ना सीखा है। ऐसे में अब सवाल यह है कि वनडे फॉर्मेट में इन दोनों के पास टीम को देने के लिए क्या बाकी है।

हालांकि इसमें कोई शक नहीं कि कोहली और रोहित दोनों वनडे क्रिकेट के सर्वकालिक महान बल्लेबाजों में गिने जाते हैं। इस सीरीज से पहले दोनों ने फिटनेस पर कड़ी मेहनत की है। रोहित ने अपना वजन घटाया है जबकि कोहली ने लंदन में अपने निजी ट्रेनर के साथ अभ्यास किया। आईपीएल के बाद से दोनों ने प्रतिस्पर्धी क्रिकेट नहीं खेला है, इसलिए ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ यह वापसी आसान नहीं होगी। रोहित शर्मा अब टीम में बतौर सीनियर खिलाड़ी अपनी भूमिका निभाएंगे। उनकी कप्तानी में भारत ने हाल में टी20 एशिया कप और वनडे चैम्पियनशिप जैसे खिताब जीते हैं। वहीं कोहली के लिए यह सीरीज उनके वनडे करियर की दिशा तय कर सकती है। अगर वह एक बार फिर अपने पुराने अंदाज में लंबी पारी खेलते हैं और रोहित ठोस शुरुआत देते हैं, तो दोनों का करियर कुछ और साल आगे बढ़ सकता है।

मिचेल स्टार्क और जोश हेजलवुड जैसे ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाजों के खिलाफ रोहित और कोहली की पुरानी प्रतिद्वंद्विता देखने लायक होगी। हालांकि दोनों को पता है कि अब टीम में उनकी जगह स्थायी नहीं है। चयनकर्ता और टीम प्रबंधन 2027 वनडे वर्ल्ड कप को ध्यान में रखते हुए नए चेहरों पर दांव लगाने

को तैयार हैं। शुभमन गिल पर भी नजरें रहेंगी। उन्होंने इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज में शानदार प्रदर्शन कर यह जता दिया कि वह कोहली की विरासत को आगे बढ़ाने के लिए तैयार हैं। अब कप्तान के तौर पर उन्हें रोहित द्वारा स्थापित मानदंडों पर खरा उतरना होगा। टीम प्रबंधन रोहित और गिल की ओपनिंग जोड़ी को बरकरार रखेगा। कोहली तीसरे नंबर पर, उनके बाद श्रेयस अय्यर और केएल राहुल खेलेंगे। हार्दिक पांड्या की गैरमौजूदगी में नीतिश कुमार रेड्डी वनडे डेब्यू कर सकते हैं। तेज गेंदबाजी विभाग में सिराज और अर्शदीप के साथ हर्षित राणा या प्रसिद्ध कृष्णा को मौका मिल सकता है, जबकि स्पिन का जिम्मा कुलदीप यादव और अक्षर पटेल संभालेंगे। ऑस्ट्रेलिया की ओर से कोनोर कोनोली, मार्नस लाबुशेन और मैथ्यू रेनशॉ पर प्रदर्शन की जिम्मेदारी होगी। मुकाबला भारतीय समयानुसार सुबह नौ बजे से शुरू होगा।

दोनो ही टीमें इस प्रकार हैं

भारत- शुभमन गिल (कप्तान), रोहित शर्मा, विराट कोहली, श्रेयस अय्यर, अक्षर पटेल, केएल राहुल, नीतिश कुमार रेड्डी, वॉशिंगटन सुंदर, कुलदीप यादव, हर्षित राणा, मोहम्मद सिराज, अर्शदीप सिंह, प्रसिद्ध कृष्णा, ध्रुव जुरेल, यशस्वी जायसवाल।

ऑस्ट्रेलिया- मिचेल मार्श (कप्तान), जेवियर बार्लेट, कूपर कोनोली, बेन ड्वारशुइस, नाथन एलिस, जोश हेजलवुड, ट्रेविस हेड, मैथ्यू कुन्हेमन, मार्नस लाबुशेन, मिचेल ओवन, जोश फिलीप, मैथ्यू रेनशॉ, मैथ्यू शॉर्ट, मिचेल स्टार्क।

ज्योति शूरेखा ने रचा इतिहास, फाइनल में जीता कांस्य पदक

नानजिंग (चीन) (एजेंसी)। भारत की स्टार तीरंदाज ज्योति सुरेखा वेन्नम ने शनिवार को इतिहास रचते हुए वर्ल्ड कप फाइनल में कांस्य पदक जीत लिया। वह ऐसा करने वाली भारत की पहली महिला कंपाउंड आर्चर बन गई हैं। एशियाई खेलों की स्वर्ण पदक विजेता ज्योति ने ब्रिटेन की वर्ल्ड नंबर-2 एला गिब्सन को हराकर यह उपलब्धि हासिल की। उन्होंने मुकाबले में 15 में से 15 परफेक्ट तीर साधे और 150-145 से जीत दर्ज की।

29 वर्षीय ज्योति ने क्वार्टर फाइनल में अमेरिका की एलेक्सिस रुइज को 143-140 से हराया था, लेकिन सेमीफाइनल में उन्हें वर्ल्ड नंबर-1 एंड्रिया बेसेरा (मेक्सिको) से कड़े मुकाबले में 143-145 से हार का सामना करना पड़ा। हालांकि, ज्योति ने वापसी करते हुए ब्रॉन्ज़ मेडल मुकाबले में शानदार प्रदर्शन दिखाया। यह ज्योति का वर्ल्ड कप फाइनल में तीसरा प्रदर्शन था – वह इससे पहले ट्लेक्सकाला (2022) और हर्मोसिलो (2023) में पहले ही दौर में बाहर हो गई थीं।

महिला कंपाउंड वर्ग में भारत की एक और खिलाड़ी मधुरा धामनगांवकर पहले दौर में मैक्सिको की मरियाना बर्नाल से 142-145 से हारकर बाहर हो गईं।

पुरुष कंपाउंड वर्ग में भारत के ऋषभ यादव को मामूली अंतर से ब्रॉन्ज़ मेडल से चूकना पड़ा। उन्होंने नीदरलैंड्स के पूर्व विश्व चैंपियन माइक श्लोसर के खिलाफ रोमांचक शूट-ऑफ में हार का सामना किया। दोनों ने पांचों राउंड में 147-147 की बराबरी की थी, लेकिन शूट-ऑफ में श्लोसर का तीर केंद्र के ज्यादा पास था।

भारत के लिए अब तक वर्ल्ड कप फाइनल में अभिषेक वर्मा ही एकमात्र कंपाउंड आर्चर हैं जिन्होंने 2015 (मैक्सिको सिटी) में रजत और 2018 (सैमसुन) में कांस्य पदक जीता था।

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ इतिहास रच सकते हैं किंग कोहली

नई दिल्ली (एजेंसी)। टीम इंडिया के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली एक बार फिर क्रिकेट मैदान पर वापसी के लिए पूरी तरह तैयार हैं। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के बाद वह 19 अक्टूबर को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अपना पहला अंतरराष्ट्रीय मुकाबला खेलने वाले हैं। इस मैच में कोहली के निशाने पर वह ऐतिहासिक रिकॉर्ड होगा जो 148 साल के क्रिकेट इतिहास में आज तक कोई भी खिलाड़ी नहीं बना पाया है।

यह रिकॉर्ड है एक फॉर्मेट में सबसे ज्यादा शतक लगाने का। फिलहाल विराट कोहली और सचिन तेंदुलकर इस रिकॉर्ड पर संयुक्त रूप से बराबरी पर हैं। दोनों के नाम एक फॉर्मेट में 51-51 शतक दर्ज हैं। सचिन ने यह उपलब्धि टेस्ट क्रिकेट में हासिल की थी, जबकि कोहली ने वनडे फॉर्मेट में। अगर विराट कोहली ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीन मैचों की वनडे सीरीज में सिर्फ एक शतक भी बना देते हैं, तो वह 52 शतक के साथ विश्व क्रिकेट के इतिहास में यह अनोखा रिकॉर्ड अपने नाम कर लेंगे। वह पहले ऐसे बल्लेबाज बन जाएंगे जिन्होंने किसी भी एक फॉर्मेट में 52 शतक जड़े हों। सचिन तेंदुलकर ने 2010-11 के दक्षिण अफ्रीका दौरे पर टेस्ट में 51वां शतक लगाया था और यह रिकॉर्ड लंबे समय तक अटूट रहा। वहीं, कोहली ने हाल ही में चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में पाकिस्तान के खिलाफ शानदार शतक जड़कर इस रिकॉर्ड की बराबरी की थी। अब पर्थ में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहला वनडे उनके लिए ऐतिहासिक साबित हो सकता है।

महिला वर्ल्ड कप 2025 : भारत को इंग्लैंड के खिलाफ छठे गेंदबाज का विकल्प अपनाने का दबाव

इंदौर (एजेंसी)। महिला वनडे वर्ल्ड कप 2025 में लगातार दो हार झेल चुकी भारतीय टीम को इंग्लैंड के खिलाफ रविवार को विशाखापट्टनम में होने वाले अहम मुकाबले में अपने गेंदबाजी आक्रमण को संतुलित करने के लिए छठे गेंदबाज को आजमाने पर विचार करना होगा। दक्षिण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मिली हारों ने भारत की सेमीफाइनल की उम्मीदों को कमजोर कर दिया है।

इस विश्व कप सत्र में भारत ने पांच बल्लेबाजों, एक विकेटकीपर और पांच गेंदबाजों के संयोजन के साथ खेला, जिनमें तीन हरफनमौले हैं। लेकिन यह संयोजन अब तक कारगर साबित नहीं हुआ। भारत को सेमीफाइनल में बने रहने के लिए तीन में से कम से कम दो मैच जीतने होंगे। दक्षिण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया ने 251 और 330 रन के विशाल लक्ष्य का पीछा करते हुए भारत के गेंदबाजी आक्रमण की कमजोरी उजागर कर दी।

हरफनमौलाओं के कारण टीम ने बल्लेबाजी की गहराई तो बढ़ाई, लेकिन रेणुका सिंह जैसी प्रमुख विकेट लेने वाली

गेंदबाज को छोड़ना पड़ा, जिससे गेंदबाजी विविधता कमजोर हुई। अनुभवहीन युवा गौड़ पर भी दबाव बढ़ा है, जबकि बाएं हाथ की स्पिनर राधा यादव और तेज गेंदबाज अरूंधति रेड्डी को भी इस विकल्प में शामिल करने की संभावनाएं हैं।

बल्लेबाजों का फॉर्म भी चिंता का विषय है। विश्व कप से पहले शानदार फॉर्म में दिख रही भारतीय बल्लेबाजें अब खामोश हैं। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ स्मृति मंधाना और प्रतिका रावल ने अर्धशतक लगाया, लेकिन कप्तान हरमनप्रीत कौर और जेमिमा रौड्रिग्स का योगदान नहीं मिला। आखिरी छह विकेट मात्र 36 रन में गिर गए। श्रीलंका और पाकिस्तान के खिलाफ यह कमी निचले क्रम ने ढक दी थी, लेकिन इंग्लैंड जैसी मजबूत टीम के खिलाफ शीर्षक्रम को जिम्मेदारी से खेलना होगा।

इंदौर के होल्कर स्टेडियम की पिच बल्लेबाजों के लिए मददगार मानी जाती है, और अब तक यहां दोनों मैचों में बड़े स्कोर बने हैं। इंग्लैंड ने अब तक अपराजेय प्रदर्शन किया है, लेकिन उसके बल्लेबाज एकजुट नहीं दिखे। पाकिस्तान और बांग्लादेश के खिलाफ टीम जल्दी विकेट खो बैठी थी। इंग्लैंड के गेंदबाज संकटमोचक की भूमिका निभा रहे हैं और टीम को सेमीफाइनल में पहुंचने के लिए बस एक जीत की जरूरत है। मैच भारतीय समयानुसार दोपहर तीन बजे से शुरू होगा और यह भारतीय टीम के लिए 'करो या मरो' मुकाबला साबित होगा।

भारत- हरमनप्रीत कौर (कप्तान), स्मृति मंधाना, प्रतिका रावल, हरलीन देयोल, जेमिमा रौड्रिग्स, रिचा घोष, उमा छेत्री, रेणुका सिंह ठाकुर, दीप्ति शर्मा, स्नेह राणा, श्री चरणी, राधा यादव, अमनजोत कौर, अरूंधति रेड्डी, क्रांति गौड

इंग्लैंड- नैट साइवर-ब्रंट (कप्तान), एम अर्लट, टैमी ब्यूमोंट, लॉरेन बेल, एलिस कैप्सी, चार्ली डीन, सोफिया डंकले, सोफी एक्लेस्टोन, लॉरेन फाइलर, सारा ग्लेन, एमी जोन्स, हीथर नाइट, एम्मा लैम्ब, लिन्सी स्मिथ, डैनी व्याट-हॉज।

फुटबॉल में भारत का निराशाजनक प्रदर्शन, फीफा विश्व रैंकिंग में 136वें स्थान पर

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारतीय फुटबॉल टीम लगातार निराशाजनक प्रदर्शन कर रही है। पुरुष सीनियर राष्ट्रीय टीम फीफा विश्व रैंकिंग में 136वें स्थान पर आ गई है। नवंबर 2016 के बाद से भारतीय टीम का यह सबसे निचला स्थान है। जारी नई रैंकिंग ने भारतीय टीम की मुश्किलें और बढ़ा दी हैं। भारतीय टीम 2026 फीफा विश्व कप और 2027 एएफसी एशियाई कप दोनों की दौड़ से बाहर हो गई है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक इंटरकांटिनेंटल कप, सैफ चैंपियनशिप और ट्राई-नेशन सीरीज में 2023 की जीत के बाद एक उभरती हुई टीम के रूप में देखी जाने वाली भारत की रैंकिंग पिछले एक साल में तेजी से गिरी है। इस साल की शुरुआत में कतर में हुए एएफसी एशियन कप में भारत का प्रदर्शन बहुत ही निराशाजनक रहा। ग्रुप मैच में तीन हार के साथ बिना एक भी गोल किए टीम बाहर हो गई। इसके बाद से टीम संघर्ष करती रही है। दो साल से कम समय में तीन मुख्य कोच बदल चुके हैं। सबसे पहले इगोर स्टिमैक को बाहर का रास्ता दिखाया गया, उनके बाद मनोलो मार्केज आए। इस साल की शुरुआत में खालिद जमील को जगह दी गई। जमील के नेतृत्व में प्रगति की झलकियां दिखाई देने के बावजूद विशेष रूप से सीएएफए नेशंस कप में एक मैत्रीपूर्ण टूर्नामेंट जहां भारत ने रणनीतिक सुधार दिखाया, प्रतिस्पर्धी मुकाबलों में परिणाम निराशाजनक रहे। टीम की किसी प्रतिस्पर्धी मैच में आखिरी जीत करीब एक साल पहले नवंबर 2023 में कुवैत पर 1-0 की जीत के साथ हुई थी। वैश्विक स्तर पर स्पेन ने फीफा पुरुष रैंकिंग में शीर्ष स्थान बरकरार रखा है, जो विश्व कप विजेता अर्जेंटीना और तीसरे स्थान पर मौजूद फ्रांस से आगे है।

महिला टी20 में किरण नवगिरे ने 34 गेंद में लगाया शतक, रचा इतिहास

नागपुर। भारतीय टीम और महाराष्ट्र की सलामी बल्लेबाज किरण नवगिरे ने इतिहास रच दिया है। नवगिरे ने महिला टी20 में सबसे तेज शतक लगाने का रिकॉर्ड अपने नाम किया है। शुक्रवार को महिला खेले गए टी20 ट्रॉफी में नवगिरे ने 34 गेंद पर शतक ठोका। शुक्रवार को महिला टी20 ट्रॉफी में नवगिरे ने 34 गेंदों में शतक लगाया और 35 गेंदों पर 106 रनों की ऐतिहासिक पारी खेली। नवगिरे का शतक 300 से ज्यादा स्ट्राइक रेट वाली एकमात्र महिला टी20 शतक है। इस पारी की बदौलत महाराष्ट्र ने

पंजाब को आठ ओवर पहले ही हरा दिया। पूर्व में महिला टी20 का सबसे तेज शतक का रिकॉर्ड न्यूजीलैंड की सोफी डिवाइन के नाम था। डिवाइन ने जनवरी 2021 में ओटागो के खिलाफ वेलिंगटन के लिए 36 गेंदों पर शतक लगाया था। उस पारी में डिवाइन ने 38 गेंदों में नाबाद 108 रन बनाए थे। नवगिरे के सामने पंजाब की गेंदबाज बेहद साधारण और असहाय नजर आईं। नवगिरे की आक्रामकता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि दूसरे विकेट के लिए मुक्ता नागरे के साथ उन्होंने 103 रन की नाबाद साझेदारी खेली। इसमें मुक्ता के सिर्फ 6 रन थे। नवगिरे ने अपनी पारी में 14 चौके और सात छक्के लगाए। महाराष्ट्र के सोलापुर जिले के मिरे की रहने वाली नवगिरे ने पहली बार महिला टी20 ट्रॉफी के 2022 संस्करण में सबका ध्यान अपनी ओर खींचा था, जब उन्होंने नागालैंड के लिए 35 छक्के लगाए थे। वह अरुणाचल प्रदेश के खिलाफ 76 गेंदों में 162 रनों की पारी के दौरान महिला टी20 मैच में 150 से ज्यादा का स्कोर बनाने वाली पहली भारतीय भी बनीं। बड़े शॉट लगाने की क्षमता ने नवगिरे को 2022 में इंग्लैंड के खिलाफ चेस्टर ली-स्ट्रीट में भारत के लिए डेबू करने का मौका दिलाया था। अक्टूबर 2022 में खेले गए महिला एशिया कप के बाद से उन्हें राष्ट्रीय टीम में जगह नहीं मिली है। वह भारत के लिए छह मैच खेल चुकी हैं। विमेंस प्रीमियर लीग में वह यूपी वॉरियर्स के लिए खेलती हैं और तीन सीजन की 24 पारियों में 419 रन बना चुकी हैं। नवगिरे भविष्य में भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान एमएस धोनी की तरह बनना चाहती हैं।

हर मैच में विराट और रोहित को आजमाना बेवकूफी: अगरकर

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्व तेज गेंदबाज और चयन समिति के अध्यक्ष अजीत अगरकर ने स्पष्ट किया है कि सीनियर भारतीय बल्लेबाज विराट कोहली और रोहित शर्मा का ऑस्ट्रेलिया सीरीज में प्रदर्शन जरूर आंका जाएगा, लेकिन हर मैच में उन्हें आजमाना 'बेवकूफी' होगी। रोहित और कोहली सात महीने बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में वापसी करने वाले हैं और इस बात को लेकर अटकलें लग रही हैं कि 2027 वनडे विश्व कप से पहले उनकी हर सीरीज में समीक्षा होगी।

अगरकर ने हाल ही में एक बातचीत के दौरान कहा, 'जब वे खेलना शुरू करेंगे तो उनका आकलन होगा, लेकिन उनकी जगह खतरे में नहीं है। प्रत्येक मैच में उन्हें आजमाना बेवकूफाना होगा।' उन्होंने यह भी दोहराया कि शुभमन गिल को नया वनडे कप्तान घोषित करने के बाद टीम चयन पर किसी टूर्नामेंट के लिए पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता, जो अभी दो साल दूर है।

अगरकर ने यह स्पष्ट किया कि इसका मतलब यह नहीं है कि अगर वे ऑस्ट्रेलिया में रन नहीं बनाए तो उन्हें टीम से बाहर किया जाएगा और अगर उन्होंने तीन शतक बनाए तो 2027 विश्व कप के लिए चुना जाएगा। उन्होंने यह भी बताया कि कोहली और रोहित ने स्वयं टेस्ट क्रिकेट छोड़ने का निर्णय लिया था और चयन समिति उनके अनुभव से संतुष्ट है। 'दोनों दिग्गज खिलाड़ी हैं और उन्होंने हमारे से संपर्क किया था। जब उन्होंने फैसला लिया तो हमें उनका सम्मान करना होगा,' उन्होंने कहा।

इस दौरान अगरकर ने मोहम्मद शमी के चयन को लेकर भी स्थिति स्पष्ट की। उन्होंने कहा कि शमी इंग्लैंड दौरे के लिए फिट नहीं थे और पिछले छह से आठ महीनों में उनकी सामान्य मैच फिटनेस ठीक नहीं रही। उत्तराखंड के खिलाफ बंगाल के रणजी ट्रॉफी मैच से पहले शमी ने ऑस्ट्रेलिया वनडे टीम में चयन से नजरअंदाज किए जाने पर नाराजगी जताई थी।

अगरकर ने कहा, 'अगर शमी यहां होते तो मैं उन्हें जवाब देता। पिछले छह से आठ महीनों में हमें पता चला कि वह फिट नहीं थे। अगर वह फिट होते तो इंग्लैंड दौरे के लिए भी चुने जा सकते थे। फिटनेस और तैयारी के बिना किसी का चयन करना सही नहीं होता।' इस बयान से स्पष्ट है कि चयन समिति अनुभवी खिलाड़ियों के योगदान को महत्व देती है, लेकिन फिटनेस और टीम की रणनीति को ध्यान में रखते हुए ही निर्णय लिया जाएगा। रोहित और कोहली की वापसी भारतीय क्रिकेट के लिए महत्वपूर्ण होगी, लेकिन हर कदम पर उनका मूल्यांकन संतुलित तरीके से किया जाएगा।

डेनमार्क ओपन 2025 : सत्विकसैराज-चिराग सेमीफाइनल में, लक्ष्य सेन हुए बाहर

स्पोर्ट्स डेस्क। डेनमार्क ओपन सुपर 750 बैडमिंटन टूर्नामेंट में भारत के स्टार पुरुष डबल्स खिलाड़ी सत्विकसैराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी ने सेमीफाइनल में प्रवेश किया, जबकि लक्ष्य सेन पुरुष सिंगल्स क्वार्टरफाइनल में सीधे सेटों में हार गए। सत्विक-चिराग की जोड़ी, जिन्होंने इस साल BWF वर्ल्ड चैंपियनशिप में कांस्य पदक जीता था, ने इंडोनेशिया की अनसीड जोड़ी मुहम्मद रियान आर्दियांतो और रहमत हिदायत को 21-15, 18-21, 21-16 से हराकर 65 मिनट तक चले कड़े क्वार्टरफाइनल में जीत हासिल की। भारतीय जोड़ी अब अगले क्वार्टरफाइनल के विजेता का सामना करेगी, जिसमें आठवीं सीड चीन की चेन बो यांग और यी लियू या जापान के ताकुरो होकी और युगो कोबायाशी की जोड़ी होगी। सत्विक-चिराग की जोड़ी ने अपनी शुरुआती दो राउंड में स्कॉटलैंड के क्रिस्टोफर और मैथ्यू ग्रिमले और चीनी ताइपे की ली जे-हुई और यांग पो-ह्सुआन की जोड़ी को हराया था। वहीं, लक्ष्य सेन जिन्होंने गुरुवार को विश्व नंबर दो और स्थानीय पसंद एंडर्स एंटोनसेन को सीधे सेटों में हराकर चौंकाया था, शुक्रवार को सातवीं सीड फ्रांसीसी खिलाड़ी एलेक्स लानियर से 9-21, 14-21 से 44 मिनट में हार गए। पहला सेट फ्रांसीसी खिलाड़ी की पूरी पकड़ वाला रहा, जिन्होंने लगातार पांच पॉइंट लेकर 8-2 की बढ़त बनाई, जबकि लक्ष्य नेट पर संघर्ष करते नजर आए और कई अनफोर्स्ड एरर की। दूसरे सेट में लक्ष्य ने 3-1 की शुरुआती बढ़त बनाई, लेकिन फिर लानियर ने नौ लगातार पॉइंट लेकर 10-4 की बढ़त बनाई और आसानी से मैच अपने नाम कर लिया।

पाकिस्तान द्वारा किए गए हमले में अफगानिस्तान के तीन क्रिकेट खिलाड़ियों की मौत

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान ने फिर अफगानिस्तान पर एयरस्ट्राइक की, जिसमें तीन अफगान खिलाड़ियों की मौत हो गई। अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड (एसीबी) ने इसकी पुष्टि करते हुए पाकिस्तान के खिलाफ आगामी त्रिकोणीय सीरीज में हिस्सा न लेने का फैसला किया है। पाकिस्तानी हमले में जान गंवाने वाले तीनों खिलाड़ी क्लब लेवल के क्रिकेटर थे, जो मैच खत्म होने के बाद अरगुन लौट रहे थे। इस बीच बमबारी में उन्हें निशाना बनाया गया। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक एसीबी ने एक्स पर इसकी जानकारी देते हुए लिखा- अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड, पक्तिका प्रांत के उरगुन जिले के बहादुर क्रिकेटर्स की शहादत पर गहरा दुख व्यक्त करता है, जिन्हें पाकिस्तान की ओर से किए गए कायरतापूर्ण हमले में अपनी जान गंवानी पड़ी। इस हृदयविदारक घटना में उरगुन जिले के तीन खिलाड़ी कबीर, सिबगतुल्लाह, हारून और उनके साथ पांच अन्य देशवासी शहीद हुए हैं, जबकि सात घायल हुए हैं। ये खिलाड़ी इससे पहले एक मैत्रीपूर्ण क्रिकेट मैच में खेलने पक्तिका प्रांत की राजधानी शाराना गए थे। उरगुन लौटने के बाद उन्हें निशाना बनाया गया। पाकिस्तान, श्रीलंका और अफगानिस्तान के बीच 17 नवंबर से त्रिकोणीय टी20 सीरीज खेली जानी है, लेकिन पाकिस्तान के साथ सैन्य संघर्ष के बीच एसीबी ने इस सीरीज से हटने का फैसला किया है। बोर्ड ने लिखा- एसीबी इसे अफगानिस्तान के खेल समुदाय, उसके एथलीट्स और क्रिकेट परिवार के लिए बड़ी क्षति मानता है। एसीबी शहीदों के शोक संतप्त परिवारों और पक्तिका प्रांत के लोगों के प्रति गहरी संवेदना और एकजुटता व्यक्त करता है। इस दुखद घटना के बाद और पीड़ितों के प्रति सम्मान जताते हुए, बोर्ड ने नवंबर के अंत में होने वाली पाकिस्तान की आगामी त्रिकोणीय टी20 सीरीज में हिस्सा न लेने का फैसला लिया। इस घटना पर अफगानिस्तान के स्टार क्रिकेटर राशिद खान ने दुख जताते हुए एक्स पर लिखा- अफगानिस्तान पर हाल ही में हुए पाकिस्तानी हवाई हमलों में नागरिकों की जान जाने से मुझे गहरा दुख पहुंचा है। यह एक ऐसी त्रासदी है जिसमें महिलाओं, बच्चों और उन महत्वाकांक्षी युवा क्रिकेटर्स की जान गई, जो वैश्विक मंच पर अपने देश का प्रतिनिधित्व करने का सपना देख रहे थे।

मैग्नस कार्लसन ने दी टोटल वर्ल्ड चेस चैम्पियनशिप को हरी झंडी, शतरंज में होगा नया फॉर्मेट शुरू

स्पोर्ट्स डेस्क। नॉर्वे के पांच बार के विश्व शतरंज चैंपियन मैग्नस कार्लसन ने टोटल वर्ल्ड चेस चैम्पियनशिप को अपना समर्थन दिया है, जो शतरंज की दुनिया में अलग-अलग समय नियंत्रणों को मिलाकर आयोजित की जाएगी। हालांकि इस नए फॉर्मेट की योजना की कुछ शीर्ष खिलाड़ियों द्वारा आलोचना की गई है, कार्लसन ने इसे 'शतरंज के विकास की दिशा में सोच-समझकर उठाया गया कदम' बताया।

नया फॉर्मेट : तीन समय नियंत्रण

यह चैम्पियनशिप तीन अलग-अलग समय नियंत्रणों में आयोजित होगी: फास्ट क्लासिकल- 45 मिनट प्रति खिलाड़ी + 30 सेकंड इंक्रीमेंट, जो स्त्रद्धष्ठश्च के नियमों के तहत क्लासिकल रेटेड गेम में गिने जाएंगे।

रैपिड ब्लिट्ज़ कार्लसन के अनुसार, 'कई फॉर्मेट को एक ही खिताब के तहत लाने से खिलाड़ियों की क्षमताओं का व्यापक मूल्यांकन होगा। यह नए समय नियंत्रण आज के खिलाड़ियों और दर्शकों के अनुकूल हैं।'

पायलट और पहले सीजन की तैयारी

कार्लसन ने कहा कि वह 2026 के पायलट टूर्नामेंट के लिए उत्साहित हैं और देखना चाहते हैं कि पहला सीजन 2027 में कैसे सामने आता है। उन्होंने नॉर्वे शतरंज की तारीफ करते हुए कहा, 'यह प्रभावशाली है कि नॉर्वे शतरंज ने इसे संभव बनाया।'

जैनिक सिनर के सामने जोकोविच का मास्टरप्लान फेल, सेमीफाइनल में हुआ एकतरफा मुकाबला

स्पोर्ट्स डेस्क। नोवाक जोकोविच और जैनिक सिनर के बीच सिक्स किंग्स स्लैम 2025 के सेमीफाइनल मुकाबले में जोकोविच की रणनीति पूरी तरह ध्वस्त हो गई। सेर्बियाई स्टार, जो अपनी टैक्टिकल ब्रिलियंस और मानसिक मजबूती के लिए जाने जाते हैं, मैच को लंबा खींचकर सिनर की सहनशक्ति को आजमाने की योजना लेकर आए थे। लेकिन इतालवी खिलाड़ी ने केवल एक घंटे से थोड़ी अधिक में सीधे सेटों में 6-4, 6-2 से उन्हें हराकर योजना को धराशायी कर दिया।

एक योजना जो नहीं बन सकी

हार के बाद जोकोविच ने ईमानदारी से स्वीकार किया कि उनका मास्टरप्लान सिनर को लंबा और शारीरिक मुकाबला खेलने के लिए प्रेरित करने का पूरी तरह फेल हो गया। 24 बार के ग्रैंड स्लैम चैंपियन ने कहा, 'मैंने कम से कम लंबे मैच की कोशिश की, लेकिन इतालवी खिलाड़ी के स्तर के सामने यह असंभव था।'

जैनिक सिनर अब जोकोविच के खिलाफ बढ़ती श्रेष्ठता दिखा रहे हैं। उनका हेड-टू-हेड रिकॉर्ड अब 6-4 सिन्नर के पक्ष में है, जिसमें उन्होंने पिछले पांच आधिकारिक मुकाबले जीते हैं। इसके अलावा, जोकोविच ने सिन्नर से 2024 और 2025 के सिक्स किंग्स स्लैम प्रदर्शनी मुकाबलों में भी हार झेली है।

जोकोविच का हल्का-फुल्का रुख

हार के बावजूद जोकोविच ने अपनी खेल भावना और हास्य दिखाया। रियाद के दर्शकों के सामने उन्होंने मजाक किया: 'मुझे खेद है कि आप आज लंबा मैच नहीं देख सके, यह उसकी गलती है, मेरी नहीं!' उन्होंने सिनर की अविरल ऊर्जा की तारीफ की और बताया कि आखिरी गेम में 0-15 पर उन्हें डराने की कोशिश भी असफल रही। 'मैं बस टिके रहने की कोशिश कर रहा था, लेकिन वह बहुत अच्छे थे। उन्हें बधाई और फाइनल में शुभकामनाएं।'

हार के बावजूद जोकोविच ने अपने खेल और स्थान का संतुलित मूल्यांकन किया, 'भले ही किसी ने कोर्ट पर आपको इस तरह हराया हो, लेकिन यह अद्भुत है कि मैं अभी भी उच्च स्तर पर खेल पा रहा हूँ, टॉप 10 और टॉप 5 में।'

इस हार ने जोकोविच को सिनर की तेजी से बढ़ती क्षमता का एहसास दिलाया और उन्हें अपनी रणनीति पर पुनर्विचार करने की चुनौती दी। वहीं, सिन्नर की जीत ने उन्हें टेनिस की अगली प्रमुख ताकत के रूप में मजबूत किया।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

बेंगलुरु में फैमिली संग बनाएं यादगार वीकेंड

बेंगलुरू में वीकेंड पर कुछ जगहें ऐसी हैं, जहां पर भीड़ बहुत ज्यादा रहती है। इन जगहों पर अच्छी खासी चहल-पहल होती है। ऐसे में लोग अपने परिवार के साथ इन जगहों पर घूमने के लिए निकल जाते हैं। बारिश के मौसम में इन जगहों का नजारा बेहद खूबसूरत हो जाता है। ऐसे में इस बार के वीकेंड पर अगर आप भी अपने दोस्तों, फैमिली या वाइफ के साथ इन जगहों पर घूमने के लिए जा सकते हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बेंगलुरु की कुछ संडे स्पेशल जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं, जहां पर आप अपनी फैमिली के साथ क्वालिटी टाइम बिता सकते हैं।

उल्सूर झील

उल्सूर झील एम.जी. रोड के पास है। यह झील मात्र 2 किमी की दूरी पर है और यहां तक पहुंचने के लिए आपको करीब 10 मिनट का समय लगेगा। यह झील सुबह 6 बजे से रात 8 बजे तक खुला रहता है।

उल्सूर झील पुरानी और खूबसूरत झीलों में से एक है। यह

झील 50 हेक्टेयर के क्षेत्र में फैली है। बारिश के मौसम में यहां पर लोगों को आना अधिक पसंद होता है। क्योंकि इस दौरान यहां पर हरा-भरा वातावरण और बोटिंग लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है। यह जगह बैंगलुरु के पास बेस्ट कपल स्पॉट माना जाता है।

वी आर बेंगलुरु मॉल

आप संडे का समय बिताने के लिए बेंगलुरु के वी आर बेंगलुरु मॉल भी जा सकते हैं। इस मॉल को शहर का सबसे बेस्ट और मॉर्डन मॉल्स में से एक माना जाता है। यहां पर पूरे सप्ताह लोगों की भीड़ होती है। रविवार को यहां पर सबसे ज्यादा चहल-पहल होती है।

प्रीमियम सुविधाओं और बेहतरीन ब्रांड्स के अलावा आपको मॉल के बाहर तरह-तरह के स्टॉल्स देखने को मिल जाएंगे। यहां पर आप सस्ते में खाने-पीने का सामान ले सकती हैं। फ्रेंड्स, फैमिली और कपल्स के लिए यह जगह फेवरेट हैंगआउट स्पॉट है। इस मॉल में बैठने की अच्छी जगह है और आप यहां पर समय बिता सकती हैं। वी आर बेंगलुरु मॉल सुबह 9 बजे से रात के 11 बजे तक खुला रहता है। यह मॉल व्हाइटफील्ड मेन रोड, देवसंद्रा इंडस्ट्रियल एस्टेट, महादेवपुर, बेंगलुरु में है।

लालबाग बॉटनिकल गार्डन

बता दें कि यह जगह परिवार के साथ घूमने के लिहाज से काफी अच्छी मानी जाती है। यही वजह है कि रविवार को यहां पर सबसे ज्यादा भीड़ देखने को मिलती है। वहीं लालबाग बॉटनिकल गार्डन में साल में 2 बार फूलों की भव्य प्रदर्शनी भी लगती है। वहीं 26 जनवरी और 15 अगस्त को यहां पर सबसे ज्यादा लोग आते हैं। यह गार्डन मावली बेंगलुरु में है। यह गार्डन सुबह 7 बजे से रात के 10 बजे तक खुला रहता है और यह बेंगलुरु की रोमांटिक जगहों में से एक है।

पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक, देश में अलग-अलग अंदाज में मनाया जाता है दीपावली का त्योहार

दीपावली का त्योहार भारत की सांस्कृतिक विरासत का एक अहम हिस्सा है। हालांकि, रोशनी का यह त्योहार देश के हर हिस्से में एक ही तरह से नहीं मनाया जाता। इस आर्टिकल में हम आपको दीवाली की उन विभिन्न परंपराओं से रूबरू कराएंगे जो भारत के अलग-अलग राज्यों में प्रचलित हैं। साथ ही, हम आपको कुछ ऐसे रोचक तथ्यों के बारे में भी बताएंगे जो दीपावली के इतिहास और महत्व को और गहरा बनाने का काम करते हैं। आइए जानें।

उत्तर भारत की दीपावली

उत्तर भारत में दीवाली को भगवान राम के अयोध्या वापसी के स्वागत में मनाया जाता है। लोग अपने घरों को दीयों और रंगोली से सजाते हैं, नए कपड़े पहनते हैं और मिठाइयां बांटते हैं। दीवाली की रात को, लोग देवी लक्ष्मी की पूजा-अर्चना करते हैं और धन की देवी से आशीर्वाद मांगते हैं।

पश्चिम भारत की दीपावली

पश्चिम भारत की बात करें, तो खासतौर से गुजरात में दीवाली को नए साल के रूप में मनाया जाता है। इस दौरान लोग अपने घरों को साफ करते हैं, नए कपड़े खरीदते हैं और नए साल का स्वागत करते हैं। गुजरात में, दीवाली के दौरान पतंग उड़ाना एक लोकप्रिय परंपरा बनी हुई है।

दक्षिण भारत की दीपावली

दक्षिण भारत में दीवाली को थोड़ा अलग तरीके से मनाया जाता है। तमिलनाडु में, दीवाली को नरक चतुर्दशी के रूप में मनाया जाता है, जो भगवान कृष्ण द्वारा नरकासुर राक्षस का वध करने का प्रतीक है। कर्नाटक में, दीवाली को बाली चतुर्दशी के रूप में मनाया जाता है, जो भगवान विष्णु द्वारा बाली राक्षस का वध करने का प्रतीक है।

पूर्वी भारत में दीपावली

पूर्वी भारत, विशेषकर बंगाल में दीवाली का त्योहार काली पूजा के साथ अत्यंत धूमधाम से मनाया जाता है। यह पर्व केवल प्रकाश का त्योहार ही नहीं, बल्कि शक्ति और विनाश की देवी, मां काली की आराधना का पावन अवसर भी है। माना जाता है कि देवी काली बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक हैं। बता दें, काली पूजा बंगाली संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। यह त्योहार लोगों को एकजुट करता है और सामाजिक बंधनों को मजबूत भी बनाता है।

अलग-अलग राज्यों का अपना-अपना अंदाज

भारत के अन्य हिस्सों में भी दीवाली को अलग-अलग तरीकों से मनाया जाता है। उदाहरण के लिए, गोवा में, दीवाली को दीपावली के रूप में मनाया जाता है, जो प्रकाश का त्योहार है। पंजाब में, दीवाली को बंदी छोर दिवस के रूप में मनाया जाता है, जो सिखों के छठे गुरु, गुरु हरगोबिंद साहिब की मुक्ति का दिन है।

दीवाली की विविधता भारत की विविधता का ही प्रतिबिंब है। भारत के विभिन्न राज्यों में, दीवाली को अलग-अलग तरीकों से मनाया जाता है, लेकिन सभी जगहों पर दीवाली का मूल अर्थ एक ही है- बुराई पर अच्छाई की जीत, अंधेरे पर प्रकाश की जीत। बता दें, दीवाली केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि यह भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न हिस्सा है। दीवाली हमें एक-दूसरे के साथ जुड़ने, प्यार और खुशी बांटने और नए साल की शुरुआत करने का मौका देती है।

इस दौरान, लोग एक-दूसरे को मिठाइयां खिलाते हैं, पटाखे फोड़ते हैं और उपहार भी देते हैं। दीवाली की रात को, लोग एक-दूसरे के घरों में जाते हैं और शुभकामनाएं देते हैं। दीवाली एक ऐसा त्योहार है जो सभी धर्मों और जातियों के लोगों द्वारा मनाया जाता है। यह त्योहार हमें सिखाता है कि बुराई पर अच्छाई की हमेशा जीत होती है और अंधेरे में भी उम्मीद की किरण हमेशा जलती रहती है।

दीवाली के दिन इस खास वजह से बनाई जाती है जिमीकंद की सब्जी

दीवाली का त्योहार आने में अब कुछ ही दिन बाकी है। रोशनी का यह पर्व हर साल पूरे देश में धूमधाम से मनाया जाता है। इस साल यह त्योहार 31 अक्टूबर को मनाया जाएगा। दीयों और मोमबत्तियां की रोशनी से जगमगाता यह यह पर्व अंधकार में रोशनी की तरह जगमगाने की प्रेरणा देता है। इस दौरान लोग अक्सर अपने घरों की साज-सज्जा करते हैं और ढेर सारे पकवान भी बनाते हैं, लेकिन दीवाली का यह पर्व सिर्फ मोमबत्तियां, दीयों और मिठाइयों तक ही सीमित नहीं है। इस दौरान कई रीति-रिवाज और परंपराएं भी निभाई जाती हैं।

इन्हीं परंपरा में से एक है दीवाली के दिन सूरन यानी जिमीकंद की सब्जी बनाना। इस दिन कई घरों में खास तौर पर जिमीकंद की सब्जी बनाई जाती है। ऐसे में आज इस आर्टिकल में हम आपको बताएंगे कि दीवाली के दिन इस सब्जी को बनाने का क्या महत्व है और उसके पीछे का कारण क्या है।

क्यों बनाई जाती है जिमीकंद की सब्जी?

जिमीकंद जिसे ओल, सूरन या हाथी पैर रतालू के नाम से भी जाना जाता है, दीवाली के मौके पर खासतौर से बनाई जाती है। इसे बनाने की यह परंपरा मुख्य रूप से पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में निभाई जाती है। इस परंपरा का पालन ज्यादातर कायस्थ और ब्राह्मण समुदाय के लोग करते हैं। दरअसल, एक मान्यता है कि दीवाली पर इस सब्जी को बनाना शुभ होता है और इससे घर परिवार में खुशहाली आती है।

समृद्धि का प्रतीक है जिमीकंद

दीवाली के दिन इस सब्जी को बनाना इसलिए भी महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि इस जड़ वाले सब्जी को समृद्धि का संकेत माना जाता है। दरअसल, जिमीकंद की कटाई के बाद अगर इसका कुछ हिस्सा मिट्टी में रह जाए, तो उससे दूसरा जिमीकंद उग जाता है, जिसे समृद्धि का सूचक मानते हैं।

साथ ही यह भी माना जाता है कि यह सब्जी कभी खराब नहीं होती। ऐसे में दीवाली के दिन इस सब्जी को बनाकर मां लक्ष्मी को भोग लगाया जाता है और उनसे प्रार्थना की जाती है कि जिस तरह जिमीकंद कभी खराब नहीं होता और हमेशा फलता-फूलता है, उसी तरह उनके घर में भी खूब तरक्की और समृद्धि आए।

जिमीकंद के फायदे

रीति-रिवाज और परंपरा के अलावा जिमीकंद वैज्ञानिक सृष्टि से भी काफी महत्वपूर्ण होता है। यह सेहत के लिए काफी फायदेमंद माना जाता है। एंटी-ऑक्सीडेंट से भरपूर होने की वजह से इम्युनिटी बढ़ाने में मदद करता है। साथ ही इसमें मौजूद ढेर सारे विटामिन, मिनरल, फैट, प्रोटीन, पोटेशियम और घुलनशील फाइबर कई तरह की समस्याओं से बचाव करते हैं। इसके अलावा सूरन हाई ब्लड प्रेशर कम करने में भी मदद करता है।

कम समय और कम बजट में भी चमचमाएगा आपका घर, बस इस तरह से कर लें सजावट

आज के समय लोग अपने घर के इंटीरियर को सजाने के लिए तरह-तरह के उपयोग करते रहते हैं। वहीं, कुछ लोग अपने घर के अंदर नए-नए फर्नीचर को मार्केट से लेकर आते हैं तो कई लोग घर के दीवारों पर तरह-तरह की पेंटिंग लगाते हैं। ऐसे में अगर आप भी अपने घर के इंटीरियर को सजाने का प्लान कर रहे हैं तो हम आपके लिए कुछ बेहतरीन टिप्स लेकर आए हैं। इस टिप्स की मदद से आप अपने घर को कम बजट और एकदम कम समय में भी आसानी से सजा सकते हैं।

पुरानी चीजों से घर को दें नया लुक

आप अपने घर को पूराने चीजों की मदद से भी सजा सकते हैं। इसमें आपको मामूली खर्च करने पड़ेंगे। आप घर में पड़ी पुरानी बोतलें, डिब्बे या फिर जार को सही से कलर कर लें और आप इसको सजावट के रूप में प्रयोग कर सकते हैं। आप पुरानी साड़ियों या फिर कपड़ों को भी होम डेकोरेशन के तौर पर इस्तेमाल कर सकती हैं।

दीवारों की सजावट कैसे करें?

आप अपने घर की दीवारों को सजा सकते हैं, इससे आपके इंटीरियर का लुक काफी बेहतर आएगा। आप दीवारों को पेंट करा सकते हैं या फिर आप इस पर पेंटिंग्स या फोटोज भी लगा सकते हैं। आप इसको मार्केट से आसानी से खरीद सकते हैं। आप दीवारों को सजाने के लिए वॉलपेपर का भी उपयोग कर सकते हैं। यह सस्ता होने के साथ-साथ लगाने में भी काफी आसान होता है।

घर के अंदर लगाएं सजावटी पौधे

घर को सजाने के लिए आप सजावटी पौधे का उपयोग कर सकते हैं। आप इसके लिए प्राकृतिक पौधों का ही उपयोग करें, जो अंदर की हवा को भी साफ करने में मदद करेंगे। आप इन पौधों को हैंग भी कर सकते हैं या फिर जमीन पर भी सीधे गमले में रख सकते हैं।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

अंधकार से प्रकाश, अहंकार से विनम्रता

और नरक से मुक्ति का आध्यात्मिक पर्व

(लेखक - एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं/)

छोटी दिवाली या नरक चतुर्दशी 19 अक्टूबर 2025)

वैश्विक स्तरपर भारत की सांस्कृतिक औरधार्मिक परंपराएँ विश्वभर में अपनी गहराई, आध्यात्मिकता और मानवता के संदेश के लिए जानी जाती हैं। दीपावली का पंचदिवसीय महापर्व केवल एक उत्सव नहीं बल्कि मानव जीवन के आत्मिक उत्थान का प्रतीक माना जाता है।इस पंचदिवसीय श्रृंखला का दूसरा दिन 'छोटी दिवाली' या 'नरक चतुर्दशी' कहलाता है।वर्ष 2025 में यह पावन दिवस 19 अक्टूबर को मनाया जाएगा। इस दिन का महत्व केवल दीप प्रज्ज्वलन तक सीमित नहीं, बल्कि यह मानव जीवन के भीतर बसे अंधकार,नकारात्मकता और अहंकार को मिटाने का प्रतीकात्मक संदेश देता है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि यह पर्व भारत ही नहीं,बल्कि विश्वभर में बसे भारतवंशियों के बीच भी समान श्रद्धा और उल्लास से मनाया जाता है। छोटी दिवाली केवल एक दिन का उत्सव नहीं, बल्कि यह मानवता के भीतर छिपे अंधकार,जैसे अहंकार, लोभ, ईर्ष्या, क्रोध और मोह,पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है।चूँकि हमें अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण से जानना कि आखिर छोटी दिवाली को नरक चतुर्दशी क्यों कहा जाता है, इस दिन किसकी पूजा की जाती है और यह पर्व क्यों मनाया जाता है?

साथियों बात अगर हम छोटी दिवाली को नरक चतुर्दशी क्यों कहा जाता है,इसको जानने की करें तो अधर्म,अहंकार और अंधकार पर धर्म,नम्रता और प्रकाश की विजय का प्रतीक हैं,छोटी दिवाली का नाम÷नरक चतुर्दशी÷इसलिए पड़ा क्योंकि यह दिन भगवान श्रीकृष्ण द्वारा राक्षस नरकासुर के वध से जुड़ा हुआ है।हिंदूधर्मग्रंथों के अनुसार, नरकासुर नामक असुर ने अत्याचार और अधर्म का साम्राज्य स्थापित कर रखा था। उसने पृथ्वी और स्वर्ग दोनों लोकों को आतंकित कर रखा था। नारी की अस्मिता का अपमान, साधुओं का अपमान और दैवीय शक्तियों को चुनौती देना उसका स्वभाव बन गया था। अंततः भगवान विष्णु ने श्रीकृष्ण अवतार में,अपनी पत्नी सत्यभामा के साथ मिलकर उसका अंत किया।कहा जाता है कि जब नरकासुर का वध हुआ, तो उसने अंतिम समय में श्रीकृष्ण से वरदान मांगा कि उसकी मृत्यु के दिन जो लोग स्नान और दीपदान करें, उन्हें नरक का भय न रहे। भगवान श्रीकृष्ण ने यह वरदान स्वीकार किया।तभी से यह दिन 'नरक चतुर्दश' के नाम से प्रसिद्ध हुआ, जिसका अर्थ है,वह चतुर्दशी जो नरक से मुक्ति का मार्ग दिखाए।छोटी दिवाली इसीलिए कही जाती है क्योंकि यह मुख्य दिवाली के एक दिन पहले आती है, और इसमें दीप जलाने की परंपरा आरंभ हो जाती है। परंतु इसके पीछे का भाव कहीं अधिक गहरा है,यह दिन हमें सिखाता है कि असली नरक बाहर नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर छिपे अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष और असत्य के रूप में है। जब हम इनसे मुक्त होते हैं, तब सच्ची 'छोटी दिवाली' हमारे जीवन में आती है-जब हम अपने भीतर के अंधकार को सटीक दूर कर आत्मिक प्रकाश जलाते हैं आधुनिक वैश्विक संदर्भ में यदि देखें तो 'नरक चतुर्दशी' एक सार्वभौमिक संदेश देती है कि प्रत्येक व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के भीतर जो अंधकार,अन्याय, हिंसा, लालच और भेदभाव,फैला हुआ है,उसे सत्य, सद्भाव और प्रकाश से मिटाना ही सच्चा उत्सव है। यह दिन हर व्यक्ति को यह याद दिलाता है कि नरकासुर जैसी प्रवृत्तियाँ हर युग में मौजूद रहती हैं,बस उनके रूप बदलते रहते हैं। आज का नरकासुर पर्यावरण प्रदूषण,लालच आधारित अर्थव्यवस्था, असमानता, और मानसिक तनाव के रूप में हमारे जीवन को घेर रहा है। इसलिए छोटी दिवाली का संदेश आधुनिक समय में पहले से भी अधिक प्रासंगिक है।

साथियों बात अगर हम नरक चतुर्दशी के दिन किसकी पूजा की जाती है, इसको समझने की करें तो,नरक चतुर्दशी के दिन तीन प्रमुख देवताओं की पूजा की परंपरा है,यमराज,भगवान श्रीकृष्ण,और देवी लक्ष्मी।(क)यमराज पूजा-इस दिन यमराज की पूजा का विशेष महत्व है। पौराणिक मान्यता के अनुसार जो व्यक्ति नरक चतुर्दशी के दिन सूर्योदय से पहले स्नान कर यमराज को दीपदान करता है, उसे मृत्यु का भय नहीं सताता और उसे यमलोक का दर्शन नहीं करना पड़ता। इसे 'यम दीपदान' कहा जाता है।घर के बाहरदक्षिण दिशा में एक दीप जलाकर कहा जाता है,मृत्युना पाशदण्डाभ्यां कालिना श्यामया सह। त्रयोदश्यां दीपदानात् सूर्यजः प्रीयतां मम ॥ इसका अर्थ है कि इस दीप के माध्यम से मैं यमराज को प्रसन्न कर उनसे दीर्घायु और सुखमय जीवन की प्रार्थना करता हूँ।(ख) श्रीकृष्ण पूजा-भगवान श्रीकृष्ण ने इस दिन अधर्म पर विजय प्राप्त की थी, इसलिए उन्हें विजयी और धर्म के रक्षक के रूप में पूजा जाता है। भक्त उनके चरणों में पुष्प, फल और दीप अर्पित करते हैं। उनके साथ देवी सत्यभामा की भी पूजा की जाती है, क्योंकि नरकासुर के वध में देवी का योगदान महत्वपूर्ण रहा था। (ग) लक्ष्मी पूजा और रूप चौदस-इस दिन 'रूप चौदस' भी कहा जाता है। प्रातःकाल तेल स्नान, उबटन, और शुद्धिकरण के बाद सौंदर्य और स्वास्थ्य की देवी लक्ष्मी की पूजा की जाती है। माना जाता है कि जो व्यक्ति इस दिन स्नान और शुद्ध आचरण करता है, उसके शरीर और मन में दीर्घकालिक सकारात्मक ऊर्जा बनी रहती है।रूप चौदस के दिन स्त्रियाँ और पुरुष दोनों अपने रूप, स्वास्थ्य और आभा की रक्षा के लिए स्नान, तेल, चंदन और सुगंधित वस्तुओं का उपयोग करते हैं। यह न केवल धार्मिक बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है,क्योंकि यह शरीर से विषाक्त तत्वों को निकालने और त्वचा को स्वस्थ रखने का उपाय माना गया है।आधुनिक वैश्विक समाज में जहां 'वेलनेस' और 'मेंटल हेल्थ' की चर्चा प्रमुख हो गई है, नरक चतुर्दशी की यह परंपरा हमें यह बताती है कि आत्मिक और शारीरिक शुद्धता दोनों का संगम ही सच्चा स्वास्थ्य है।

साथियों बात अगर हम नरक चतुर्दशी क्यों मनाई जाती है इसको समझने की करें तो,आत्मशुद्धि, पाप मुक्ति और प्रकाश की ओर मानव यात्रा का उत्सव हैं,नरक चतुर्दशी का मुख्य उद्देश्य केवल उत्सव नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि और पापमुक्ति का मार्ग है। यह पर्व हमें यह स्मरण कराता है कि जीवन में हर मनुष्य से भूलें होती हैं, और उन भूलों से ऊपर उठने के लिए आत्मचिंतन, स्नान और दीपदान के माध्यम से हम भीतर का 'नरक' साफ कर सकते हैं।पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, जो व्यक्ति इस दिन सूर्योदय से पहले स्नान करता है, वह पापों से मुक्त होता है। इस स्नान को 'अभ्यंग स्नान' कहा जाता है। यह केवल शारीरिक शुद्धि नहीं,बल्कि मानसिक और भावनात्मक शुद्धि का भी प्रतीक है। कहा जाता है कि तेल से स्नान करने से शरीर से नकारात्मक ऊर्जा निकलती है, और मन में प्रकाश का प्रवेश होता है।नरक चतुर्दशी हमें यह सिखाती है कि हर व्यक्ति के भीतर दो शक्तियाँ होती हैं,एक अंधकारमय (नरकासुर जैसी) और दूसरी प्रकाशमय (कृष्ण जैसी)। इस दिन हम अपने भीतर की अंधकारमय प्रवृत्तियों,जैसे क्रोध, लोभ, द्वेष, असत्य, आलस्य और नकारात्मक विचारों का वध करने का संकल्प लेते हैं। जब व्यक्ति इस अंतर्द्वंद से ऊपर उठता है, तभी वह सच्चा 'प्रकाश'' प्राप्त करता है।आज जब पूरी दुनिया तनाव, असमाना,युद्ध औरआत्मकेंद्रित जीवनशैली से जूझ रही है, तब नरक चतुर्दशी जैसे पर्व वैश्विक समाज को यह प्रेरणा देते हैं कि आत्मशुद्धि, विनम्रता और प्रकाश की ओर बढ़ना ही मानवता का मार्ग है। यह केवल धार्मिक दिन नहीं बल्कि 'स्पिरिचुअल रीसेट डे' कहा जा सकता है,जब हम अपने भीतर के अंधकार को पहचानते हैं और उसे मिटाने का संकल्प लेते हैं।

साथियों बातें अगर हम छोटी दिवाली का सांस्कृतिक, सामाजिक और वैश्विक महत्व की करें तो,भारत में छोटी दिवाली का उत्सव केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है। यह सामाजिक एकता, पारिवारिक प्रेम और सामूहिक स्वच्छता का भी प्रतीक है। गाँवों और नगरों में लोग इस दिन अपने घरों की अंतिम सफाई करते हैं, मिट्टी के दीये जलाते हैं, और पड़ोसियों के साथ मिठाइयाँ बांटते हैं। यह पर्व समाज में 'साझा प्रकाश' का संदेश देता है कि अंधकार केवल अपने घर से नहीं, पूरी बस्ती से मिटाना चाहिए।अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में छोटी दिवाली का संदेश सार्व भौमिक है,यह केवल भारत की सीमाओं तक सीमित नहीं। आज अमेरिका,ब्रिटेन,कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों में बसे भारतीय समुदाय इस दिन न केवल दीप जलाते हैं बल्कि स्थानीय समाज को भी इसमें शामिल करते हैं। संयुक्त राष्ट्र, यूरोपियन संसद और कई अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ दीपावली को ÷ग्लोबल सेलिब्रेशन ऑफ़ लाइट ' के रूप में मान्यता दे चुकी हैं। ऐसी स्थिति में छोटी दिवाली का महत्व और भी बढ़ जाता है, क्योंकि यह मुख्य दीपावली से एक दिन पहले मानवता के भीतर के नरक को मिटाने की तैयारी का दिन है।नरक चतुर्दशी का गूढ़ अर्थ केवल पौराणिक कथा तक सीमित नहीं है।'नरक'का अर्थ है,मानसिक पीड़ा,अवसाद,लालच,और वह अंधकार जो मनुष्य के भीतर उसे असत्य के मार्ग पर ले जाता है। 'चतुर्दशी' का अर्थ है – पूर्णता के पूर्व की अवस्था, अर्थात् वह क्षण जब प्रकाश पूरी तरह प्रकट होने वाला है। इसलिए नरक चतुर्दशी का दिन आत्मिक परिवर्तन का समय है,जब मनुष्य अपने भीतर झाँककर कहता है 'अब मैं अंधकार से मुक्त होकर प्रकाश की ओर बढ़ूँगा।' यह आत्मसंवाद ही नरक चतुर्दशी का सार है। श्रीकृष्ण का नरकासुर वध केवल बाह्य घटना नहीं, बल्कि एक प्रतीक है,जब मनुष्य अपनी इच्छाओं और नकारात्मक प्रवृत्तियों पर विजय प्राप्त करता है, तब वह ÷नरकासुर÷का अंत करता है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि इस प्रकार छोटी दिवाली या नरक चतुर्दशी केवल दीपों का पर्व नहीं,बल्कि आत्मज्ञान, शुद्धि और अहंकार मुक्ति का दिन है। यह हमें सिखाती है कि असली उत्सव बाहर नहीं, भीतर मन में होता है। जब हम अपने भीतर के अंधकार को दूर करते हैं, तो पूरी दुनिया रोशन होती है।इस दिन किया गया दीपदान केवल घर के द्वार को नहीं, बल्कि आत्मा के द्वार को भी प्रकाशित करता है। यमराज की आराधना हमें मृत्यु का भय नहीं, बल्कि जीवन के प्रति सजगता सिखाती है। श्रीकृष्ण की पूजा हमें धर्म की रक्षा और अन्याय के अंत का संदेश देती है, जबकि लक्ष्मी पूजा हमें सिखाती है कि सौंदर्य केवल बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक पवित्रता में निहित है।छोटी दिवाली 2025 इसीलिए केवल एक तिथि नहीं, बल्कि मानवता को यह स्मरण कराने का अवसर है कि जब तक भीतर का अंधकार मिटेगा नहीं, तब तक बाहर के दीप अधूरे रहेंगे। यह पर्व विश्व के हर कोने में रहने वाले व्यक्ति के लिए एक प्रेरणा है,'हम अपने भीतर का नरकासुर समाप्त करें, तभी सच्ची दिवाली आएगी।'

(संकलनकर्ता लेखक - कर विशेषज्ञ स्तंभकार साहित्यकार अंतर्राष्ट्रीय लेखक चिंतक कवि सीए(एटीसी)

(यह लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अ निवार्य नहीं है)

गंगा-जमुनी तहज़ीब का प्रतीक का दीपावली

- हिन्दु त्यौहार ही बल्कि पूरे समाज का उत्सव

(लेखक- मुस्ताअली बोहरा)

दिवाली ना सिर्फ घर-आंगन को बल्कि हम हिन्दुस्तानियों के दिलों को भी रौशन करे यही दुआ है। यूं तो दिवाली मनाने के पीछे कई वजहें हैं और कई पौराणिक कथाएं हैं। जैसे जैसे साल गुजरते जा रहे हैं ये त्यौहार और भी भव्य-दिव्य होता जा रहा है। दीपावली का त्यौहार सदियों से मनाया जाता रहा है। स्कन्द, भविष्य तथा पद्म पुराण में दीपावली उत्सव का वर्णन है। ब्रह्म पुराण के अनुसार कार्तिक अमावस्या की इस अंधेरी रात्रि अर्थात अर्धरात्रि में महालक्ष्मी स्वयं भूलोक में आती हैं। इसके अलावा 7 वीं सदी में राजा हर्षवर्धन के नाटकों और 10वीं शताब्दी में राजशेखर के 'काव्यमीमांसा' में भी दीपोत्सव का उल्लेख मिलता है। 7 वीं शताब्दी के संस्कृत नाटक नागनंद में राजा हर्ष ने इसे दीपप्रति पादुत्सवः कहा है जिसमें दीये जलाये जाते थे और नव वर-बधू को उपहार दिए जाते थे। नौवीं शताब्दी में राजशेखर ने काव्य मीमांसा में इसे दीपमालिका कहा है। फारसी यात्री और इतिहासकार अल बेरुनी ने भारत पर अपने 11 वीं सदी के संस्मरण में, दीपावली को कार्तिक महीने में नये चंद्रमा के दिन पर हिंदुओं द्वारा मनाया जाने वाला त्यौहार कहा है। तुलसीदास रामचरितमानस में 'विज्ञानदीप' को प्रतीक स्वरूप प्रस्तुत किया। छांदोग्य उपनिषद के अनुसार प्रकृति का समस्त सर्वोत्तम प्रकाश रूप है। सूर्य प्रकृति का भाग हैं। कठोपनिषद मुंडकोपनिषद व श्वेताश्वतर उपनिषद में कहा गया है प्रकृति के केंद्र पर सूर्य प्रकाश नहीं, चंद्र किरणों का भी नहीं। न विद्युत है और न अग्नि, लेकिन उसी एक ज्योति केंद्र से यह सब प्रकाशित है। इसी तरह वृहदारण्यक उपनिषद में 'तमसो मा ज्योतिर्गमय, असतो मा सद्गमय यानी अंधकार से प्रकाश व असत से सत की ओर चलने का संदेश है। ऋग्वेद के अनुसार, 'जन-जन को प्रकाश से भरने के लिए ही अग्नि ने अमर सूर्य को आकाश में बिठाया है। लगभग 3500 वर्ष ईसा पूर्व कठोपनिषद में यम और नचिकेता के बीच प्रश्नोत्तरों की स्मृति को भी दीपपर्व से जोड़ा जाता है।

शायद इस बात पर आपको यकीन ही ना हो लेकिन यदि इतिहासकारों की मानें, तो आज जिस धूमधाम के साथ दिवाली का उत्सव पूरा देश मनाता है उसकी शुरुआत मुगल काल में हुई थी। किसी भी पर्व या त्यौहार का महत्व तब और बढ़ जाता है जब वह मजहबी सीमाओं से परे चला जाता है। देशभर में आज जिस धूमधाम से दिवाली मनाई जाती है, उसकी शुरुआत मुगलों के शासनकाल में हुई थी। मुगल काल में सामाजिक सदभाव और पूरी शिद्दत के साथ दिवाली मनाई जाती थी। शाहजहाँ से लेकर बहादुर शाह जफर तक, हर मुगल शासक ने दिवाली को एक ऐसे त्यौहार का स्वरूप दिया जो साम्प्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देता था। मुगल काल में दिवाली केवल हिंदू त्योहार न होकर संपूर्ण समाज का उत्सव तो था ही साम्प्रदायिक सद्भाव और सांस्कृतिक मिलन का प्रतीक भी था। मुहम्मद बिन तुगलक, जिन्होंने सन 1324 से 1351 तक दिल्ली पर शासन किया, अपने दरबार के अंदर हिंदू त्योहार मनाने वाले पहले सम्राट बने। मुगल काल में दिवाली को जश्न-ए-चरागाँ भी कहा जाता था। पूरा लाल किला दीपों से जगमगाता जाता था। शाहजहाँ ने दिल्ली में आकाश दीया जलाने की परंपरा शुरू की थी, चालीस गज उंचे खंभे पर दिया जलाया जाता था जिसे आकाश दीया कहा जाता था। इसकी रौशनी मीलों दूर तक दिखाई देती थी। ये दीया रातभर जल सके इसके लिए एक सैनिक की तैनाती की जाती थी, जो सीढ़ी की मदद से रातभर दीये को रोशन रखने के लिए तेल डालता था। बादशाह अक्सर सोने-चाँदी से तौले जाते और यह धन गरीबों में बाँट दिया जाता था। इतिहासकारों की मानें तो शाही तौर और भव्य रूप से दिवाली मनाने की शुरूआत बादशाह अकबर के ज़माने में आगरा में हुई थी। आगरा के किले और फतेहपुर सीकरी में दिवाली पर भव्य उत्सव देखने को मिलता था। मुगल बादशाह शाहजहां, अकबर के दौर में उत्सव की भव्यता देखने लायक होती थी, औरंगजेब के दौर में तोहफे भेजे जाते थे। राजपूत घराने से मुगल दरबार में तोहफे भेजे जाते थे। जोधपुर के राजा जसवंत सिंह और जयपुर के राजा जय सिंह के यहां से मुगलों को तोहफे भेजे जाने की परंपरा थी। जब देश की राजधानी दिल्ली स्थानांतरित हुई तो लाल किले में दिवाली का भव्य आयोजन शाहजहां के दौर में हुआ करता था। मोहम्मद शाह रंगीला के शासनकाल में दिवाली को रंगीला की दिवाली कहा जाता था। जहांगीर के शासनकाल में दिवाली के अलग ही रंग थे। किताब 'तुजुक-ए-जहांगीर' के मुताबिक साल 1613 से लेकर 1626 तक जहांगीर ने हर साल अजमेर में दिवाली मनाई। वे अजमेर के एक तालाब के चारों किनारों पर दीपक की जगह हजारों मशालें प्रज्वलित करवाते थे। इस मौके पर शहंशाह जहांगीर, अपने हिन्दू सिपहसालारों को कीमती नजराने भेंट करते थे। इसके बाद फकीरों को नए कपड़े, मिठाइयां बांटी जातीं। दीपावली पर 71 तोपें दागी जातीं और बारूद से बने बड़े-बड़े पटाखे चलाये जाते। अंतिम मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर के समय में भी दिवाली सामाजिक सदभाव के साथ मनाई जाती थी। 14वीं सदी में मुगल शासक मोहम्मद बिन तुगलक अपने अंतरमहल में दीवाली का जश्न मनाते थे। भव्य स्तर के भोज का आयोजन किया जाता था। हालांकि, उसके शासन काल में आतिशबाजी होने का जिक्र नहीं मिलता। 16वीं सदी के न्यायविद शेख अहमद सरहिंदी (1564-1624 ई.) ने अपनी किताब में मुस्लिम महिलाओं द्वारा दीवाली पर मिठाई और उपहार भेंट किए जाने का जिक्र किया है। 17वीं शताब्दी में भारत आने वाले फ्रांसीसी बहुभाषाविद जीन डे थेवेनोट ने दीवाली के भव्य उत्सव का वर्णन किया है। अबुल फजल ने आइन-ए-अकबरी में आकाश दीया या सूरजक्रांत का उपयोग करके आकाश का दीपक जलाने की अनूठी परंपरा का जिक्र किया है। दिवाली की शुरुआत शाही स्नान से होती थी, जिसके लिए सात पवित्र कुओं से पानी लाया जाता था और सम्राट को सुगंधित स्नान कराया जाता था। इस दौरान पंडित और मौलाना पवित्र भजन गाते थे। तब बादशाह मलमल के कपड़े पहनकर अपनी पत्नियों के हरम में जाता था। इसके बाद बादशाह दरबार पहुंचता था। यहां बादशाह अपने अधीनस्थों, मित्रों को दिवाली का नजराना या उपहार देता था।

अधर्म पर धर्म और असत्य पर सत्य की विजय के साथ ही सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व का त्यौहार है दीपावली। रामायण के अनुसार इस दिन जब भगवान राम, सीता जी और भाई लक्ष्मण के साथ 14 वर्ष का वनवास पूर्ण कर अयोध्या वापस लौटे थे। रावण वध और 14 साल का वनवास खत्म होने के बाद मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के अयोध्या वापस लौटने पर लोगों ने दीपमालिका सजाकर उनका स्वागत किया था। कार्तिक मास की अमावस्या तिथि को मां लक्ष्मी समुद्र मंथन द्वारा धरती पर प्रकट हुई थीं। इस पर्व को मां लक्ष्मी के स्वागत के रूप में मनाया जाता है। नरक चतुर्दशी को राक्षस नरकासुर पर विजय प्राप्त की थी। द्वापर युग में भगवान कृष्ण ने राक्षस नरकासुर का संहार किया था। इस नृशंस राक्षस के वध से खुश होकर लोगों ने घी के दीए जलाए। पांडवों के 12 वर्ष के निष्कासन के साथ साथ 1 वर्ष के अज्ञातवास से वापस घर आने के उपलक्ष्य में भी दीवाली मनाई जाती है। अश्विन महीने के कृष्ण पक्ष का अन्तिम दिन यानि दीवाली पर मारवाडी अपना नया साल मनाते हैं। गुजराती भी चन्द्र कैलेंडर (कार्तिक महीने में शुक्ल पक्ष के पहले दिन) के अनुसार दीवाली से एक दिन बाद अपना नया साल मनाते है। दीपावली को जैन धर्म में 527 ई.पू. महावीर स्वामी के मोक्ष या निर्वाण प्राप्ति के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। आर्य समाज के लोग इसे शारदीय नव-शयष्टी के रुप में मनाते है। दीप पर्व की देवी श्रीलक्ष्मी हैं। कहा जाता है कि उन्होंने इसी रात पति रूप में विष्णु का वरण किया। इसी दिन उज्जैन के सम्राट विक्रमादित्य का राजतिलक हुआ था। इसी दिन गुप्त वंशीय राजा चंद्रगुप्त विक्रमादित्य ने 'विक्रम संवत' की स्थापना की थी। अतः यह नए वर्ष का प्रथम दिन भी है। आज ही के दिन व्यापारी अपने बही-खाते बदलते हैं। मान्यता है कि इस दिन भगवान विष्णु ने राजा बलि को पाताल लोक का स्वामी बनाया था और इन्द्र ने स्वर्ग को सुरक्षित जानकर दीपावली मनाई थी। कहा जाता है कि भगवान विष्णु ने नरसिंह रूप धारणकर हिरण्यकश्यप का वध किया था। इसी दिन समुद्र मंथन के पश्चात धन्वंतरि प्रकट हुए। इसी दिन समुद्र मंथन के समय क्षीरसागर से लक्ष्मीजी प्रकट हुई थीं और भगवान विष्णु को अपना पति स्वीकार किया था। एक पौराणिक कथा के अनुसार इस दिन भगवान विष्णु ने वामन अवतार लेकर राजा बलि से माता लक्ष्मी को मुक्त करवाया था। इसी दिन आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती का निर्वाण हुआ था। स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा आर्य समाज की स्थापना भी इसी दिन की गई

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

संक्षिप्त समाचार

उरुग्वे : इच्छामृत्यु को अपराधमुक्त करने वाला कानून पारित?, क्या है बदलाव, 31 में से 20 सीनेटर ने किया पक्ष में मतदान

उरुग्वे , एजेंसी। उरुग्वे की सीनेट ने इच्छामृत्यु को अपराधमुक्त करने वाला कानून पारित कर दिया है जिससे यह दक्षिण अमेरिकी देश उन कुछ अन्य देशों में शामिल हो गया है जहां गंभीर रूप से बीमार मरीज अपना जीवन समाप्त करने के लिए कानूनी रूप से सहायता प्राप्त कर सकते हैं। बुधवार को उठाए गए इस कदम से उरुग्वे कैथोलिक बहुल लैटिन अमेरिका में कानून के तहत इच्छामृत्यु की अनुमति देने वाला पहला देश बन गया है। उरुग्वे में सत्तारूढ़ वामपंथी गठबंधन की सीनेटर पेट्रीसिया क्रेमर ने देश की राजधानी मोंटेवीडियो में सांसदों से कहा, ''जनमत हमें इस पर विचार करने के लिए कह रहा है।'' पिछले पांच साल से रुक-रुक कर आगे बढ़ते रहे इस कानून ने बुधवार को उस समय आखिरी बाधा पार कर ली जब संसद के उच्च सदन में 31 में से 20 सीनेटर ने इसके पक्ष में मतदान किया। निचले सदन ने अगस्त में इस विधेयक को भारी बहुमत से मंजूरी दे दी थी। चर्चा के दौरान सत्तारूढ़ 'ब्रॉड फ्रंट' गठबंधन के सांसदों ने इच्छामृत्यु के अधिकार का जोरदार बचाव किया। इसके लिए चलाए गए अभियान की तुलना तलाक एवं समलैंगिक विवाह की वैधता से की। अमेरिकी राज्यों, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में इच्छामृत्यु के लिए आवेदन करने का अधिकार केवल उन लोगों को दिया जाता है जिनके जीने की संभावना छह महीने या एक साल से अधिक नहीं है, लेकिन उरुग्वे में ऐसा नहीं है। ''असहनीय पीड़ा'' झेल रहे किसी भी लाइलाज बीमारी से पीड़ित व्यक्ति को इसके लिए आवेदन करने का अधिकार होगा। उरुग्वे में इच्छामृत्यु चाहने वालों के लिए मानसिक रूप से सक्षम होना आवश्यक है। बेल्जियम, कोलंबिया और नीदरलैंड के विपरीत उरुग्वे में नाबालिगों के लिए इच्छामृत्यु की अनुमति नहीं है।

फ्रांस : अविश्वास प्रस्ताव से बचे पीएम सेबेस्टियन लेकोर्नू

पेरिस, एजेंसी। फ्रांस के प्रधानमंत्री सेबेस्टियन लेकोर्नू बृहस्पतिवार को अविश्वास प्रस्ताव से बच गए। यह उनकी कमजोर नई सरकार को गिराकर फ्रांस को राजनीतिक अराजकता में और भी ज्यादा डुबो सकता था। इसी के साथ नेशनल असेंबली में लेकोर्नू की बड़ी चुनौती दूर हो गई।

भूकंप से दहला इंडोनेशिया का पापुआ, 6.7 तीव्रता दर्ज

जकार्ता, एजेंसी। इंडोनेशिया के पापुआ प्रांत में बृहस्पतिवार को 6.7 तीव्रता का भूकंप दर्ज किया गया। इसका केंद्र सतह से 70 किलोमीटर की गहराई में था। संयुक्त राज्य भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (यूएसजीएस) के अनुसार, भूकंप का केंद्र अबेपुरा शहर से लगभग 200 किलोमीटर दूर था, जिसकी आबादी 62,000 से ज्यादा है। प्रशांत सुनामी चेतावनी केंद्र ने बताया कि भूकंप के बाद सुनामी की कोई चेतावनी जारी नहीं की गई।

बांग्लादेश के विशेष दूत ने अमेरिका के भारत राजदूत सर्जियो गोर से की महत्वपूर्ण बैठक

ढाका, एजेंसी। बांग्लादेश के अंतरिम नेता मुहम्मद यूनुस के विशेष दूत लुत्फे सिद्दीकी ने बुधवार को व्हाइट हाउस के वेस्ट विंग में अमेरिका के दक्षिण और मध्य एशिया के विशेष दूत और भारत के लिए राजदूत-नामांकित सर्जियो गोर से उच्चस्तरीय बैठक की। बांग्लादेश के मुख्य सलाहकार के प्रेस विंग ने गुरुवार को बयान में कहा कि सिद्दीकी ने बैठक में उत्कृष्ट स्वागत और सार्थक चर्चा के लिए आभार व्यक्त किया। बैठक में दोनों पक्षों ने वाणिज्य और निवेश सहयोग, आर्थिक और प्रशासनिक सुधार, और श्रम बाजार विकास सहित कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर विचार-विमर्श किया। साल 1953 में एडमंड हिलेरी और तेनजिंग नोर्गे के साथ एवरेस्ट अभियान में शामिल अंतिम सदस्य कांचा शेरपा का 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

उरुग्वे में पारित हुआ इच्छामृत्यु को मंजूरी देने वाला कानून

मोंटेवीडियो, एजेंसी। उरुग्वे की सीनेट ने इच्छामृत्यु को अपराधमुक्त करने वाला कानून पारित कर दिया है। इस कानून के लागू होने से यह दक्षिण अमेरिकी देश उन कुछ देशों में शामिल हो गया, जहां गंभीर रोगी अपना जीवन खत्म करने को कानूनी मदद ले सकते हैं। इस कदम से उरुग्वे इच्छामृत्यु की मंजूरी देने वाला पहला देश बन गया है। बिल पास होने के बाद उरुग्वे में जश्न का माहौल रहा।

ह्यूस्टन के मेयर बोले-दिवाली उत्सव में आकर गर्व हुआ

ह्यूस्टन, एजेंसी। अमेरिका में सर्वाधिक भारतवंशी आबादी वाले क्षेत्रों में से एक ह्यूस्टन में भारतीय महावाणिज्य दूतावास ने दिवाली के मौके पर शहर से साझेदारी में एक कार्यक्रम किया। इसमें समुदाय के नेता, राजनयिक व भारतीय-अमेरिकी समुदाय के सदस्य एकत्रित हुए।

फ्रांस में सियासी संकट: बाल-बाल बची मैक्रों की सरकार, सदन में प्रधानमंत्री लेकोर्नु के खिलाफ दो अविश्वास प्रस्ताव गिरे

पेरिस, एजेंसी। फ्रांस का ताजा सियासी संकट फिलहाल टल गया है, क्योंकि प्रधानमंत्री सेबस्टियन लेकोर्नु गुरुवार को लगातार अविश्वास प्रस्तावों से बच गए। इससे सरकार गिरने का खतरा टल गया और राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों को कुछ समय के लिए राहत मिल गई। हालांकि, अब भी देश का बजट पारित कराना असली चुनौती है।

हालात में थोड़ी स्थिरता जरूर आई है। लेकिन संकट पूरी तरह टला नहीं है। यूरोप की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था अब भी एक अल्पमत वाली सरकार चला रही है। संसद में कोई एक पार्टी या गठबंधन बहुमत में नहीं है। अब हर बड़ा कानून आखिरी समय पर होने वाली सौदेबाजी पर निर्भर हो गया है और अगली बड़ी परीक्षा सालाना बजट पारित कराना है, जिसे साल खत्म होने से पहले पास करना जरूरी है।

संसद में ड्रामा : गुरुवार को 577 सीटों वाली नेशनल असेंबली में सांसदों ने वामपंथी पार्टी फ्रांस अनबोउड की ओर से लाए गए अविश्वास प्रस्ताव को खारिज कर दिया। प्रस्ताव के पक्ष में 271 वोट पड़े, जो सरकार गिराने के लिए जरूरी 289 वोटों से 18 कम थे। दूसरा अविश्वास प्रस्ताव दक्षिणपंथी पार्टी नेशनल रैली की ओर से लाया गया, जो विफल हो गया। अगर लेकोर्नू यह वोट हार जाते, तो राष्ट्रपति मैक्रों के सामने नए संसदीय चुनाव कराने, एक और नया प्रधानमंत्री खोजने (जो एक साल में फ्रांस का पांचवां प्रधानमंत्री होता) या खुद इस्तीफा देने जैसे कुछ ही

कठिन और अप्रिय विकल्प बचते, जिससे वह पहले ही इनकार कर चुके हैं।

फ्रांस इस स्थिति तक कैसे पहुंचा : जून 2024 में राष्ट्रपति मैक्रों द्वारा नेशनल असेंबली को भंग करने का फैसला उनके लिए उल्टा साबित हुआ। इसके बाद जो संसदीय चुनाव हुए, उसमें निचले सदन में मैक्रों के विरोधी नेता तो बड़ी संख्या में चुनकर आ गए, लेकिन किसी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला। तबसे मैक्रों की अल्पमत सरकार एक-एक विधेयक के लिए समर्थन जुटाने की कोशिश कर रही है और लगातार गिर जा रही है। यह स्थिति फ्रांस की पांचवीं गणराज्य की राजनीतिक व्यवस्था से मेल नहीं खाती है, जिसकी नींव 1958 में शार्ल द गॉल के नेतृत्व में रखी गई थी। यह व्यवस्था एक मजबूत राष्ट्रपति और स्थिर संसद के बहुमत के लिए बनाई गई थी, न कि गठबंधन की सौदेबाजी या बिखरी हुई संसद के लिए। अब जब कोई भी एक दल या गठबंधन 289 सीटों के पूर्ण बहुमत के करीब भी नहीं है, तो यह पूरी राजनीतिक व्यवस्था अपनी मूल संरचना के खिलाफ जाकर काम कर रही है। हर बड़ा वोट एक तनावपूर्ण मुकाबला बना रहा है और फ्रांस की शासन व्यवस्था को लेकर बुनियादी सवाल उठ रहे हैं। फ्रांसीसी मतदाताओं और पर्यवेक्षकों के लिए यह स्थिति चौंकाने वाली है। जो देश कभी यूरोप की स्थिरता का मॉडल माना जाता था, वह अब एक संकट से दूसरे संकट में फंसते चला जा रहा है।

पेंशन कानून बना अहम मुद्दा : विपक्षी दलों के कुछ सांसदों का समर्थन पाने के लिए प्रधानमंत्री लेकोर्नू ने राष्ट्रपति मैक्रों के 2023 के प्रमुख पेंशन कानून को धीरे-धीरे लागू करने का प्रस्ताव रखा। इस कानून के तहत सेवानिवृत्ति की उम्र 62 से बढ़ाकर 64 की जानी है। इस देरी से कानून के पूरी तरह लागू होने की समयसीमा लगभग दो साल आगे खिसक सकती है। इससे उन लोगों पर तुरंत असर नहीं पड़ेगा, जो अभी सेवानिवृत्ति के करीब हैं। सरकार का कहना है कि इस देरी से अगले साल करीब 400 मिलियन यूरो (430 मिलियन डॉलर) का अतिरिक्त खर्च आएगा और 2027 तक यह लागत बढ़कर 1.8 बिलियन यूरो (1.9 बिलियन डॉलर) हो सकती है। हालांकि, उन्होंने कहा है कि इन खर्चों की भरपाई के लिए अलग से प्रबंध किया जाएगा। फ्रांस में कई लोगों के लिए पेंशन का मुद्दा बहुत संवेदनशील है। 2023 के इस पेंशन कानून ने बड़े विरोध प्रदर्शनों और हड़तालों को जन्म दिया, जिससे पेरिस की सड़कों पर कचरे के ढेर लग गए। इसके बाद सरकार ने अनुच्छेद 49.3 का सहारा लिया, जो प्रधानमंत्री को बिना संसद के वोट के कानून पारित कराने का विशेष सांविधानिक अधिकार देता है। लेकिन इस कदम के खिलाफ विरोध और तेज हो गया। अगली बजट की चुनौती गुरुवार को अविश्वास प्रस्तावों के विफल होने के साथ ही मैक्रों की सरकार को थोड़ा वक्त मिल गया है। अब लड़ाई 2026 के बजट पर केंद्रित हो गई है, जिस पर चर्चा 24 अक्तूबर से शुरू होगी। लेकोर्नू ने वादा किया है कि वह बजट पारित कराने के लिए अनुच्छेद 49.3 का उपयोग नहीं करेंगे। यानी बिना वोट के कोई शॉर्टकट नहीं होगा। हर एक प्रावधान को संसद में समर्थन हासिल करना होगा, जबकि संसद अब विभाजित और कमजोर स्थिति में है। सरकार और उसके सहयोगी के पास 200 से भी कम सीटें हैं। बहुमत के लिए उन्हें विपक्ष का समर्थन चाहिए। इस गणित में सोशलिस्ट पार्टी (जिसके पास 69 सांसद हैं) और कंजरवेटिव रिपब्लिकन्स (जिनके पास 50 सांसद हैं) दोनों संभावित निर्णायक समूह बन जाते हैं।

पापुआ क्षेत्र में इंडोनेशियाई सेना और अलगाववादी समूह के बीच संघर्ष, एक गांव में 14 लोगों की मौत

जकार्ता, एजेंसी। इंडोनेशिया की सेना ने गुरुवार को कहा कि उसने पापुआ क्षेत्र के इंटान जाया जिले के सोआंगगामा गांव को फिर से अपने कब्जे में ले लिया। सेना का दावा है कि इस संघर्ष में 14 अलगाववादी मारे गए। हालांकि, अलगाववादियों ने यह दावा खारिज किया है और कहा कि मारे गए में केवल तीन ही लड़ाके थे, जबकि नौ आम नागरिकों की हत्या की गई। सेना के प्रवक्ता लेफ्टिनेंट कर्नल इवान द्वि प्रिहरतोनो ने बताया कि बुधवार सुबह दर्जनों अलगाववादी, जो हथियार और धनुष-बाण लेकर आए थे, ने सैनिकों पर हमला किया। सैनिक उस समय एक अलगाववादी पोस्ट पर कार्रवाई करने की तैयारी कर रहे थे। छह घंटे से अधिक समय तक चला संघर्ष प्रिहरतोनो के अनुसार, सैनिकों ने छह घंटे और 30 मिनट तक चली लड़ाई के बाद अलगाववादियों को खदेड़ दिया और गांव पर नियंत्रण कर लिया। उन्होंने बताया कि सैनिकों को किसी भी तरह के नुकसान का सामना नहीं करना पड़ा। सेना ने इस दौरान एक घरेलू राइफल, चार एयर राइफल, गोलियां, दूरबीन, संचार उपकरण और अलगाववादी संगठन का मॉर्निंग स्टार झंडा बरामद किया। उन्होंने कहा, बाकी अलगाववादी जंगल की ओर भाग गए और हमने उनका बेस कब्जे में ले लिया। अलगाववादियों ने सेना का दावा किया खारिज पश्चिम पापुआ लिबरेशन आर्मी (फ्री पापुआ ऑर्गेनाइजेशन का सैन्य हिस्सा) के प्रवक्ता सेबी सांबॉम ने सेना के दावे को खारिज किया। उन्होंने कहा कि गांव में कोई अलगाववादी बेस नहीं था और मारे गए 14 लोगों में से नौ आम नागरिक थे। उनका कहना था कि केवल तीन ही अलगाववादी थे। सांबॉम ने बताया कि सेना ने एक घर को घेर लिया और उसे अलगाववादी पोस्ट समझकर आठ लोगों की हत्या कर दी। उन्होंने कहा, हमारे पास युद्ध के नियम हैं, हम कभी भी किसी आवासीय इलाके में बेस नहीं बनाएंगे। पापुआ में हिंसा का इतिहास पापुआ में अलगाववादी आंदोलन 1960 के दशक से चल रहा है।

नेपाल सरकार ने भारत के साथ पारस्परिक कानूनी सहायता संधि को दी मंजूरी; सोनल मधेश के नए सीएम

काठमांडू, एजेंसी। नेपाल की अंतरिम सरकार ने गुरुवार को भारत के साथ आपसी कानूनी सहायता संधि को मंजूरी दे दी। इस संधि का उद्देश्य दोनों देशों के बीच आपराधिक मामलों में सहयोग को मजबूत बनाना है। यह फैसला प्रधानमंत्री सुशीला कार्की की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट बैठक में लिया गया। सूचना एवं प्रसारण मंत्री जगदीश खरेल ने बताया कि इस संधि के जरिए नेपाल न केवल भारत के साथ बल्कि अन्य देशों के साथ भी कानूनी मामलों में सहयोग बढ़ा सकेगा। प्रस्तावों को राजनयिक चैनलों के जरिए आगे भेजा जाएगा। कानूनी विशेषज्ञों के अनुसार, यह संधि ड्रग्स तस्करी, मानव तस्करी, नकली मुद्रा और अन्य सीमा पार अपराधों पर रोक लगाने में मदद करेगी। इसके अलावा अपराधियों के लिए भारत या नेपाल को सेफ जोन की तरह इस्तेमाल करना भी मुश्किल हो जाएगा। 11 नेपाली राजदूतों को वापस बुलाया गया नेपाल सरकार ने इस बैठक में एक और अहम निर्णय लिया; 11 देशों में तैनात अपने राजदूतों को वापस बुलाने का। इन देशों में चीन, जर्मनी, इस्राइल, मलेशिया, कतर, रूस, सऊदी अरब, स्पेन, ब्रिटेन, अमेरिका और जापान शामिल हैं। राजदूतों को 6 नवंबर तक नेपाल लौटने के निर्देश दिए गए हैं। इस कदम को नेपाल की विदेश नीति में बड़े फेरबदल के संकेत के रूप में देखा जा रहा है। नेपाल के मधेश प्रांत में जितेंद्र प्रसाद सोनल ने गुरुवार को मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। वे लोकतांत्रिक समाजवादी पार्टी (एलएसपी) के नेता हैं। सोनल को 107 में से 56 प्रांतीय विधानसभा सदस्यों का समर्थन मिला। जनकपुरधाम में आयोजित समारोह में प्रांत की प्रमुख सुमित्रा सुभेदी भंडारी ने उन्हें शपथ दिलाई। सोनल की सरकार को जनता समाजवादी पार्टी नेपाल, जनमत पार्टी, सीपीएन (माओवादी सेंटर) और सीपीएन (यूनिफाइड सोशलिस्ट) का समर्थन हासिल हुआ है। संविधान के अनुच्छेद 168 (2) के तहत सरकार का गठन किया गया। दो अन्य नेताओं, जनमत पार्टी के महेश प्रसाद यादव और सीपीएन (यूनिफाइड सोशलिस्ट) के कनीश पटेल, ने भी मंत्री पद की शपथ ली। फिलहाल उन्हें कोई विभाग नहीं दिया गया है।

राष्ट्रपति के खिलाफ भड़का जेन-जेड आंदोलन, एक की मौत और 100 घायल; इस्तीफे से जेरी ने किया इनकार

लीमा, एजेंसी। पेरू के नए राष्ट्रपति जोस जेरी ने इस्तीफा देने से इनकार कर दिया है, जबकि देश में उनके खिलाफ चल रहे हिंसक विरोध प्रदर्शनों में एक प्रदर्शनकारी की मौत हो गई और करीब 100 लोग घायल हो गए हैं। यह प्रदर्शन मुख्य रूप से जेन-जेड युवाओं के नेतृत्व में हुआ, जिन्होंने राष्ट्रपति से पद छोड़ने की मांग की थी।

अधिकारियों के अनुसार, घायलों में 80 पुलिसकर्मी और 10 पत्रकार शामिल हैं। जांच एजेंसियां उस गोलीबारी की जांच कर रही हैं, जिसमें एक प्रदर्शनकारी की मौत हुई। राष्ट्रपति जेरी ने संसद का दौरा करने के बाद स्थानीय मीडिया से कहा मेरा दायित्व देश की स्थिरता बनाए रखना है। यही मेरी जिम्मेदारी और प्रतिबद्धता है।

कैसे शुरू हुआ आंदोलन : लगभग एक महीने पहले शुरू हुआ यह विरोध बेहतर पेंशन और युवाओं के लिए नौकरी के अवसरों की मांग से शुरू हुआ था। धीरे-धीरे यह भ्रष्टाचार, अपराध और सरकार की विफलताओं के खिलाफ एक बड़े जनांदोलन में बदल गया। जेरी, जो पिछले 10 वर्षों में पेरू के सातवें राष्ट्रपति हैं, ने 10 अक्टूबर को शपथ ली थी। उनके पद संभालने के तुरंत बाद प्रदर्शन और तेज़ हो गए और युवाओं ने उनके साथ-साथ सांसदों से भी इस्तीफे की मांग शुरू कर दी।

प्रदर्शन में हिंसा और मौत : प्रदर्शन के दौरान 32 वर्षीय हिप-हॉप गायक एडुआर्डो रुइज की गोली लगने से मौत हो गई। अभियोजकों ने बताया कि उन्हें सिर में गोली मारी गई थी। सोशल मीडिया पर साझा किए गए वीडियो में रुइज को लीमा की सड़कों पर गिरते हुए देखा गया। गवाहों का कहना है कि गोली चलाने वाला व्यक्ति प्रदर्शनकारियों से बचने की कोशिश कर रहा था, क्योंकि उसे सादे कपड़ों में पुलिसकर्मी होने का संदेह था।

राष्ट्रीय लोकपाल कार्यालय के अनुसार, हिंसक झड़पों में 24 प्रदर्शनकारी और 80 पुलिसकर्मी घायल हुए। पत्रकारों पर भी हमला हुआ, जिनमें से छह को पैलेट्स से चोट लगी और चार अन्य पर पुलिस ने हमला किया।

विवादों में घिरे राष्ट्रपति जेरी : जोस जेरी ने हाल ही में अपदस्थ राष्ट्रपति डिना बोलुआर्ते की जगह ली थी, जो विरोध प्रदर्शनों को कुचलने और अपराध पर नियंत्रण में विफल रहने के कारण बेहद अलोकप्रिय थीं। 38 वर्षीय जेरी पहले संसद के अध्यक्ष थे। उनके प्रधानमंत्री एर्नेस्टो अल्वारेज एक अति-दक्षिणपंथी पूर्व न्यायाधीश हैं, जिन्होंने पहले जेन-जेड आंदोलन को अराजकता फैलाने वाला गिरोह बताया था। जेरी पर पहले भी विवाद रहे हैं, उन पर एक महिला ने यौन शोषण का आरोप लगाया था, हालांकि मामला अगस्त में खारिज कर दिया गया। प्रदर्शनकारियों ने इस मुद्दे को भी उठाया और सड़कों पर ÷द रेपिस्ट इज जेरी÷ जैसे नारे लगाए। जनता का गुस्सा क्यों फूटा विशेषज्ञों का कहना है कि पेरू में लोगों का आक्रोश लंबे समय से बढ़ रहा है। लगातार बदलती सरकारें, भ्रष्टाचार के मामले और अपराध ने जनता का धैर्य को खत्म कर दिया है। समाजशास्त्री ओमार कोरोनेल का कहना है कि युवाओं में असुरक्षा और भ्रष्टाचार के खिलाफ गुस्सा पिछले दशकों की विफलताओं का नतीजा है। प्रदर्शनकारियों ने तख्तियां उठाकर कहा प्रदर्शन करना अधिकार है, मारना अपराध। एक महिला ने पोस्टर पर लिखा हत्यारी से बलात्कारी तक, बस चेहरा बदला है।

पेरिस की तरह वॉशिंगटन में विशाल दरवाजा बनवाना चाहते हैं ट्रंप, अमीर कारोबारियों के डिनर में सामने रखी मंशा

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप राजधानी वॉशिंगटन में अपनी एक खास पहचान छोड़ना चाहते हैं। इसके लिए वह लिंकन स्मारक के पास एक पेरिस की तरह एक विशाल दरवाजा बनवाना चाहते हैं। ट्रंप ने व्हाइट हाउस में आयोजित एक रात्रिभोज के दौरान बुधवार को इस योजना का खुलासा किया। यह रात्रिभोज उन अमीर व्यापारियों के लिए था, जिन्होंने व्हाइट हाउस में 250 मिलियन डॉलर की लागत से एक भव्य हॉल (बॉलरूम) बनवाने के लिए पैसा दान किया है। हालांकि,ट्रंप ने दरवाजा बनाने की लागत का कोई जिक्र नहीं किया। ट्रंप ने कहा, यह वाकई बहुत खूबसूरत होने वाला है। उन्होंने आगे कहा, मुझे लगता है कि यह शानदार होगा। कई राष्ट्रपति और उनके परिवार अपने कार्यकाल के दौरान व्हाइट हाउस में कोई खास बदलाव करके अपनी पहचान छोड़ने की कोशिश करते रहे हैं। ट्रंप भी ऐसा ही कर रहे हैं। उन्होंने पहले ही कुछ डिजाइन और निर्माण से जुड़े कार्यों में बदलाव किए हैं। इनमें सबसे बड़ा बदलाव रोज गार्डन को पक्के पत्थर से ढका हुआ आंगन बनाना है।

लेकिन यह दरवाजा केवल व्हाइट हाउस तक सीमित नहीं है। यह ट्रंप को वॉशिंगटन में एक और स्थायी स्मारक बनवाने का मौका देगा, जो स्मारकों के लिए मशहूर शहर है। यह योजना ट्रंप के उस पुराने विचार से जुड़ी है, जिसमें उन्होंने कहा था कि वह शहर की पुरानी चीजों जैसे घास, टूटे-फूटे साइन बोर्ड और सड़कों के बीच की जगहों को नया बनाना चाहते हैं। ऐसा लगता है कि ट्रंप को फ्रांस से मिलती है।

ट्रंप ने जो विशाल दरवाजा बनाने का प्रस्ताव रखा है, वह पेरिसके मशहूर आर्क डी ट्रायंफ से काफी हद तक मिलता-जुलता होगा। आर्क डी ट्रायंफ पेरिस की प्रसिद्ध सड़क चैंप्स-एलीसीज के अंत में स्थित है। यह स्मारक उन सैनिकों की याद में बनाया गया था, जिन्होंने फ्रांस की क्रांति और नेपोलियन के युद्ध में लड़ाई लड़ी थी।

इस साल की शुरुआत में वॉशिंगटन में अमेरिकी सेना के 250वें स्थापना दिवस के मौके पर एक सैन्य परेड का आयोजन किया गया था। ट्रंप को इस परेड की प्रेरणा तब मिली थी, जब करीब आठ साल पहले उन्होंने फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के निमंत्रण पर पेरिस में ऐसी ही एक भव्य परेड देखी थी।

व्हाइट हाउस को जब इस दरवाजे के बारे में जानकारी के लिए ईमेल भेजा गया, जिसमें पूछा गया था कि यह कब तक बनकर तैयार हो सकता है, तो व्हाइट हाउस ने इस पर तत्काल कोई जवाब नहीं दिया। बाद में ट्रंपने एक सोशल मीडिया पोस्ट में बताया कि इस परियोजना पर हैरिसन डिजाइन नाम की एक स्थानीय कंपनी काम कर रही है। हालांकि, इस कंपनी ने भी गुरुवार को भेजे ईमेल का कोई जवाब नहीं दिया।

पूर्व अमेरिकी एनएसए बोल्टन पर 18 मामलों में आरोप तय:आजीवन जेल हो सकती है; ट्रम्प के खिलाफ जाकर भारत का समर्थन किया था

वॉशिंगटन डीसी, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के पिछले कार्यकाल में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) रहे जॉन बोल्टन पर गोपनीय जानकारी के गलत इस्तेमाल और लीक करने के आरोप में केस दर्ज हुआ है। बोल्टन पर राष्ट्रीय रक्षा से जुड़ी जानकारी शेयर करने के 8 और गोपनीय दस्तावेज अपने पास रखने के 10 आरोप लगाए गए हैं। अमेरिकी मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, जॉन बोल्टन ने ट्रम्प प्रशासन में काम करते वक्त अपनी गतिविधियों के नोट्स और डायरी एंट्रीज एओएल ईमेल अकाउंट में सेव की थीं। जांच एजेंसियों का कहना है कि इन नोट्स में राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी संवेदनशील बातें शामिल थीं, जिन्हें उन्होंने खुद को और परिवार को मेल किया था। 76 साल के बोल्टन अगर दोषी पाए गए तो उन्हें आजीवन कारावास तक की सजा हो सकती है। 2021 में बोल्टन का ईमेल अकाउंट ईरानी हैकर्स ने हैक कर लिया था। हैकर्स ने धमकी दी थी कि अगर बोल्टन के खिलाफ कार्रवाई नहीं हुई तो वे यह जानकारी लीक कर देंगे, जैसे 2016 में हिलेरी क्लिंटन के ईमेल लीक हुए थे। बोल्टन ने ट्रम्प के खिलाफ भारत का समर्थ किया था बोल्टन ने अगस्त में सीएनएन को दिए एक इंटरव्यू में भारत पर कुल 50 प्रतिशत टैरिफ लगाने के फैसले को भारी भूल बताया था। उन्होंने ने आशंका जाहिर की है कि रूस को कमजोर करने के लिए भारत पर लगाया गया एक्स्ट्रा टैरिफ कहीं उल्टा न पड़ जाए। उन्होंने कहा था कि अमेरिका, भारत को रूस और चीन से दूर रखने के लिए कई साल

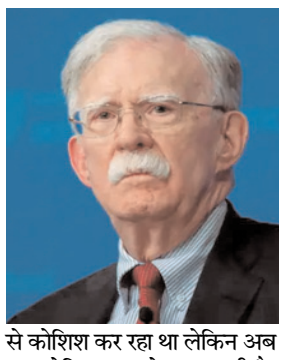

से कोशिश कर रहा था लेकिन अब वह कोशिश कमजोर पड़ चुकी है। इसके अलावा बोल्टन ने पिछले महीने कहा था कि ट्रम्प और पीएम मोदी के बीच पहले की खास दोस्ती अब खत्म हो चुकी है। ब्रिटिश मीडिया एलबीसी को दिए इंटरव्यू में बोल्टन ने ट्रम्प की नीति की आलोचना करते हुए कहा, व्हाइट हाउस ने अमेरिका-भारत संबंधों को दशकों पीछे धकेल दिया है, जिससे मोदी रूस और चीन के करीब आ गए हैं। चीन ने खुद को अमेरिका और ट्रम्प के विकल्प के रूप में पेश किया है।

ट्रम्प ने बोल्टन को बुरा आदमी बताया : अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने बोल्टन पर आरोप तय होने के बाद प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि वो बुरा आदमी, जैसा करोगे वैसा भरोगे। बोल्टन ट्रम्प प्रशासन में 2018 से 2019 तक राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार रहे। दोनों के बीच कई मतभेद रहे। बोल्टन ने इस्तीफा देने के बाद ट्रम्प पर तीखे आरोप लगाए और किताब लिखी, जिसे ट्रम्प ने चुनाव से पहले रोकने की कोशिश की थी। पहली जांच 2021 में बंद हुई थी, लेकिन अब मामला फिर से खोला गया है। केस अब फेडरल कोर्ट में चलेगा।

आईवीएफ को सस्ता और सुलभ बनाने के लिए ट्रंप की नई पहल; बीमा कवरेज और दवा मूल्य में भारी कटौती का एलान

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इन-विट्रो फर्टिलाइजेशन इलाज को सस्ता और सुलभ बनाने के लिए दो बड़े कदमों की घोषणा की। ये कदम उनके चुनावी वादों में से एक थे, जिन्हें उन्होंने अब अमल में लाने की शुरुआत कर दी है। ट्रंप ने व्हाइट हाउस के ओवल ऑफिस से घोषणा करते हुए बताया कि उनकी प्रशासन जल्द ही ऐसा दिशा-निर्देश जारी करेगी जिससे कंपनियां अपने कर्मचारियों के हेल्थ इंश्योरेंस प्लान में आईवीएफ कवरेज शामिल कर सकेंगी। इसके साथ ही उन्होंने एक फार्मा कंपनी के साथ समझौते की भी घोषणा की है, जिसके तहत फर्टिलिटी दवाएं अब 84% तक सस्ते दामों पर उपलब्ध होंगी।

फर्टिलिटी दवाओं पर 84% तक छूट: ट्रंप ने बताया कि ईएमडी सेरोनो, जो दुनिया की सबसे बड़ी फर्टिलिटी ड्रग निर्माता कंपनी है, अब अमेरिका में अपनी सभी फर्टिलिटी दवाएं भारी डिस्काउंट पर बेचेगी। कंपनी की उपाध्यक्ष लिब्बी हॉर्न ने पुष्टि की कि वे गोनल-एफ समेत कई दवाओं पर 84% तक की छूट दे रही हैं। इसके अलावा कंपनी की दूसरी आईवीएफ दवा पेर्गोवेरिस को भी एफडीए के राष्ट्रीय प्राथमिकता कार्यक्रम के तहत मंजूरी के लिए भेजा गया है। यह दवा पहले से ही कनाडा, यूरोप और एशिया के कई देशों में उपलब्ध है।

ट्रंप बोले- मैं हूं फर्टिलाइजेशन प्रेसिडेंट: ट्रंप ने खुद को फर्टिलाइजेशन प्रेसिडेंट कहा और बताया कि यह पहल उन लाखों दंपतियों के लिए है जो संतान प्राप्ति के लिए संघर्ष कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह अमेरिका के इतिहास में अब तक किसी भी राष्ट्रपति द्वारा उठाया गया सबसे बड़ा आईवीएफ समर्थन कदम है। अलबामा की सीनेटर केटी ब्रिट ने भी इस योजना की सराहना की और कहा कि यह कदम उन सभी परिवारों को उम्मीद देगा जो आईवीएफ इलाज को लेकर आर्थिक रूप से जूझ रहे हैं।

बीमा में शामिल होगा आईवीएफ इलाज

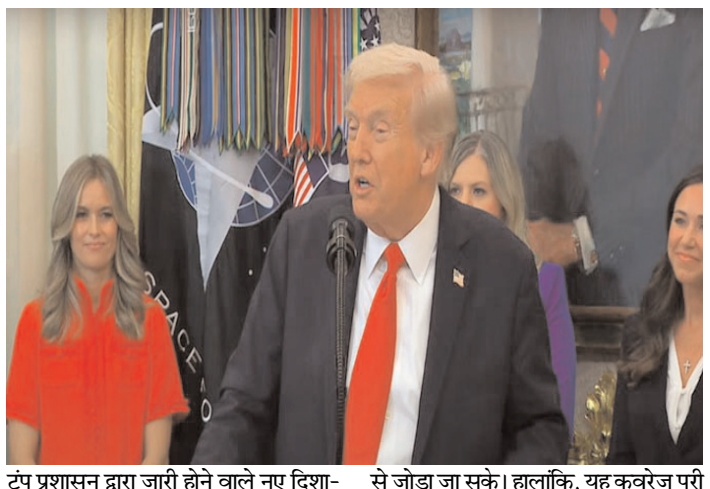

ट्रंप प्रशासन द्वारा जारी होने वाले नए दिशा-निर्देश के तहत श्रम मंत्रालय, ट्रेजरी और स्वास्थ्य विभाग मिलकर ऐसा मॉडल तैयार कर रहे हैं, जिससे आईवीएफ कवरेज को डेंटल या विजन इंश्योरेंस की तरह आसानी से जोड़ा जा सके। हालांकि, यह कवरेज पूरी तरह वैकल्पिक होगा यानी कंपनियों पर इसे लागू करने का कोई दबाव नहीं होगा। प्रीमियम की राशि हर कंपनी की बीमा योजना के ढांचे पर निर्भर करेगी।

आईवीएफ की ऊंची लागत पर चिंता : ट्रंप ने कहा कि आईवीएफ इलाज की लागत फिलहाल 15,000 से 20,000 डॉलर (करीब 12 से 16 लाख रुपये) प्रति चक्र है, जो आम परिवारों के लिए काफी महंगा है। इसलिए सरकार का लक्ष्य है कि बीमा कवरेज और दवाओं की कीमत घटाकर इसे अधिक लोगों तक पहुंचाया जा सके। यह पहल ट्रंप द्वारा फरवरी में जारी किए गए एक्जीक्यूटिव ऑर्डर का ही हिस्सा है, जिसमें आईवीएफ लागत कम करने के उपाय खोजने के निर्देश दिए गए थे।

अलबामा के विवाद के बाद बढ़ी जागरूकता : पिछले साल अलबामा सुप्रीम कोर्ट ने एक विवादास्पद फैसले में कहा था कि जमे हुए भ्रूण को बच्चा माना जा सकता है। इस फैसले से आईवीएफ क्लीनिकों में कानूनी अनिश्चितता पैदा हो गई थी, जिसके बाद राज्य सरकार ने आईवीएफ प्रदाताओं के लिए सुरक्षा कानून पारित किया।

स्वामी,मुद्रक व् प्रकाशकः सुरेश मौर्या द्वारा अष्ठ विनायक ओफ़्सेट एफपी,149 प्लोट 26 खोडीयारनगर,सिद्धिविनायक मंदीर के पास ,भाटेना) हो.सो अंजना सुरत गुजरात से मुद्रित एवं 191 महादेव नगर उधना सुरत गुजरात से प्रकाशित संपादक : सुरेश मौया (M) 9879141480 RNI No.:GUJHIN/2018/75100 (Subject to Surat jurisdiction)

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

बिहार चुनावः कांग्रेस के स्टार प्रचारकों की सूची जारी, राहुल-प्रियंका करेंगे तूफानी दौरे

प्रथम चरण के लिए 40 स्टार प्रचारक, कई दिग्गज नेताओं के नाम शामिल

नई दिल्ली

बिहार में विधानसभा चुनाव प्रचार अब जोर पकड़ने लगा है। कांग्रेस ने बिहार चुनाव के प्रथम चरण के मतदान के लिए अपने 40 स्टार प्रचारकों की सूची जारी कर दी है। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी, सोनिया गांधी, प्रियंका गांधी इसमें शामिल हैं। इनके अलावा कांग्रेस शासित राज्यों के मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री समेत कई राज्यों के प्रदेश अध्यक्ष भी बिहार में प्रचार करेंगे।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक कांग्रेस ने पूर्णिया से निर्दलीय सांसद पप्पू यादव को भी इस चुनाव प्रचार सूची में जगह दी है। इनके अलावा कन्हैया कुमार, अखिलेश प्रसाद सिंह, रंजीता रंजन, राजेश राम, शकील अहमद खान, मदन मोहन झा, कृष्णा अल्लावरु के भी नाम शामिल हैं। वहीं केसी वेणुगोपाल, सुखविंदर सिंह सुखु, अशोक गहलोत, भूपेश बघेल, दिग्विजय सिंह, अधीर रंजन चौधरी, मीरा कुमार, सचिन पायलट, रणदीप सिंह सुरजेवाला, सैयद नासिर हुसैन, चरणजीत सिंह चन्नी, गौरव गगोई, तारिक अनवर, मोहम्मद जावेद, मनोज राम, अलका लांबा, पवन खेड़ा, इमरान प्रतापगढ़ी, शकील अहमद, जीतू पटवारी, सुखदेव भगत, राजेश कुमार राम, शकील अहमद खान, मदन मोहन झा, अजय राय, जिग्नेश मेवानी, अनिल जयहिंद, राजेंद्र पाल गौतम, फुरकान अंसारी, उदय भानु चिब, सुबोध कांत सहाय का नाम भी स्टार प्रचारकों में है।

बिहार में दो चरणों में विधानसभा चुनाव होना है। 6 नवंबर को पहला चरण जबकि दूसरे चरण में 11 नवंबर को मतदान होगा। इसमें महागठबंधन के किस पार्टी के कितने उम्मीदार मैदान में उतरेंगे इस पर पिक्चर अभी तक साफ नहीं हो पाई है। कई सीटों पर दोस्ताना संघर्ष है। दरअसल महागठबंध में सीट का पेंच फंसा है। शनिवार को पटना में कांग्रेस की अहम बैठक होना है। राहुल गांधी की वोटर अधिकार यात्रा के बाद बिहार में कांग्रेस की ताकत बढ़ी है। इसके मद्देनजर पार्टी ज्यादा सीटों पर चुनाव लड़ना चाहती है। लेकिन आरजेडी कांग्रेस की मांग पर सहमत नहीं है। वैशाली की दो सीटों पर कांग्रेस और राजद ने अपने उम्मीदवारों को टिकट देकर नामांकन भी करवा दिया है।

दशकों से अंधकार में डूबे इलाकों में अब विकास और खुशहाली के दीये जलेंगे

पीएम मोदी ने कहा- वह दिन दूर नहीं जब देश माओवादी आतंक से मुक्त होगा

नई दिल्ली

पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा है कि अब वह दिन दूर नहीं जब देश माओवादी आतंक से पूरी तरह मुक्त होगा। उन्होंने विश्वास दिलाया कि दशकों से अंधकार में डूबे इलाकों में अब विकास और खुशहाली के दीये जलेंगे। पीएम मोदी ने यह बात एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। जहां उन्होंने नक्सलवाद के खात्मे और देश के सर्वांगीण विकास को लेकर अपनी सरकार की प्रतिबद्धता दोहराई।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक मोदी ने कहा कि बीते 50-55 सालों में माओवादी आतंक ने हजारों निर्दोष लोगों और सुरक्षाकर्मियों की जान ली है। उन्होंने कितने ही परिवार तबाह किए। ये नक्सली इलाके में स्कूल और अस्पताल नहीं बनने देते , जो बने भी थे, उन्हें बम से उड़ा देते थे। विकास की रोशनी से देश का बड़ा हिस्सा दशकों तक वंचित रहा।

पीएम मोदी ने आरोप लगाया कि कांग्रेस शासन में 'अर्बन नक्सल' इतने प्रभावशाली थे कि माओवादी आतंक की सच्चाई आम जनता तक न पहुंचे, इसके लिए सेंसरशिप लगाई जाती थी। उन्होंने कहा कि देश का करीब हर बड़ा राज्य नक्सली हिंसा की चपेट में था। जहां बाकी देश में संविधान लागू था, वहीं रेड कॉरिडोर में उसका कोई नाम लेने वाला नहीं था।

पीएम मोदी ने कहा कि जो लोग आज संविधान की किताब लेकर सड़कों पर नाचते हैं, वे वही हैं जो इन माओवादी आतंकियों की रक्षा के लिए रात-दिन सक्रिय हैं। उन्होंने कहा कि यह केवल सुरक्षा का नहीं बल्कि सामाजिक और आर्थिक न्याय का भी सवाल है, क्योंकि माओवादी आतंक से सबसे ज्यादा नुकसान हमारे आदिवासी, दलित और गरीब भाइयों-बहनों को उठाना पड़ा है। पीएम ने 2014 के बाद हुए बदलावों का उल्लेख करते हुए कहा कि अब माओवादी हिंसा सिमट रही है और विकास योजनाएं उन क्षेत्रों तक पहुंच रही हैं, जहां कभी सरकारी कर्मचारी भी जाने से डरते थे।

उन्होंने कहा अब वहां भी खुशियों के दीये जलेंगे। ये मोदी की गारंटी है।

पीएम मोदी ने कहा कि माओवादी आतंक का अंत केवल कानून से नहीं बल्कि विकास से होगा। जब हर गांव तक शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क और रोजगार पहुंचेगा, तब ही स्थायी शांति संभव होगी।

डीआरडीओ द्वारा तैयार जोरावर टैंक ने नाग मार्क-2 मिसाइल से दिखाया दम

परीक्षण में रेंज और टारगेट पर लगाया सटीक निशाना

नई दिल्ली

रक्षा अनुसंधान विकास संगठन (डीआरडीओ) ने विकसित जोरावर टैंक ने नाग मार्क-2 मिसाइल से दम दिखाया। खास बात ये रही कि जोरावर टैंक के साथ नाग मिसाइल का ये परीक्षण सफल रहा, जिस तरह से परीक्षण के दौरान रेंज और टारगेट पर सटीक वार हुआ वह चौंकाने वाला है, जिस तरह से जोरावर टैंक से नाग मिसाइल ने सटीक वार किया। ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत अपनी सैन्य ताकत में इजाफे को लेकर अलर्ट है। उसका पूरा फोकस स्वदेशी हथियारों पर है। इसमें डीआरडीओ अहम रोल निभा रहा है। शुक्रवार को डीआरडीओ और लार्सन एंड टुब्रो की ओर से निर्मित जोरावर लाइट टैंक ने एंटी-टैंक गाइडेड मिसाइल (नाग मार्क 2) का सफलतापूर्वक परीक्षण किया। डीआरडीओ अधिकारी ने बताया कि जोरावर टैंक और नाग मिसाइल का परीक्षण पूरी तरह से सफल रहा। इस परीक्षण में रेंज, अटैक मोड की स्पीड और टारगेट पर सटीक वार का ध्यान रखा गया। जोरावर टैंक, पहला स्वदेशी लाइट टैंक है, इसे डीआरडीओ ने तैयार किया है। परीक्षण सफल रहने के बाद इन्हें सेना को सौंपा जाएगा।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह 27 अक्टूबर को मुंबई में दो अत्याधुनिक नौकाओं का उद्घाटन करेंगे

मुंबई

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत महाराष्ट्र में गहरे समुद्र में मछली पकड़ने को एक नया बढ़ावा मिलेगा। केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री अमित शाह 27 अक्टूबर को मुंबई के मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड में दो अत्याधुनिक गहरे समुद्र में मछली पकड़ने वाली नौकाओं का उद्घाटन करेंगे।

यह पहल राज्य में समुद्री मत्स्य पालन के आधुनिकीकरण में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर होगी, और इस परियोजना को राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम से वित्तीय सहायता मिली है। इस योजना का उद्देश्य मछुआरा सहकारी समितियों की गहरे समुद्र में मछली पकड़ने की क्षमता को बढ़ाना, भारत के विशेष आर्थिक क्षेत्रों में संसाधनों के सतत उपयोग को बढ़ावा देना और मछुआरों की आय में वृद्धि करना है। राज्य के सात समुद्री जिलों से 14 मछुआरा सहकारी समितियों को इस योजना के तहत चुना गया था। प्रस्ताव प्रक्रिया के बाद, जय मल्हार मत्स्य विविध कार्यकारी एजेंसी, मुंबई शहर ने योजना का लाभ उठाने के लिए अपनी तत्परता दिखाई थी।

एनसीडीसी के निर्देशानुसार इन नौकाओं का निर्माण उडुपी कोच्चि शिपयार्ड लिमिटेड, मालपे (कर्नाटक) में किया गया है। प्रत्येक नाव 18 से 22 मीटर लंबी है, इसमें 400 से 600 एचपी इंजन क्षमता, स्टील पतवार निर्माण, रेफ्रिजरेटेड फिश होल्ड है और यह अत्याधुनिक नेविगेशन और संचार प्रणालियों जैसे जीपीएस, इको साउंडर, वीएचएफ रेडियो, एआईएस, रडार से सुसज्जित है। ये नावें 10 से 15 दिनों के मछली पकड़ने के अभियानों के लिए उपयुक्त हैं, और विशेष रूप से टूना लॉन्गलाइन और गिलनेट संचालन के लिए उपयुक्त हैं। परियोजना की कुल लागत 20.30 करोड़ रुपया है, जिसमें एनसीडीएस ऋण सहायता 11.55 करोड़ रुपया, केंद्रीय हिस्सा 4.03 करोड़ रुपया, राज्य का हिस्सा 2.68 करोड़ रुपया और लाभार्थी संस्थान का हिस्सा 12.03 करोड़ रुपया है। इन नौकाओं के उद्घाटन से महाराष्ट्र में स्थायी गहरे समुद्र में मछली पकड़ने का एक नया अध्याय शुरू होगा।

यह परियोजना महाराष्ट्र से गहरे समुद्र में ट्यूना पहल से जुड़ी है और इससे समुद्री निर्यात का मूल्य बढ़ेगा और मछुआरों की आय में भी वृद्धि होगी। आधुनिक तकनीक, कोल्ड चेन सुविधाओं और सहकारी प्रबंधन के साथ, यह पहल संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों, विशेष रूप से सतत विकास लक्ष्य 12 और 14 के अनुरूप है।

धामी सरकार का फैसला, लिव-इन में रह रहे कपल की जानकारी माता-पिता को नहीं देगी

देहरादून उत्तराखंड में धामी सरकार यूनिफॉर्म सिविल कोड (यूसीसी) के तहत लिव-इन रिलेशन से जुड़े नियमों में बड़ा बदलाव करने जा रही है। नए प्रस्तावों के अनुसार अब अगर 21 साल से कम उम्र का कोई युवा लिव-इन में रह रहा है, तब सरकार इसकी जानकारी उसके माता-पिता को नहीं देगी। इसके साथ ही लिव-इन पार्टनर के गर्भवती होने या रिश्ता खत्म होने के बाद बच्चे के जन्म की सूचना देने की अनिवार्यता भी खत्म कर दी जाएगी। राज्य सरकार ने इन बदलावों को नागरिकों की प्राइवेसी और फ्रीडम से जोड़कर कोर्ट में शपथपत्र दाखिल किया है। नई नीति में लिव-इन कपल की कोई पुलिस जांच या निगरानी नहीं होगी। कोई भी व्यक्ति बिना ठोस कारण किसी लिव-इन जोड़े की शिकायत नहीं करेगा। विवाह पंजीकरण में भी अब धर्म या सामुदायिक प्रमाणपत्र की जरूरत नहीं होगी। उत्तराखंड सरकार ने यूनिफॉर्म सिविल कोड, 2025 में संशोधन के लिए प्रस्ताव नैनीताल हाईकोर्ट में दाखिल किया है। धामी सरकार ने कहा कि नए नियम नागरिकों की निजता की रक्षा करने के लिए बनाए है। शपथपत्र में बताया गया है कि विवाह पंजीकरण और लिव-इन संबंधों से जुड़ी कई शर्तों को हटाया जाएगा, जिससे कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छा से संबंध या विवाह का पंजीकरण करा सकेगा। यूसीसी लागू होने के बाद उत्तराखंड में अब तक करीब 4 लाख लोगों ने विवाह पंजीकरण कराया है। इनमें 2 लाख से अधिक विवाह पंजीकृत हुए हैं। वहीं, 58 जोड़े लिव-इन में रह रहे हैं, जबकि एक जोड़े ने संबंध समाप्त किया है। इसके अलावा अब तक 284 तलाक के मामले दर्ज किए गए हैं।

महागठबंधन के सिर फुटव्वल पर चिराग का तंज..... ऐसा किसी चुनाव में पहले कभी नहीं दिखा

सम्राट चौधरी ने ली चुटकी, बिहार कन्फ्यूज है कि महागठबंधन कर क्या रहा

पटना

बिहार विधानसभा चुनाव के पहले चरण के नामांकन की तारीख शुक्रवार को खत्म हुई। लेकिन अभी तक विपक्षी महागठबंधन में सीट बंटवारे की तस्वीर साफ नहीं हुई है। कई सीटों पर घटक दलों के उम्मीदवार एक दूसरे के सामने खड़े हैं। महागठबंधन में हुए इस सिर फुटव्वल पर एनडीए ने चुटकी ली है।

लोजपा-आर के राष्ट्रीय अध्यक्ष और मोदी सरकार के मंत्री चिराग पासवान ने कहा है कि ऐसा सिर फुटव्वल किसी चुनाव में पहले कभी नहीं दिखा।

चिराग पासवान ने कहा कि ये लोग हमारे बारे में भ्रम फैला रहे थे। लेकिन एनडीए ने सबकुछ समय से ठीक हो गया है। एनडीए के सभी घटक दलों ने अपने अपने कैंडिडेट का नाम पूरी सहजता के साथ जारी किया है। उनके प्रत्याशी नामांकन कर रहे हैं। नामांकन के मंचों पर एनडीए की एकजुटता दिखाती है। लेकिन, दूसरी ओर विपक्षी गठबंधन में सिर फुटव्वल का दौर जारी है। पहले दौर का नामांकन समाप्त हुआ पर ये लोग इतना भी नहीं बता पाए कि कौन सी पार्टी कितनी सीटों पर चुनाव लड़ रही है। ऐसा किसी चुनाव में पहले नहीं देखा गया होगा।

केंद्रीय मंत्री चिराग ने कहा कि अब ये लोग एक दूसरे के सामने भी आने लगे हैं। यह कैसा गठबंधन है कि किसी को किसी पर विश्वास ही नहीं है। ऐसा कोई और दूसरा उदाहरण नहीं मिलेगा। यह दर्शाता है कि उनके गठबंधन में कितना सिर फुटव्वल चल रहा है। इधर उपमुख्यमंत्री और भाजपा नेता सम्राट चौधरी ने महागठबंधन पर तंज कसा है।

पूरा बिहार इनदिनों कन्फ्यूज है कि महागठबंधन कर क्या रहा है। किस सीट से कौन दल चुनाव लड रहा है। कहीं कांग्रेस के खिलाफ राजद ने कैंडिडेट दे दिया है, तब कहीं वीआईपी और राजद में टकराव है।

राज्यपाल कटारिया बोले- भुल्लर पैसा बटोरते रहे और सिस्टम को नजर नहीं आया?

चंडीगढ

पंजाब पुलिस में डीआईजी डीआईजी हरचरण सिंह भुल्लर के यहां अकूत संपत्ति मिलने से पूरे देश में हड़कंप मचा हुआ है। इस पर नाराजगी जाहिर करते हुए पंजाब के राज्यपाल गुलाब चंद कटारिया ने कहा कि हैरानी की बात है डीआईजी पैसा बटोरता रहा और सिस्टम को दिखाई नहीं दिया। उन्होंने कहा कि यह घटना उच्च स्तर पर व्याप्त भ्रष्टाचार को उजागर करती है और यह स्थिति बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। नाभा के पंजाब पब्लिक स्कूल में एक कार्यक्रम के दौरान मीडियाकर्मियों से बात करते हुए राज्यपाल ने कहा कि भुल्लर के आवास से 7.5 करोड़ रुपये नकद बरामद होने की खबरें चौंकाने वाली हैं। उन्होंने सवाल उठाया कि इतनी बड़ी राशि एक दिन में इकट्ठा नहीं हो सकती। उन्होंने आश्चर्य जताते हुए पूछा, यह सब इतने बड़े पैमाने पर हो रहा था और हमारी विशाल प्रशासनिक मशीनरी इसे क्यों नहीं देख पाई?

" राज्यपाल ने कहा कि अगर इतना बड़ा भ्रष्टाचार सबके सामने हो रहा था, तो इसके लिए पूरा सिस्टम जिम्मेदार है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि इस मामले की गंभीरता को समझने की जरूरत है, क्योंकि यह गिरफ्तारी केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) द्वारा की गई है, जो एक केंद्रीय एजेंसी है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार के भ्रष्टाचार विरोधी अभियान के बावजूद इतने वरिष्ठ स्तर पर गलत आचरण का पता न चल पाना चिंताजनक है और इस पर आत्ममंथन की आवश्यकता है। कार्यक्रम स्थल से रवाना होने से पहले कटारिया ने कहा कि डीआईजी की गिरफ्तारी से लोगों में यह विश्वास जगेगा कि अभी सब कुछ खत्म नहीं हुआ है। उन्होंने प्रशासनिक मशीनरी से इस मामले में गहन जांच और आत्मनिरीक्षण करने का आह्वान किया ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोका जा सके। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने आरोपी पुलिस अधिकारी को चंडीगढ़ की एक विशेष अदालत में पेश किया जिसके बाद उन्हें शुक्रवार को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

54 वर्षों के बाद शनिवार को खुला विश्व प्रसिद्ध बांके बिहारी मंदिर के खजाने का कमरा

मथुरा मथुरा के विश्व प्रसिद्ध बांके बिहारी मंदिर में 54 वर्षों के बाद खजाने का कमरा शनिवार को धनतेरस के दिन खोला गया है। मंदिर परिसर में भारी पुलिस बल तैनात और सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। श्रद्धालुओं और स्थानीय लोगों में उत्सुकता और उत्साह का माहौल है, क्योंकि यह कमरा करीब आधी सदी से बंद पड़ा था।

मंदिर में उपस्थित सेवायत गोस्वामी आभास गोस्वामी ने बताया कि मंदिर के गर्भगृह के ठीक बराबर में स्थित कमरे को पुराने समय में सुरक्षा के कारण बंद किया था। पहले सुरक्षा की पर्याप्त व्यवस्था नहीं थी, इसलिए ठाकुर जी के दैनिक उपयोग के सामान जैसे बर्तन, कलसे, स्नान सामग्री आदि को कमरे में सुरक्षित रखा जाता था। इसके अलावा चांदी और सोने के छोटे आभूषण स्टेट बैंक मथुरा में जमा करा दिए गए थे। आज कमरे का ताला खोला गया और कुछ लोगों ने अंदर प्रवेश किया। इस कमरे में पानी भरा था, काफी कीच हुई है, अंदर चूहे भी दिखाई दे रहे हैं। फिलहाल साफ-सफाई का काम हो रहा है। हालांकि, शुरुआती जांच में कोई कीमती वस्तुएं नहीं मिली हैं। गोस्वामी आभास ने बताया कि खजाने में जो भी सामग्री निकलेगी, वह ठाकुर जी के पूजा और सेवा में उपयोग की जाने वाली प्राचीन वस्तुएं होंगी, जैसे ताम्बे या चांदी के बर्तन, कलसे, स्नान सामग्री या पुराने आभूषण। उन्होंने स्पष्ट किया कि मंदिर में कभी भी ऐसा खजाना नहीं रखा गया था, जो महाराजा या राज्य द्वारा जमा किया गया हो। अधिकांश सामग्री केवल ठाकुर जी की सेवा और पूजा के लिए रखी गई थी। मंदिर में हाई पावर कमिटी द्वारा दर्शनार्थियों और श्रद्धालुओं की व्यवस्था के लिए विशेष इंतजाम किए गए हैं। खजाने के कमरे की सफाई पूरी होने के बाद ही इसमें मौजूद वस्तुएं श्रद्धालुओं और मीडिया के सामने लाई जाएगी। मंदिर प्रशासन ने कहा है कि किसी भी वस्तु को निकालने या व्यवस्थित करने से पहले सभी सुरक्षा और धार्मिक नियमों का पालन होगा। मथुरा में यह ऐतिहासिक अवसर न केवल श्रद्धालुओं के लिए, बल्कि इतिहास और संस्कृति में रुचि रखने वाले लोगों के लिए भी महत्वपूर्ण है।

वित्त मंत्री का दावाः जीएसटी कटौती का बंपर लाभ, उपभोक्ताओं को उम्मीद से अधिक बचत

नई दिल्ली

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने पुष्टि की है कि जीएसटी कटौती का लाभ उपभोक्ताओं तक पहुँच रहा है, जिससे कई वस्तुओं की कीमतों में उम्मीद से अधिक गिरावट दर्ज की गई है। सरकार 54 आवश्यक उत्पादों पर कड़ी नज़र रख रही है ताकि सुनिश्चित हो सके कि कर लाभ आम आदमी तक पहुँचे, जिससे त्योहारों के दौरान खरीदारी में महत्वपूर्ण उछाल आया है। संवित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शनिवार को कहा कि जीएसटी कटौती का लाभ उपभोक्ताओं तक पहुँच रहा है और कुछ वस्तुओं की कीमतों में उम्मीद से ज़्यादा गिरावट आई है। उन्होंने कहा कि सरकार 54 उत्पादों की कीमतों पर कड़ी नज़र रख रही है ताकि संशोधित कर ढांचे का लाभ आम आदमी तक पहुँच सके। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 18 अक्टूबर को धनतेरस के शुभ दिन वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल और सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव के साथ जीएसटी बचत उत्सव प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान कहा, कर में अपेक्षा से अधिक कमी हुई है और उपभोक्ताओं को उम्मीद के मुताबिक लाभ मिला है, कुछ तो उससे भी अधिक।

निर्मला सीतारमण ने एमपीलैड योजना के तहत कर्नाटक में किसान प्रशिक्षण केंद्र का उद्घाटन किया वित्त मंत्री ने कहा कि कुछ मामलों में, व्यवसायों ने जीएसटी दरों में अपेक्षा से कहीं अधिक कटौती का लाभ उपभोक्ताओं को दिया। वित्त मंत्री ने कहा, नवरात्रि के पहले दिन इसे लॉन्च किया गया था और मुझे लगता है कि भारत के लोगों ने इसे अच्छी तरह से स्वीकार किया है। उन्होंने आगे कहा कि सरकार ने 54 आवश्यक वस्तुओं पर कड़ी नज़र रखी है और पाया है कि उनमें से प्रत्येक में कर लाभ उपभोक्ताओं को दिया गया है। उन्होंने कहा कि सितंबर के आखिरी नौ दिनों में ही खरीदारी में उछाल देखा गया, जिसमें यात्री वाहनों की बिक्री 3.72 लाख यूनिट तक पहुँच गई, दोपहिया वाहनों की बिक्री 21.60 लाख यूनिट तक पहुँच गई, और तिपहिया वाहनों की बिक्री में साल-दर-साल 5.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई। दरों को युक्तिसंगत बनाने के प्रभाव पर ज़ोर देते हुए, सीतारमण ने कहा कि टेलीविजन सेटों की बिक्री में 30-35 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि एयर कंडीशनर (एसी) की बिक्री पहले दिन दोगुनी हो गई। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि इन सुधारों पर लंबे समय से काम चल रहा था।

शहीद भगत सिंह का दुर्लभ वीडियो फुटेज हासिल करने में जुटी मान सरकार

इंग्लैंड और वेल्स बार काउंसिल' के प्रतिनिधिमंडल से मांगा सहयोग

चंडीगढ़

पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने भगत सिंह का एक दुर्लभ वीडियो फुटेज हासिल करने में राज्य सरकार की सहायता के लिए ब्रिटेन के कानूनी समुदाय से सहयोग मांगा है। सीएम मान ने अपने आवास पर 'इंग्लैंड और वेल्स बार काउंसिल' के प्रतिनिधिमंडल से कहा कि महान स्वतंत्रता सेनानी भगत सिंह का भारत में कोई वीडियो रिकॉर्ड उपलब्ध नहीं है। उन्होंने कहा कि हालांकि यह पता चला है कि स्कॉटलैंड यार्ड के पास भगत सिंह का दुर्लभ फुटेज हो सकता है, खासकर उनकी गिरफ्तारी और मुकदमे के समय का।

सीएम मान ने कहा कि इस तरह के फुटेज भगत का बेहद सम्मान करने वाले सभी भारतीयों, खासकर पंजाबियों के लिए बहुत मायने रखता हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार फुटेज को हासिल करने के लिए पहले से ही गंभीर प्रयास कर रही है, ताकि यह भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सके। मान ने एक अन्य एजेंडे पर बात करते हुए, ब्रिटिश निवेशकों से पंजाब में निवेश आकर्षित करने के लिए भी 'बार काउंसिल' से मजबूत समर्थन और सहयोग मांगा।

इसके पहले सीएम मान ने हाल ही में प्रमुख उद्योगपतियों से मुलाकात की और पंजाब को एक प्रमुख निवेश स्थल के रूप में स्थापित किया। उन्होंने राज्य के शांतिपूर्ण वातावरण, मज़बूत बुनियादी ढाँचे, कुशल कार्यबल और निर्बाध बिजली आपूर्ति को उद्योगों के विकास के लिए आदर्श परिस्थितियों के रूप में रेखांकित किया। मान ने आश्वासन दिया कि सरकार निवेश प्रक्रिया को सरल बनाने और राष्ट्रीय और वैश्विक दोनों निवेशकों को आकर्षित करने वाला एक व्यापार-अनुकूल वातावरण बनाने के लिए प्रतिबद्ध है।

अग्रवाल प्रगति ट्रस्ट द्वारा दीपावली पूजन का हुआ आयोजन

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

सूरत, अग्रवाल प्रगति ट्रस्ट द्वारा शनिवार को डुमस स्थित अग्र एक्सोटिका में दीपावली पूजन का आयोजन किया गया। इस मौके पर कार्यालय को दीपक से सजाया गया एवं ट्रस्ट के सदस्यों द्वारा महालक्ष्मीजी का पूजन किया गया। आयोजन में ट्रस्ट के अध्यक्ष नटवरलाल टाटनवाला, सचिव बृजमोहन अग्रवाल, कोषाध्यक्ष सुरेंद्र अग्रवाल, सहसचिव श्याम सुंदर सिहोटीया, सहकोषाध्यक्ष सीए नितेश अग्रवाल, नरेंद्र जिंदल, जीवन राम सिंघल सहित ट्रस्ट के अनेकों सदस्य एवं कर्मचारी उपस्थित रहें। सभी ने एक दूसरे को दीपावली की बधाई दी।